जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 13 प्रभात अजमेर, रविवार 11 अगस्त, 2024 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

कांग्रेस के सांसदों की संसद में सक्रियता अब मापी जायेगी

राहुल गांधी द्वारा तैयार सिस्टम हर पार्टी के सांसद पर निगरानी रखेगा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अगस्त। कांग्रेस सांसद जाग जाएं। राहुल गांधी आ गए हैं। राहुल गांधी के निर्देशों पर, एक मूल्यांकन प्रणाली विकसित की जा रही है, जो संसद के दोनों सदनों-लोकसभा एवं राज्यसभा में सांसदों के कामकाज का आकलन करेगी।

एक कमेटी बनाई जाएगी, जो सभी सांसदों के कार्य-निष्पादन एवं प्रदर्शन पर नजर रखेगी।

सूत्रों का कहना है कि कमेटी देखेगी कि किस सांसद ने कितने प्रश्न पूछे, जन-हित के क्या-क्या मुद्दे उठाये गये, जब पार्टी ने उसे बोलने का अवसर दिया, तो उस सांसद की कैसी तैयारी थी, वह कितने प्रभावी तरीके से उसने सत्तारूढ़ पार्टी का मुकाबला किया तथा सांसद ने हस्तक्षेप करने में कितनी फुर्ती, सक्रियता एवं समझदारी दिखाई।

हाल में ही हुई एक मीटिंग में, राहुल गांधी ने सांसदों से कहा था कि उन्हें बोलने का अवसर दिया जायेगा तथा अकेले वे (राहुल) ही नहीं बोलेंगे। यह बजट सत्र में उस समय दिखाई भी दिया, जब कांग्रेस सांसदों को बोलने का अवसर दिया गया। ऐसी अपेक्षा है कि सांसदों के प्रदर्शन के आधार पर उनकी रैंकिंग भी तय की जायेगी।

सूत्रों का कहना है कि जहाँ यह तन्त्र अस्तित्व में आ रहा है, वहीं इस तन्त्र के आधार पर ही यह तय किया जायेगा कि अगले चुनाव में टिकट के लिये उनके नाम पर विचार किया जाये अथवा नहीं। दरअसल, राहुल गांधी बौद्धिक एवं जोशीले सांसदों की टीम बना रहे हैं, जो सत्तारूढ़ भाजपा से टक्कर ले सके तथा उसे उसी की चाल पर मात दे सके।

बहुत से युवा सांसद नोटिस देने में, शून्यकाल में मुद्दे उठाने में तथा विभिन्न मुद्दों पर बोलने में तत्परता दिखा रहे हैं। पुराने एवं उम्रदराज सांसद, जो प्राय: पीछे बैठते हैं, इस नई राहुल-संस्कृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पा रहे तथा वे कुछ असहज महसूस कर रहे हैं क्योंकि वे ज्यादा सक्रिय नहीं हैं तथा उन्हें राहुल गांधी की कार्यशैली के साथ तालमेल बिठाने में मुश्किल आ रही है।

एक कांग्रेस नेता ने कहा कि पार्टी के युवा सांसद सक्रिय हैं लेकिन वरिष्ठ सांसदों को भी अपने-अपने पैरों पर खड़े होने की जरूरत सचमुच महसूस होगी।

- किस सांसद ने कितने सवाल पूछे, कितने जनहित के मुद्दे उठाये, जब उन्हें सदन में बोलने का मौका दिया गया तो उनकी बोलने की तैयारी कैसी थी, कितने प्रभावी ढंग से सरकार का सामना किया और सदन में सलीके से हस्तक्षेप (इन्टरवैन्शन) किया।
- हाल ही में अपनी पार्टी के सांसदों को संबोधित करते हुए, राहुल गांधी ने कहा था कि हर सांसद को सदन में बोलने का मौका मिलेगा और राहुल गांधी ही बोलें ऐसा नहीं होगा। इसी नीति के तहत, बजट सत्र में कांग्रेस के कई सांसदों को बजट पर बोलने का मौका दिया गया था।
- युवा सांसद, राहुल की इस वर्किंग स्टाइल से काफी खुश हैं, पर, पुराने सांसद अभी काफी अटपटा महसूस कर रहे हैं।

पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह का निधन

नई दिल्ली, 10 अगस्त। पूर्व विदेश मंत्री एवं कांग्रेस के दिग्गज नेता नटवर सिंह का लंबी बीमारी के बाद शनिवार रात को निधन हो गया है। नटवर सिंह ने 95 वर्ष की उम्र में अंतिम सांस ली। वो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सन् 2004 से 2005 में यू.पी.ए. सरकार में मंत्री रहे नटवर सिंह लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। उन्हें गत 31 जुलाई को इलाज के लिए मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

गत वर्ष जारी हिंडनबर्ग रिपोर्ट से अडानी ग्रुप को शेयर मार्केट में 150 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था

इस वर्ष फिर नई हिंडनबर्ग रिपोर्ट जारी होने को तैयार है तथा ट्विटर पर (एक्स पर) हिंडनबर्ग ने मैसेज दिया है, ''भारत के बारे में बहुत भारी हंगामा होगा'', रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अगस्त। अडानी के बाद कौनसा इंडियन कॉरपोरेट ग्रुप हिंडनबर्ग के निशाने पर होगा।

अमेरिका के एक शॉर्ट सैलर ग्रुप द्वारा एक्स पर लिखे पहेली नुमा मैसेज ''भारत में जल्दी ही कुछ बड़ा होगा।'' के बाद से औद्योगिक क्षेत्र के राजनैतिक हल्कों में यह सवाल चल रहा है।

सभी तरह की अटकलें चल रही हैं, पर इस संभावना से भी इंकार नहीं है कि नई हिंडनबर्ग रिपोर्ट अडानी ग्रुप के बारे में हो सकती है। गत वर्ष हिंडनबर्ग रिपोर्ट आने के बाद अडानी ग्रुप और भारतीय बाजार को भारी नुकसान हुआ था। अडानी समूह की वैल्यु 150 अरब यू.एस. डॉलर गिर गई थी।

अपनी रिपोर्ट में हिंडनबर्ग ने आरोप लगाया था कि अडानी समूह की सेबी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- इस बार भारत का कौन सा बड़ा उद्योगपति हिंडनबर्ग का टारगैट होगा?
- एक अन्य संभावना यह भी है कि, हो सकता है नई हिंडनबर्ग रिपोर्ट में उद्योगपति गौतम अडानी की कंपनियों के काम-काज के बारे में ही नई जानकारी उजागर हो, अडानी ग्रुप को एक बार फिर भारी झटका देने के लिये।
- पिछली रिपोर्ट में हिंडनबर्ग ने कहा था कि सेबी से मिलीभगत करके अडानी ग्रुप ने अपने शेयर के दामों में भारी हेराफेरी की थी तथा इस गलत ढंग से कमाये पैसे को ''टैक्स हेवन्स'' का उपयोग करके वापस भारत लाये थे।

पाक से ड्रग्स लेकर आया ड्रोन खेत में गिरा

बी.एस.एफ. ने पकड़ी 15 करोड़ की हेरोइन

श्रीगंगानगर, 10 अगस्त (कासं)। पाकिस्तान से एक बार फिर ड्रोन से भारत में हेरोइन तस्करी की कोशिश की गई है पर इस बार उसकी योजना कामयाब नहीं हुई। बी.एस.एफ. ने शनिवार सुबह अनूपगढ़ से लगती भारत-पाक सीमा पर मौजूद एक खेत से तीन किलो हेरोइन और एक ड्रोन बरामद किया है।

हेरोइन की कीमत करीब 15 करोड़ रूपए बताई जा रही है। फिलहाल, बी.एस.एफ. के जवान स्थानीय पुलिस के साथ पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन में जुटे हुए है। अधिकारियों ने बताया अनूपगढ़ के गांव 30 ए.पी.डी. के पास कालूराम नायक के खेत में आज सुबह करीब चार बजे ड्रोन पड़ा होने की सूचना मिली, जिस पर बी.एस.एफ. के जवान मौके पर पहुंचे और ड्रोन को जब्त किया। ड्रोन में पीले रंग के पैकेट मिले। पैकेटों में तीन किलो हेरोइन थी जांच में पता चला कि ड्रोन पाकिस्तान से भेजा गया था जो तकनीकी खराबी के कारण सीमा के पास खेत में गिर गया, इससे तस्करी की योजना फेल हो गई।

बता दें कि पिछले महीने 23 और 24 जुलाई को भी पाकिस्तान से भारत में हेरोइन भेजी गई थी। लेकिन बी.एस.एफ. के जवानों ने हेरोइन जब्त कर पाकिस्तानी तस्करों के मंसूबों पर पानी फेर दिया था, उसकी कीमत 30 करोड़ रुपए थी। लेकिन करोड़ों रूपए के मादक पदार्थ जब्त होने के बाद भी पाकिस्तानी तस्कर बाज नहीं आ रहे हैं। बता दें कि अनूपगढ़ क्षेत्र में इस साल अब तक पाकिस्तान से आई कुल 41.478 किलोग्राम हेरोइन जब्त की जा चुकी है, जिसकी कीमत 200 करोड़ रूपए से ज्यादा बताई जा रही है।

- अनूपगढ़ के गांव ए.पी.डी. के पास कालूराम नायक के खेत में आज सुबह करीब चार बजे ड्रोन पड़ा होने की सूचना मिली, उसमें पीले रंग के पैकेट में तीन किलो हेरोइन पाई गई।
- सूत्रों ने बताया पाकिस्तान से आया यह ड्रोन तकनीकी खराबी के कारण सीमा के पास खेत में गिर गया।

टी.वी. सोमनाथन कैबिनेट सचिव बने

नई दिल्ली, 10 अगस्त। सरकार ने इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज़ (आई.ए.एस.) के वरिष्ठ अधिकारी टी.वी. सोमनाथन को देश के अगले कैबिनेट सचिव के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया है। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा शनिवार को जारी सर्कुलर के अनुसार, तमिलनाडु कैडर के 1987 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी टी.वी. सोमनाथन इस महीने के अंत में अपना नया कार्यभार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तमिलनाडू कैडर के 1987 के सोमनाथन वर्तमान सचिव राजीव गौबा का स्थान लेंगे। उनका कार्यकाल 30 अगस्त से शुरू होगा और वह अगले दो सालों तक इस पद पर बने रहेंगे।

आर्थिक संकट में घिरे तेलंगाना के युवा पत्रकार ने आत्महत्या की

यह बेहद दुखद घटना देश में बढ़ती बेरोजगारी का एक उदाहरण है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अगस्त। तेलंगाना के एक युवा, ईमानदार एवं मेहनती पत्रकार की कथित आत्महत्या देश में फैली दुखद बेरोजगारी की स्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कुल मिलाकर, बेरोजगारी के कारण युवाओं तथा अधेड़ उम्र वाले लोगों तक में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

तेलंगाना के वारंगल नगर में एक तेलुगू वैब चैनल में कार्यरत एक 36 वर्षीय पत्रकार की आत्महत्या की खबर से राज्य की पूरी मीडिया बिरादरी को जबरदस्त धक्का लगा है। 36 वर्षीय पत्रकार जी.योगी रेड्डी (36 वर्ष) ने पहले तो अपनी 9 वर्ष की बेटी आद्या को फन्दे पर लटकाया तथा उसके बाद स्वयं फन्दे पर लटक गया। रेड्डी के रिश्तेदार तथा उसके व्यक्तिगत एवं प्रोफेशनल मित्रों को यह विश्वास कर पाना मुश्किल हो रहा है कि उसने आर्थिक परेशानियों के कारण इतना भयानक कदम उठा लिया। वह अपने पीछे अपनी पत्नी को छोड़ गया है।

शुक्रवार की शाम, योगी रेड्डी तथा उसकी बेटी आद्या वारंगल के उस एक कमरे के ऑफिस में फन्दे से लटके पाये गये, जिसमें वह काम किया करता था। इस ब्रेकिंग न्यूज से तेलंगाना, आंध्रप्रदेश तथा अन्य राज्यों के तेलुगूभाषी पत्रकारों में शोक की लहर दौड़ गई। एक पत्रकार, जिसने अपनी पुत्री को अपनी अन्तिम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- जिस दिन 36 वर्षीय योगी रेड्डी की आत्महत्या की खबर आई, उसी दिन देश के एक बड़े औद्योगिक घराने ने 42,000 कर्मचारियों को निकाल दिया था।
- चढ़ते शेयर बाजार और बढ़ती जी.डी.पी. के बावजूद भी बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होना दर्शाता है कि बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की अंतर्निहित कमियों ने देश की जनता को प्रभावित करना शुरु कर दिया है।
- अर्टिफिशल इन्टैलिजैंस और उच्च स्तरीय ऑटोमैटिक मशीनों के कारण इंसान पर निर्भरता कम हो रही है, यही वजह है कि देश भर में निजी क्षेत्र में कर्मचारियों की छंटनी हो रही है।
- सरकारी क्षेत्र भी पीछे नहीं हैं, वहां भी सरकारी कामों को आउट सोर्स किया जा रहा है और नए कर्मचारियों की भर्ती निरंतर कम हो रही है।

1389 अग्निवीर नौसेना में शामिल हुये

नई दिल्ली, 10 अगस्त (वार्ता)। अग्निवीरों के चौथे बैच की पासिंग आउट परेड के बाद 214 महिला अग्निवीरों सहित 1389 अग्निवीर के आईएनएस चिल्का में शुक्रवार को नौसेना में शामिल हो गये।

रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को यहां बताया कि अग्निवीरों को 16 सप्ताह का कठोर नौसैनिक प्रशिक्षण दिया गया है। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने इस मौके पर आयोजित दीक्षांत परेड की समीक्षा की। इस मौके पर वाइस एडमिरल वी श्रीनिवास, फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, दक्षिणी नौसेना कमान और पूर्वी नौसेना कमान के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, वाइस एडमिरल राजेश पेंढारकर भी उपस्थित थे। अग्निवीरों के परिवारजन भी इस गौरवशाली कार्यक्रम में शामिल हुए।

प्रशिक्षण के बाद दीक्षांत परेड न केवल अग्निवीरों के प्रारंभिक प्रशिक्षण के सफल समापन का प्रतीक है, बल्कि भारतीय नौसेना में अग्निवीरों के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत का भी प्रतीक है। नौसेना प्रमुख ने परेड को संबोधित करते हुए प्रशिक्षुओं को बधाई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- नौसेना में शामिल होने के लिए इन अग्निवीरों को नौसेना की 16 महीने की कठोर ट्रेनिंग दी गई है, इनमें 214 महिला अग्निवीर भी शामिल हैं।

1940 के दशक से 1960 तक बड़े-बड़े उद्योगों के मालिकों की सूची में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ

पर, 1960 के दशक में देश में मंदी का दौर (रिसैशन) आया तो भारी उथल-पुथल हुई इस सूची में और कई बड़े-बड़े मिल मालिक धराशायी हुए

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अगस्त। ''मध्यम आय का शिकंजा'' राष्ट्रों एवं देशों के विकास अनुभव में कोई असामान्य खासियत नहीं है। कुछ देश जहां आशाजनक शुरुआत करते हैं, लेकिन एक निश्चित समय के बाद गतिहीन हो जाते हैं। वे मध्यम आय वाले वंचित देशों से ऊंची प्रति व्यक्ति आय वाले विकसित देशों में तब्दील होने में विफल रहते हैं।

कई विकास अर्थशास्त्रियों ने मध्यम आय के जाल को पहचाना और उसका परीक्षण किया। कई सुझाव दिए जा चुके हैं, लेकिन इन पूर्व सूचनाओं और सलाहों के बावजूद यह जाल बार-बार बना रहता है।

इस वर्ष की वर्ल्ड डवलपमैंट रिपोर्ट (डब्ल्यू.डी.आर.) में आर्थिक वृद्धि के इस सुविज्ञ लक्षण का परीक्षण करने और इस समस्या के समाधान के तरीके बताने की कोशिश की गई है। डब्ल्यू.डी.आर. 2024 इस समस्या को समाप्त करने के तरीकों की सलाह देता है और मध्यम आय वर्ग के देशों को आगे बढ़ने में मदद देता है।

वर्ल्ड डवलपमैंट रिपोर्ट 2024 में नीतिगत प्राथमिकताओं को लेकर एक स्पष्ट मार्ग सुझाया गया है। इसे 3 आई रणनीति कहा जा सकता है। तीन आई का अर्थ है इन्वैस्टमैंट, इन्फ्यूज़न और इनोवेशन। रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के बाद यही प्रश्न करती है। प्रश्न यह है कि ''क्या मध्यम आय वर्ग के देशों की आर्थिक वृद्धि आय के अन्य स्तरों वाले देशों से भिन्न होती है?

इसका उत्तर है ''हाँ'' रिपोर्ट सुझाती है कि ''मध्यम आय वर्ग के सफल देशों को आर्थिक संरचना विकसित करने के लिए ऐसे दो सफल परिवर्तन करने होंगे, जिनमें अन्तत: इनकम के हाई लैवल बरकरार रहें।

ये परिवर्तन कौनसे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, पहला परिवर्तन है - निवेशोन्मुखी ग्रोथ की एकल रणनीति से दोहरी रणनीति की ओर जाना जिसमें निवेश के साथ विदेश की नई तकनीकियों का समावेश करना और उसका घरेलू परिदृश्य में प्रसार करना शामिल है। अर्थात पहले ''आई'' से दूसरे ''आई'' की तरफ जाना।

अगले चरण में, ''मध्यम आय वर्ग वाले देशों को तीसरे ''आई'' (इनोवेशन) की ओर जाना होगा, जिसमें नवाचार पर अधिक ध्यान देना होता है। यह ऐसी प्रक्रिया है जो उच्च आय वर्ग वाले देशों पर अधिक लागू होती है।'' यद्यपि, इस संक्रमणकाल में कुछ दर्दपूर्ण प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। खासतौर पर, नवाचार अर्थव्यवस्थाओं में कठिनाईयां पैदा करता है तथा इसमें पुर्नसमायोजन शामिल होता है, जिसे निहित स्वार्थी वर्गों और पहले से जमे बैठे लोगों से प्राय: कड़ी चुनौती मिलती है।

डब्ल्यू.डी.आर. 2024 में अर्थव्यवस्थाओं की कमजोर गति को दूर करने का एक नया तरीका सुझाया गया है, जो घोर गरीबी और कमजोर विकास से मुक्ति दिलाने में सफल रहा है। रिपोर्ट में मध्यम आय वर्ग वाले देशों को सुझाव दिया गया है कि वे आर्थिक रूकावट दूर करने के लिए आर्थिक संकट का सदुपयोग करें। एक अन्य सुविज्ञ लक्षण क्रिएटिव डैस्ट्रक्शन से पार पाने के लिए आर्थिक संकट उपयोगी है। जाने-माने अर्थशास्त्री जोसफ शॉपीटर ने ''क्रिएटिव डैस्ट्रक्शन'' का विचार सबसे पहले प्रस्तुत किया था।

रिपोर्ट में मध्यम आय वर्ग की अर्थव्यवस्थाओं की दशा को संक्षेप में इस प्रकार बताया गया है। चूंकि मध्यम आय वर्ग वाले देशों को इन्वैस्टमैन्ट, इन्फ्यूज़न और इनोवेशन को पुन: संयोजित करने की जरूरत है, इसलिए आर्थिक संकट एक जरूरी बुराई बन सकता है क्योंकि इन्वैस्टमैन्ट, इन्फ्यूज़न और इनोवेशन यथास्थिति कमजोर कर आर्थिक गति प्रदान करते हैं। कोई अर्थव्यवस्था जब नए उद्यमियों के बनिस्पत मौजूदा आर्थिक खिलाड़ियों को तरजीह देती है तब संरचनात्मक कठिनाईयां कारकों को समाप्त कर दिया जाए जो नए उद्यमियों और उनकी कुशल उत्पादन प्रक्रिया को अवरुद्ध करते हैं।

जो बात बाद में समझ में आई वह यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की कुछ ऐसी ही प्रक्रिया रही है, खास तौर पर आर्थिक सुधारों के बाद के वर्षों में जो बात तुरन्त दिमाग में आती है, वह है भारतीय उद्यमी वर्ग की बदलती प्रोफाइल। भारत क्यों आर्थिक विकास कर रहा है और वैश्विक विकास की तकनीकियों को क्यों ग्रहण कर रहा है तथा अपने उद्यमी वर्ग को पोषित करने में क्यों समर्थ हैं?

यदि हम स्वतंत्रता के समय के अग्रणी औद्योगिक घरानों की सूची का परीक्षण कर उसकी तुलना 1960 के दशक से करें तो पता चलेगा कि इस दौरान थोड़े ही बदलाव हुए। चालीस के दशक के अधिकांश अग्रणी औद्योगिक घराने साठ के दशक की शुरुआत के औद्योगिक घरानों के समान थे।

1960 के दशक के अन्त में जब भारत ने आर्थिक मंदी का सामना किया था, तब उस समय की बड़ी औद्योगिक फर्म्स घाटा खा गई थीं। उनका संबंध नए उद्यमियों वाली लघु एवं छोटी कम्पनियों से था। लेकिन वास्तविक बदलाव आया 1980 के दशक के अन्त से वर्ष 1991-92 के दौरान। इस बदलाव के मुख्यत: दो कारण थे। प्रधानमंत्री के रूप में राजीव गांधी के संक्षिप्त कार्यकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की गई। सस्ते कम्प्यूटर्स सहित आयात की जाने वाली कई महत्वपूर्ण वस्तुओं के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राजीव गांधी के, प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में काफी लिब्रलाइज़ेशन हुआ, निर्यात-आयात नीति में। कस्टम ड्यूटी बहुत कम की गई, विशेषकर कम्प्यूटर आदि इलैक्ट्रॉनिक सामान पर।
- इन परिवर्तनों से पुराने उद्योगपति व मिल मालिक लगभग ठंडे पड़ गये, शायद दो बड़े पुराने मिल मालिक बचे, टाटा समूह व बिड़ला ब्रदर्स।
- नये उद्योगपति उभरे विशेषकर आई.टी. इण्डस्ट्री में।
- वर्ल्ड डवलपमैंट रिपोर्ट 2024 ने, इस प्रक्रिया को नैसर्गिक प्रक्रिया बताया और जो देश इस नई टैक्नॉलजी को कुछ स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार स्वीकार करते गये, वे जीवित रह गये और उन्नति करते गये। इस सूची में भारत काफी आगे है।
- अन्यथा, जो देश भारी भुखमरी व निर्धनता को पार कर मध्यम इकॉनमी के दल-दल में फंस गये, वे उन्नत देशों की लाइन में नहीं पहुंच पाये और आगे नहीं बढ़ पाये।

मोदी ने वायनाड का हवाई सर्वे किया

वायनाड/ नई दिल्ली, 10 अगस्त (वार्ता) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केरल के वायनाड में भूस्खलन की तबाही से प्रभावित क्षेत्रों का शनिवार को हवाई सर्वेक्षण किया। मोदी सुबह नयी दिल्ली से केरल पहुंचे। इलाके के हवाई सर्वेक्षण के समय श्री मोदी के साथ केरल के मुख्यमंत्री पी विजयन भी थे। मोदी हवाई सर्वेक्षण के बाद आपदा प्रभावित इलाकों में खुद जाकर स्थिति का जायजा लेंगे।

सूत्रों के अनुसार, श्री मोदी वहां स्थानीय लोगों से मिलकर उनकी समस्याओं पर बातचीत भी कर सकते हैं। नयी दिल्ली में प्रधानमंत्री कार्यालय ने बताया कि हवाई सर्वेक्षण के दौरान श्री मोदी ने उस इलाके का भी निरीक्षण किया, जहां से भूस्खलन शुरू हुआ था। उन्होंने पुंचिरिमट्टम, मुंडिकि और चूड़ालमाला इलाके का भी हवाई निरीक्षण किया।

गौरतलब है कि पारिस्थितिकी की दृष्टि से संवेदनशील पश्चिमी घाट क्षेत्र में 30 जुलाई को भूस्खलन की घटना में करीब दो सौ लोगों की मौत हो गयी थी और सैंकड़ों की संख्या में लोग घायल हो गये। भारी वर्षा के कारण भूस्खलन इरुवझिंजी पुझा नदी में बाढ़ के चलते शुरू हुआ था।

- मोदी सुबह नई दिल्ली से केरल पहुंचे। भूस्खलन प्रभावित इलाकों के हवाई सर्वेक्षण के समय प्र.मंत्री मोदी के साथ केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन भी थे।

विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

पुराने वनों का संरक्षण सबसे बड़ा प्राकृतिक जलवायु समाधान है

ऐसे वन जो विकास के उन्नत चरण में हैं या जहाँ विविध प्रजातियों के पुराने, मोटे और बड़े वृक्षों की बहुतायत है उन्हें दुनिया प्राइमरी फॉरेस्ट्स या ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के नाम से जानती है। ऐसे वनों के पारिस्थितिक, सामाजिक और आर्थिक महत्त्व पर विश्व भर में बड़ी शोध हुई है। ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स की अभी भी कोई एक मानक परिभाषा नहीं है। फिर भी इन वनों में प्रमुख प्रजातियों की लंबी उम्र, प्राकृतिक गड़बड़ी का कम से कम होना, मानव हस्तक्षेप का कम होना, छाया-सहिष्णुता या छाया में भी उग सकने वाली प्रजातियों की बहुलता, विशिष्ट संरचनाओं, जैसे बड़े-बड़े पेड़, खोखलों में घोंसले बनाने वाले पक्षियों की उपस्थिति और बहुतायत, भारी-भरकम पुराने वृक्षों के यत्र तत्र गिरे-पड़े संचित सूखे तने, मिट्टी के ऊपर पत्तियों और सूखी टहनियों की मोटी परत आदि लक्षणों के संदर्भ में पहचाना और परिभाषित किया जाता है। इन क्षेत्रों में मिलने वाले बड़े वृक्षों में मधुमक्खियों के छत्ते भी प्राय: देखे जाते हैं। इसके अलावा बड़े वृक्षों के मुख्य तने में छाल में निवास करने वाले विविध प्रजातियों के कीड़े-मकोड़े पाये जाते हैं। सैप्रोजायलिक कवक, लाइकेन तथा कीड़ों की प्रजातियां बड़ी संख्या में सूखी गिरी पड़ी लकड़ी पर निर्भर होती हैं।

ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट के नीचे की मिट्टी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें पोषक तत्वों की प्राय: कोई कमी नहीं पाई जाती। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं क्योंकि यदि आग, चराई और कटान नहीं हो रहा है तो बायोजियोकेमिकल चक्र सुचारु रुप से चलते हैं। ऐसा संभव है ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स के आसपास कोई नदी नाला या नम भूमि इत्यादि हो। प्राय: यह भी देखा गया है कि ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स में पौधों और प्राणियों की जो प्रजातियां मिलती हैं वे समीपवर्ती वन क्षेत्रों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में प्राय: बड़े बीजों वाली प्राणी-विकीर्णित वृक्ष प्रजातियों का बाहुल्य होता है।

उष्णकटिबंधीय वनों में जहां प्रजातियों की विविधता और प्राकृतिक वातावरण पर मानव दबाव दोनों ही अधिक हैं, भूमि-उपयोग परिवर्तन जैव-विविधता को गंभीर खतरे में डालते हैं। कृषि, लकड़ी के लिये कटान, उद्योगों की स्थापना और अन्य उपयोगों के लिये उष्णकटिबंधीय वनों के तेजी से बदलाव उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को नष्ट कर देते हैं। एक शोध जो 138 अध्ययनों की मेटा-एनालिसिस का उपयोग कर की गयी, के परिणाम उष्णकटिबंधीय जंगलों में मानवीय दखल के कारण विक्षोभ और भूमि रूपांतरण से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव का वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करते हैं (देखें, एल. गिब्सन इत्यादि, नेचर, 478(7369):378-381, 2011)। इस अध्ययन में प्राथमिक वनों जिनमें कोई मानवीय दखल नहीं था और बिगड़े वनों जिनमें मानवीय दखल था, में जैव-विविधता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। यह पाया गया अवक्रमित या बिगड़े वनों में जैव-विविधता की स्थिति तमाम कारणों से बहुत ख़राब थी। यह वैश्विक शोध निर्विवाद रूप से सिद्ध करती है की वन-विनाश के विविध कारणों का उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता पर अत्यंत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त एवं अन्य शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जब उष्णकटिबंधीय जैव-विविधता को बनाये रखने की बात आती है, तो प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है (देखें, जे. बार्लो इत्यादि, प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द नेशनल अकैडमी ऑफ़ साइंसेज यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका, 104(47):18555-18560, 2007)।

संपूर्ण विश्व के कुल 23 से 26 प्रतिशत वन ही अब प्राइमरी या ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स के रूप में बचे हैं। राजस्थान में कई जिलों में ओल्ड ग्रोथ फॉरेस्ट्स अभी भी बचे हुये हैं, हालांकि ऐसे वन उष्णकटिबंधीय शुष्क क्षेत्रों में विशेष रुप से संकटापन्न हैं। संकट के मुख्य कारण आसपास रहने वाली मानव आबादी के पालतू मवेशियों द्वारा चराई, जलाऊ लकड़ी के लिये कटाई और घर बनाने के लिये इमारती लकड़ी की कटाई इत्यादि हैं। ऊपर से प्राकृतिक और मानव-जनित कारणों से आग भी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को बड़ी हानि पहुँचती है। कई क्षेत्रों में बड़े वृक्षों की शाखाओं को काट कर साल दर साल चारे के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिये पुराने वनों से अर्जुन (कहुआ, कोहड़ा) के बड़े वृक्षों की शाखाओं को काटकर भैंसों के चारे के रूप में उपयोग होता है। हर साल शाखा कटान के कारण इन वृक्षों में फूल, फल और बीज लगने की प्रक्रिया भी बाधित होती है। बीजों का उत्पादन और विकीर्णन नहीं होने से प्राकृतिक पुनरुत्पादन बाधित होता है। जिन क्षेत्रों में बीजों का उत्पादन होता भी है वहां बीज विकीर्णन करने वाली वन्य-प्राणी प्रजातियां ना होने से अब केवल बड़े वृक्ष ही बचे हैं क्योंकि प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं के बराबर है। जो भी थोड़ा बहुत पौधे उगते हैं वे भी बड़े होने के पहले ही चर लिये जाते हैं। आग का भी प्रकोप होता है, हालांकि उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों में पिछले 30 वर्षों वनों में प्राय: सतही आग ही लगी है। इससे बड़े वृक्षों को भले ही हानि ना होती हो, किंतु बीजों, बिजौलों व प्राकृतिक पुनरुत्पादन को बड़ी हानि पहुंचती है। क्लाइमेट चेंज की दशा में आर्द्र तराई क्षेत्रों के वनों में हर जगह पुराने जंगलों में जमीन के ऊपर के जैवभार (बायोमास) में कमी आने की भारी आशंका है। उष्ण कटिबंध में वर्ष 2081-2100 के मध्य तक तापमान बढ़ने के कारण इस कमी का अनुमान 41 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 29 प्रतिशत है (देखें, एम. लर्जावारा इत्यादि, कार्बन बैलेंस एंड मैनेजमेंट, 16(1):31, 2021)।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्व रखता है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं।

पुराने वनों का संरक्षण और प्रबंध प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में विशेष महत्व रखता है। कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन और भंडारण के साथ ही इन वनों के अनगिनत लाभ हैं। वनानुभव व पारिस्थितिक पर्यटन, मानव के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य हेतु संसाधन, जैव-विविधता व आनुवंशिक संसाधन का संरक्षण, भौम-जलस्तर में बढ़त व जल-धाराओं, झरनों व नदियों के रूप में पानी की उपलब्धता, देववनों के रूप में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के वाहक होते हैं। ऐसे वनों के संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ केवल इन वनों को केन्द्रित कर बनाये जाने के बजाय सम्पूर्ण भू-परिदृश्य के स्तर पर बनाना आवश्यक होता है। पहली बात इनमें बड़े वृक्षों की बहुतायत के कारण बड़ी मात्रा में कार्बन जमा होता है और सैकड़ों साल तक होता रहता है, इसीलिये ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को विश्व के कार्बन भण्डार के रूप में जाना जाता है। क्लाइमेट चेंज मिटीगेशन के लिएयह भण्डार अति महत्वपूर्ण है (देखें, एस. लुस्स्येर्ट इत्यादि, नेचर, 455(7210):213-215, 2008)। दूसरी बात यह है कि पुराने पेड़ों में अपेक्षाकृत स्थिर विकास दर होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध उल्लेखनीय प्रतिरोध देती है (देखें, एम. कोलेंगेलो इत्यादि, साइंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 801,149684, 2021)। इसके साथ ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे वन अन्य क्षेत्रों में वनों के पुनर्स्थापन के लिये उन प्रजातियों के बीजों और जैव-विविधता के सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं जो लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं किन्तु उष्णकटिबंधीय वनों के अन्य क्षेत्रों से स्थानीय रुप से विलुप्त हो चुकी हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, कन्जर्वेशन बायोलॉजी, 17(2):633-635, 2003)।

इसी बात को ध्यान में रखते हुये देश के विभिन्न राज्यों में सभी ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स को चिन्हित कर संरक्षण व संवर्धन एवं सतत विकास किया जाना आवश्यक है। इन क्षेत्रों के अंदर पुराने और बड़े वृक्षों का संरक्षण और साथ में संपूर्ण क्षेत्र का संरक्षण दोनों को ही ध्यान रखना आवश्यक है। यहाँ चराई और कटाई से बचाव के साथ-साथ यहां सूखी गिरी पड़ी लकड़ी को भी बाहर निकालने से रोकना आवश्यक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सूखे गिरे पड़े वृक्ष भी तमाम प्रजातियों के संरक्षण के लिये आवश्यक हैं।

यदि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक पुनरुत्पादन नहीं हो रहा है तो वनों के वितान में जहां खुले स्थान मिल रहे हैं वहां पर उसी प्रकार की प्रजातियों का रोपण आवश्यक है जो ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट में पाई जाती हैं। ऐसी प्रजातियां प्राय: बड़े बीजों वाली और चौड़ी पत्ती वाली होती हैं। बड़े बीज होने से इनका विकीर्णन बड़े शरीर वाले प्राणियों द्वारा ही हो सकता है परंतु चूंकि अनेक क्षेत्रों से बड़े शरीर वाले प्राणी विलुप्त हो चुके हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण, सीधी बुवाई और डंडारोपण करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बड़े बीजों वाली प्रजातियों में आम, महुआ, जामुन, अर्जुन, बहेड़ा, सादड़, कणज, घटबोर, लिसोड़ा, बीजासाल, खाखरा, कड़ाया, सीताफल, बेल, नीम, कचनार, तेंदू, बिस्तेंदू, गोदल, ऊंबिया, इमली, सागवान, बेर, खजूर, अचार या चारोली, कुसुम, हिंगोट, अरीठा, आदि शामिल हैं। कुछ ऐसी प्रजातियाँ भी उगाना चाहिये जो फलों के लिये प्रसिद्ध हैं, भले ही वे छोटे बीज वाली हों। आँवला, बरगद, कैथगूलर, पीपल, कैर, लिसोड़ा, जाल, खेजड़ी आदि फल के लिये जानी जाती हैं (देखें, डी.एन. पाण्डेय, अरावली के वन्य वृक्ष: वनवर्धन एवं पौधशाला प्रबंध, पृष्ठ 1-24, 1992)।

चूंकि ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट्स का दायरा धीरे धीरे बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए सबसे उपयोगी यह है कि ऐसे क्षेत्रों को फॉरेस्ट रेस्टोरेशन के लिये चयनित किये जा रहे बड़े क्षेत्रों के अंदर लेकर बड़े दायरे में बीजारोपण व बहुत आवश्यक हो तो वृक्षारोपण करना चाहिये। बाहर के दायरे में जहां प्रजाति विविधता कम है या क्षेत्र खाली हो गये हैं वहां पर अर्ली-सक्सेशनल, मिड- सक्सेशनल, और लेट-सक्सेशनल प्रजातियों के मिश्रण की मृदा व जल संरक्षण के साथ सीधी बुवाई किया जाना उपयोगी रहेगा। साथ ही थोड़ी-बहुत वनस्पति जो उस क्षेत्र में हो उसका संरक्षण करना उपयोगी रहेगा। ऐसा करने से धीरे-धीरे ओल्ड-ग्रोथ फॉरेस्ट का दायरा बढ़ने लगेगा। इस रणनीति का एक लाभ यह भी है कि क्षेत्र में पक्षियों द्वारा विकीर्णित होने वाले बीजों का विकीर्णन भी पूरे वृक्षारोपण क्षेत्र में बढ़ेगा। सुरक्षित क्षेत्र में होने वाला अंकुरण और पनपने वाले पौधों के सुरक्षित बड़े पौधों के रूप में विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

प्राचीन, विशालकाय वृक्षों वाले उष्णकटिबंधीय वन जैव-विविधता की जीती-जागती अनमोल विरासत हैं। इनका संरक्षण वैश्विक प्राथमिकता है। उष्णकटिबंधीय वनों और जैव-विविधता से मानवता को प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ हेतु पुराने प्राथमिक वनों का कोई विकल्प नहीं है। प्राकृतिक जलवायु समाधान के रूप में इन वनों के प्रमाण-आधारित प्रबंध में निवेश अनिवार्य है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस

भागचंद जैन मित्रपुरा

इस जंबूद्वीप, भरत क्षेत्र काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें कश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम ब्राह्मी था। जब सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी, तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की बरसात शुरू कर दी थी। रानी ब्राह्मी ने सोलह स्वप्नपूर्वक वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन इन्द्र के जीव को गर्भ में धारण किया था। नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ। इन्द्रादि देवों ने सुमेरू पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' नामकरण किया। इनकी आयु सौ वर्ष की थी। प्रभु की कांति - देहवर्ण मरकट मणि सदृष्य हरितवर्ण थी एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे। भगवान पार्श्वनाथ ने 30 वर्ष की अल्पायु में ही तप धारण कर लिया था।

सोलह वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ एक दिन अपने इष्ट मित्रों के साथ वन में गए हुए थे, तब मार्ग में पंचाग्नियों में तप करता हुआ एक साधु मिला, वह अग्नि को प्रदीप करने के लिए कुल्हाड़ी से एक मोटी लकड़ी को काटना चाह रहा था। अवधी ज्ञान से जानकर भगवान पार्श्व ने लकड़ी को काटने के लिए मना किया और कहा–इसके भीतर 2 प्राणी बैठे हुए हैं। किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे। पीड़ा से तड़पते हुए सर्प के जोड़े को भगवान पारसनाथ ने शांत होने का उपदेश दिया और उन्हें पंच नमस्कार (णमोकार महा मंत्र) मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वे शांतभाव को प्राप्त हुए तथा महा विभूति के धारक धरणेन्द्र और पद्मावती हो गये। इधर कमठ का जीव महिपाल भी मरकर स्वर्ग का शम्बर नाम का ज्योतिषी देव हुआ।

अनंतर कुमार जब तीस वर्ष के हो गये, तब एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन ने उत्तम घोड़ा आदि की भेंट के साथ अपना दूत भगवान पार्श्वनाथ के पास भेजा। भगवान ने भेंट लेकर उस दूत से अयोध्या की विभूति पूछी। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पश्चात् अयोध्या का हाल कहा। उसी समय ऋषभदेव के सदृश स्वयं को भी तो तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ है, लेकिन सामान्य मनुष्य की तरह अपनी आयु के 30 वर्ष व्यर्थ गवां दिए यह विचार करते हुए पार्श्वनाथ को आत्मज्ञान प्राप्त हो गया और विषय वासना को छोड़कर दीक्षा लेने का निश्चय कर लिया। ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्व वन में पहुँच गये। वहाँ त्रिदिवसीय उपवास का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रात:काल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करके प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। प्रथम पारणा के दिन गुलमसेटपुर में प्रवेश किया। नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगल द्रव्यों से प्रभु का पड़गाहन कर प्रथम पारणा पायस का आहार करवाया। आहार से प्रभावित होकर देवों ने धन्य राजा के घर पंचाश्चर्य प्रकट किए। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान अश्ववन में पंहुचकर देवदार वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव कालसंवर नाम का ज्योतिषी देव आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात् उसका विमान रुक गया, उसे विभंगावधि से पूर्व का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। बदले की भावना से क्रोधवश महागर्जना, महावृष्टि, तूफान आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया। बड़े-बड़े पहाड़ तक लाकर तप में लीन पार्श्वप्रभु के समीप गिराये इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया। अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र और पद्मावती पृथ्वी तल से बाहर निकलकर भगवान को सब ओर से घेरकर धरणेन्द्र ने अपने फणों के ऊपर उठा लिया और पद्मावती वङ्कामय छत्र तान कर खड़ी हो गई। इस तरह स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प-सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रख कर तपस्या में लीन भगवान पर उपसर्ग के समय रक्षा की।

तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्म क्षीण हो गया और बैरी कमठ का सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्श्वनाथ ने चैत्र कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रात:काल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। उसी समय इन्द्रों ने आकर समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। कालसंवर नाम का देव भी काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति-भक्ति की। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कहाँ तो निष्कारण वैर और कहाँ शांति। इसलिए संसार के दु:खों से भयभीत प्राणियों को वैर-विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। पार्श्वप्रभु ने 83 दिन की कठोर तपस्या के पश्चात 84वे दिन केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था।

भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण में स्वयंभू सहित दस गणधर, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना आदि सहित छत्तीस हजार गणिनि आर्यिकाएँ, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए भगवान ने उनहत्तर वर्ष सात माह तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार करना बंद हो गया। प्रभु पार्श्वनाथ सम्मेदाचल के शिखर पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रात:काल के समय विशाखा नक्षत्र में अष्ट कर्मों का नाश कर सिद्धपद को प्राप्त हो गये। देवों ने भक्ति पूर्वक उनके निर्माण कल्याण का उत्सव किया। इस दिन को मोक्ष सप्तमी के रूप में भी मनाया जाता है एवम अपना भव कल्याणकारी बनाने की दृष्टि से कन्याएं व्रत/उपवास रखती है। यद्दिप उपवास/व्रत कोई भी रख सकता है। श्री पार्श्वनाथ ने ही जैन धर्म के पंच महाव्रत की शिक्षा दी जिनमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, एवम अपरिग्रह जिसमे ब्रह्मचर्य भी सम्मिलित है। अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का समावेश एक ही व्रत में होता था।

श्री पार्श्वनाथ ने ही चतुर्विध संघ की स्थापना की थी जिनमे मुनि, आर्यिका, श्रावक एवं श्रविका होते थे। आज भी जैन समाज की यही परंपरा जारी है। भगवान पार्श्वनाथ ने जैन धर्म को जन जन के बीच लोकप्रिय बनाकर एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य कर गए, जिसकी आभा आज भी जीवंत है। भूगर्भ प्रकट होने वाली प्रतिमाएं एवं जिन मंदिरों में विराजित सबसे ज्यादा प्रतिमाएं तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की ही है।

संकलन--भागचंद जैन
मित्रपुरा
अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम जयपुर।

राज्यपाल किसनराव बागड़े ने मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन किया

राज्यपाल बागड़े ने बीएसएफ जवानों की हौसला अफजाई कर पराक्रम की सराहना की

बाड़मेर, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने शनिवार मुनाबाव सीमा चौकी से भारत-पाक सीमा का अवलोकन कर बीएसएफ के जवानों से संवाद किया। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने राष्ट्र सेवा में जवानों की तत्परता के लिए उनकी हौसला अफजाई करते हुए पराक्रम की सराहना की। मुनाबाव में प्रहरी सम्मेलन के दौरान राज्यपाल बागड़े ने कहा कि सैनिक सरहद की हिफाजत के लिए सतर्क है। वे विपरित परिस्थितियों में देश सेवा के लिए तत्पर है।

उन्होंने देश के प्रति प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा के लिए जवानों का नमन करते हुए कहा कि वे अदम्य साहस के लिए सैनिकों का अभिनंदन करते हैं। उन्होंने चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊ और तेरा वैभव अमर रहे मां, मैं रहूं या ना रहूं का जिक्र करते हुए कहा कि जवानों के समर्पण की बदौलत भारत सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि जाबाज सैनिक मां भारती के वह सपूत है, जिनके कंधे पर राष्ट्र की सुरक्षा का भार है। इस दौरान उन्होंने सीमा सुरक्षा बल एवं अन्य सुरक्षा एजेंसियों की सुरक्षा समन्वय संबंधित बैठक के दौरान सीमा प्रबंधन सरहद पार से तस्करी एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने सरहद पर रहने वाले ग्रामीण परिवारों की सराहना करते हुए राष्ट्र की सुरक्षा में उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। राज्यपाल बागड़े ने सीमा सुरक्षा बल के जवानों को मिठाई एवं फल भेंट किए। सीमा सुरक्षा बल की ओर से राज्यपाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। उन्होंने मुनाबाव में कांफ्रेस हॉल के पास एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया। इससे पहले राज्यपाल के मुनाबाव पहुंचने पर बीएसएफ के जवानों गार्ड ऑफ आनर दिया।

इस दौरान बीएसएफ गुजरात फ्रंटियर के महानिरीक्षक अभिषेक पाठक, उप महानिरीक्षक राजकुमार बसट्ठा, जिला कलेक्टर निशान्त जैन, पुलिस अधीक्षक नरेन्द्रसिंह मीना, मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ पलनीचामी, शिव विधायक रविन्द्रसिंह, समाजसेवी स्वरूपसिंह खारा सहित विभिन्न सीमा सुरक्षा बल एवं विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी, जवान आदि उपस्थित रहे।

बाड़मेर में भारत-पाक सीमा पर राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने सेना के जवानों से मुलाकात की।

राज्यपाल ने जन संवाद के साथ ग्रामीणों की सुनी परिवेदनाएं : बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में पहुंचे राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने तामलोर ग्राम पंचायत में ग्रामीणों से जन संवाद करते हुए जानकारी ली कि उनको प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के साथ कौनसी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि उनके खातों से डीबीटी के जरिए राशि जमा हो रही है। इस दौरान ग्रामीणों ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने, मुनाबाव को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने समेत विभिन्न प्रकार की परिवेदनाओं से अवगत कराया। राज्यपाल बागड़े ने राउमावि तामलोर में अतिरिक्त कक्षा कक्ष एवं कंप्यूटर कक्ष का निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यालय के परीक्षा परिणाम के बारे में जानकारी लेते हुए दसवीं कक्षा में अनुतीर्ण हुए विद्यार्थियों का दुबारा अध्ययन सुनिश्चित करवाने के निर्देश दिए। इस दौरान राज्यपाल बागड़े ने विद्यार्थियों के साथ हर घर तिरंगा अभियान का संदेश देते हुए ग्रुप फोटो खिंचवाया। उन्होंने कहा कि हर घर पर तिरंगा अवश्य फहराएं।

प्रधानाचार्य के जन्मदिन पर छात्र-छात्राओं ने पौधे लगाये

स्वामी विवेकानंद राज.मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल की

निवाई, (निसं)। स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल निवाई में छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने सराहनीय पहल करते हुए प्रधानाचार्य कुंभाराम चौधरी 57वें जन्मदिवस पर 51 छायादार पौधे लगाकर सराहनीय कार्य किया। प्रधानाचार्य ने बताया कि अब प्रत्येक कर्मचारी और विद्यार्थी अपने जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष पांच वृक्ष लगाकर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देंगे।

इस दौरान सभी विद्यार्थियों और शिक्षक साथियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी। उन्होंने आव्हान करते हुए कहा कि ऐसे ही विवेकानंद मॉडल विद्यालय उन्नति और तरक्की करता रहे और नए-नए आयाम और कीर्तिमान स्थापित करता रहे।

- **विद्यार्थियों और शिक्षक साथियों ने प्रधानाचार्य चौधरी को तिलक माला और साफा बंधवाकर शुभकामनाएं दी**

इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य ललित कुमार बेनीवाल, व्याख्याता विनोद कुमार शर्मा, विकास गुर्जर, कमलसिंह गुर्जर, योगेश शर्मा, अंकिता राजावत, जीशान अहमद, हनुमान गुर्जर, मदनमोहन मीणा, राजवीर चौधरी, रमेशचंद मीणा, आरती तिवारी, कुंती शर्मा, दिव्यानी शर्मा, सोनू सोनी, सुदेश बाई, सुनीता गुर्जर, अमित कुमार शर्मा व निकलेस सैन सहित छात्र-छात्रायें व समस्त स्टाफ मौजूद था।

राशिफल रविवार 11 अगस्त, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र सोमवार प्रात: 8:33 तक, शुभ योग दिन 3:48 तक, गर करण सांय 6:51 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज बुध अस्त पश्चिम में सांय 6:07 पर होगा। आज भानु सप्तमी, महापात योग दिन 10:12 से दिन 2:55 तक है। आज से कल्याण धणी, डिग्गीपुरी पद यात्रा आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:38 से 9:16 तक, लाभ-अमृत 9:16 से 12:32 तक, शुभ 2:10 से 3:48 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

धनु
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता से मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन में बना भय दूर होगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक और व्यक्तिगत कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है। आर्थिक समस्या अभी बनी रहेगी। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

तिरंगा हाथों में थामे 4 किलोमीटर लंबी 3100 छात्र छात्राओं ने भव्य तिरंगा रैली निकाली

तिरंगा कार्यक्रम का हुआ आयोजन, वंदे मातरम, तिरंगामय हुआ आसीन्द

आसींद, (निसं)। उपखण्ड प्रशासन आसीन्द द्वारा आयोजित तिरंगा रैली में हजारों लोगों ने भाग लिया। यह रैली आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित की गई। इसमें लोगों ने देशभक्ति के साथ तिरंगा फहराया और देश की एकता और अखंडता के लिए एकजुट हुए। रैली में भाग लेने वालों को तिरंगा वितरित किया गया और उन्हें देशभक्ति से जुड़े संदेश दिए गए।

रैली में मुख्य अतिथि तहसीलदार बीएल सेन, नगरपालिका अध्यक्ष देवीलाल साहू, थाना अधिकारी आसींद हंसपाल सिंह,मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी लोकेश नागला ने तिरंगा फहराया और देशभक्ति से जुड़े अपने विचार साझा किए। रैली में देशभक्ति गीतों और नारों का गायन किया गया। तिरंगा यात्रा को बस स्टैंड से हरी झंडी दिखाई।

तहसीलदार बीएल सेन ने कहा, 'हमें यह देखकर गर्व हो रहा है कि इतने सारे लोगों ने तिरंगा रैली में भाग लिया और देशभक्ति के साथ एकजुट हुए। यह रैली देश की एकता और अखंडता के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। हमें अपने देश की आजादी और एकता को बनाए रखने के लिए एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। तिरंगा रैली के माध्यम से हम देशभक्ति के संदेश को फैलाना चाहते हैं। 'हर घर तिरंगा अभियान' प्रत्येक देशवासी को देश के प्रति अपने प्रेम को दर्शाने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए सभी कस्बेवासी अपने घर, प्रतिष्ठान, व कार्यालयों में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे झण्डे को अवश्य फहराएं।'

आसींद में हर घर तिरंगा कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत ' 4 किलोमीटर लंबी 3100 छात्र छात्राओं की भव्य तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। तिरंगा रैली आसीन्द नगर के मुख्य मुख्य मार्गों से होते हुए बस स्टैंड, गांधी चौक, सदर बाजार, हवाला, पंचायत समिति, चूंगी नाका से होते हुये उपखण्ड कार्यालय आसीन्द पहुंचीं।

शहर के आमजनो ने भव्य तिरंगा रैली में अति उत्साह से भाग लिया। हर कोई गुनगुनाता नजर आया हर घर तिरंगा, घर घर तिरंगा झंडा ऊंचा रहे हमारा। विभिन्न सामाजिक संगठन, आदर्श नवोदय विद्यालय, सर्राफा व्यवसाय, वस्त्र व्यवसाय, महावीर इंटरनेशनल शाखा आसींद, महावीर कामधेनू गोशाला, भारत विकास परिषद, किराणा व्यापार संघ, कपड़ा व्यापार संघ, निजी विद्यालय संघ, खाटू श्याम संघ, जनरल रेडीमेड व्यापार संघ सहित विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं तथा रेली के रास्ते में आने वाले सेकड़ो घरों की छतों से आमजन ने हजारों किलो पुष्पों से रेली पर पुष्प वर्षा की। महावीर कामधेनु गौशाला की तरफ से रास्ते में छात्र-छात्राओं और रेली में सम्मिलित सभी लोगों के लिए शरबत एवं पेयजल की व्यवस्था की गई जो सराहनीय रही।

■ समापन के समय उपखण्ड कार्यालय में राष्ट्रगान व शपथ के समय छात्र छात्राओं शिक्षको सरकारी कार्मिको जनप्रतिनिधीयों समेत 4000 नागरिकों कि उपस्थित रहीं

पूज्य झूलेलाल साहिब के चालीहो उत्सव पर पूजन

अजमेर, (कासं)। अजमेर के नानक का बेड़ा स्थित नसरपुर दरबार पूज्य झूलेलाल साहिब मन्दिर में 1947 से स्थापित झूलेलाल साहिब जयोति सेवा निरंतर की जा रही है। चालीहा साहिब का शुभारम्भ विधिविधान से नसरपुरी मंदिर प्रमुख बाबो साहिब सुरेश आलोम के नेतृत्व में अखंड ज्योति साहिब की छाया में जल ज्योति जनेऊ चोटी की लाज रखने वाले पूज्य झूलेलाल साहिब का चालीहा महोत्सव नसरपुर दरबार में आयोजित किया जा रहा है। नसरपुर दरबार में पूज्य झूलेलाल साहिब के चालीहो उत्सव पर शनिवार को पूज्य बहिराणे साहब का का आयोजन हुआ, भगत मुरली खत्री द्वारा पंजड़ों को सुनाया। उपस्थित श्रद्धालुओं भी मन्त्रमुग्ध हो आत्म विभोर हो गये। महाआरती करने के बाद छेज लगाकर पल्लव साहिब का वितरण किया गया और पूज्य बहराणा साहिब को दरियाशाह डिग्गी तालाब पर जलीय जीवों को भोजन कराया गया और आरती प्रार्थना करके पूज्य झूलेलाल साहिब के चालीहा महोत्सव के पच्चीसवें दिन का समापन किया गया। राजेश लालवानी और रमेश लालवानी ने बताया कि नसरपुर झूलेलाल मन्दिर में बाबा साहिब सुरेश आलोम के नेतृत्व में समस्त आयोजन मनाए जा रहे है।

सार-समाचार

पदयात्रा का पुष्पवर्षा से स्वागत

शाहपुरा, (निसं)। शाहपुरा कसबे में मीणा समाज के आराध्य देव भगवान श्री मांगट देव मालाजी महाराज के वार्षिक उत्सव में भाग लेने सैकड़ों नर नारी झंडा लिए भगवान के बेवाण के साथ जयकारे लगाते हुए पहुंचे। शाहपुरा धरती देवरा मे महावीर प्रसाद मोटीस के नेतृत्व में पुष्प वर्षा कर भगवान के भक्तों का स्वागत किया। शाम को भगवान की विधिवत महाआरती कर महाप्रसाद का वितरण किया गया। जानकारी के अनुसार पदयात्रा समिति संचालक कालूराम मीणा ने बताया कि मीणा समुदाय के भगवान आराध्य देव श्री मांगट जी भगवान पर उत्सव मनाने और झंडा चढ़ाने की परिपाटी एवं जिम्मेदारी को पूर्ण करने के लिए अदा करने के लिए मालाजी चौक श्यावता, निवारिया, गौवल्या, बाबई, सारौला, भरणी, मेटून, हनोती, आलोली, गणपतपुरा, श्यामपुरा, चावण्डिया से बड़ा खेड़ा बड़ा खेड़ा से रोही पर्वत रावली-अभ्यारण (मांगट जी दर्शन व ध्वजारोहण) परिपाटी एवं परंपरा के अनुसार करेंगे। श्री मांगट देव (मालाजी) बड़ा खेड़ा पद यात्रा समिति द्वारा लगातार 22 वर्षों से धार्मिक आयोजन किया जा रहा है 22वीं मालाजी पद यात्रा 14 अगस्त तक भगवान के स्थान पर पहुंचेगी। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी मालाजी महाराज बड़ा खेड़ा स्थान पर आयोजित मेले के अवसर पर पद यात्रा का आयोजन रखा गया।विश्राम शाहपुरा से कुण्डिया कलाँ (बनेड़ा) रात्रि विश्राम देवनारायण मालासेरी (आसीन्द रात्रि विश्राम समेलिया से बड़ा खेड़ा (टाँटगढ़) रात्रि विश्राम मालासेरी से समेलिया (भीम) रात्रि विश्राम 14 अगस्त बड़ा खेड़ा से रोही पर्वत रावली अभ्यारण मांगट जी दर्शन व ध्वजारोहण का कार्यक्रम विधिवत परंपरागत अनुसार किया जाएगा। पुजारी रामकुवार मीणा सुरेंद्र मीणा पदयात्रा समिति से कालूराम मीणा शिवराज मीणा फूली देवी मीणा सहित पदयात्री मौजूद रहे।

सोसायटी ने लगाए 450 पेड़

अजमेर, (कासं)। फ्लाइंग बर्ड्स सोसायटी द्वारा लोहागल रोड शास्त्री नगर पर एक पेड़ मां के नाम पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी रहे, अध्यक्षता पूर्व एडीए अध्यक्ष शिव शंकर ने की। कार्यक्रम संयोजक अम्बिका हेडा ने बताया कि सोसायटी द्वारा पिछले एक माह से एक पेड़ मां के नाम अभियान चला कर सभी के सहयोग से 450 वृक्षों का वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने महिला शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा कि अगर महिलाएं आगे आ जावे तो क्या नहीं हो सकता, महिला शक्ति ने कठिन कार्य को बहुत ही खूबसूरती से करती है। शिव शंकर हेडा ने कहा कि यह बहुत कठिन कार्य था जिसको बहुत सरल और सुनियोजित तरीके से संस्था द्वारा किया गया है। संस्था द्वारा नारेगा की टीम को उपहार स्वरूप बरसाती तथा उपस्थित सभी सदस्यों को उपहार स्वरूप पौधे भेंट किए। सचिव विजया बकलीवाल ने सोसायटी के कार्यों का प्रारूप प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पूर्णिमा मालू, शिल्पा डागा, अंजू सोनी, पारूल भार्गव, कविता अग्रवाल, सुमन भाटी, सुनीता तापडिया, राधा तापडिया, रानी चैधरी, जया लोढ़ा सहित अन्य सदस्यों ने सहयोग प्रदान किया।

भक्तिरस महोत्सव 15 को

अजमेर, (कासं)। भगवान गंज में स्थित बाबा साहिब तुलसीराम साहिब दरबार में एक दिवसीय सत्संग-भजनो कीर्तन व भक्तिरस के रंगारंग कार्यक्रम के महोत्सव का आयोजन आगामी 15 अगस्त को आयोजित किया जाएगा। सिन्धी सन्त समाज के पूर्व सचिव स्वामी किशन लाल माखीजानी को उनकी जयंती के अवसर पर आयोजन करके नमन किया जाएगा। आयोजक मंडल दरबार के राजेश लालवानी और पूज्य सिन्धी पंचायत के महासचिव रमेश लालवानी ने बताया कि 15 अगस्त को गुरुवार को सायं 6 बजे से शब्द कीर्तन, आरती व अरदास रात्रि 7:30 बजे से, केक का भोग प्रसाद 8 बजे से और रात्रि 8:30 बजे से पल्लव प्रार्थना के पश्चात प्रसाद का वितरण किया जाएगा। संत मंडल के सन्त अशोक गाफिल, संत केशनदास, भगत मंधाराम भिरयानी सहित पूज्य सिन्धी पंचायत के पदाधिकारियों लत्ता भैरूमल बच्चानी, राजेश लालवानी, किशोर विधानी द्वारा श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में सम्मलित होकर धार्मिक का लाभ प्राप्त करने की अपील की है।

पोधरोपण किया

अजमेर, (कासं)। शास्त्री नगर कॉलोनी में स्थित राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में हरियालों राजस्थान वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया एवं पोधारोप किया। प्रधानाध्यापिका सुशीला सोनी की उपस्थिति में समाजसेवी डॉ एस डी.मिश्रा, पूर्व पार्षद गणेश चौहान, दिनेश चौहान, नन्दराम चौधरी स्टाफ के संजय बंसल, चेजा शर्मा, ममता मेडम एवं नन्ने मुन्ने बच्चों ने मिलकर विद्यालय में विभिन प्रकार के दस पोधे लगाए, जिसमें अमलताश गुलमोर सिमरण बिलपत्र नीम पीपल जामून आदि के अलावा छायेदार पौधे लगाये विद्यालय के पास तारामणी पानी की टंकी परिसर में भी पोधारोपण किया। इस मोंके पर समाजसेवी डॉ . एस डी मिश्रा ने पर्यावरण वृक्षारोपण के बारे में बिस्तार से बताया और कहां की इन पोधों को जिन्दा रखने के लिए समय समय पानी व रखरखाव करना अनिवार्य है। शाला प्रभारी सोनी मेडम ने अतिथियों का स्वागत किया और आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हरिरालों राजस्थान वृज्ञारोपण का पुनीत कार्य कर विद्यालय को हरा भरा रखने में मदद की।

निशुल्क ज्योतिष शिविर आज

अजमेर, (कासं)। अजयमेरु प्रेस क्लब में निशुल्क ज्योतिष शिविर का शुभारंभ पुष्कर स्थित चित्रकूट धाम के उपासक पाठक जी महाराज रविवार को सुबह 10 बजे करेंगे। इस शिविर में देशभर के प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य मौजूद रहेंगे और आम आदमी की समास्याओं से जुड़े प्रश्नों का समाधान करेंगे। अजयमेरु प्रेस क्लब के अध्यक्ष राजेन्द्र गुंजल ने बताया कि यह शिविर बिलकुल निशुल्क है। शिविर अजयमेरु प्रेस क्लब, सावन सीनियर सेकेंडरी स्कूल और पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा। इसमें कुंडली विश्लेषक, न्यूमेरोलॉजी, हस्त रेखा विशेषज्ञ, मस्तक रेखा विशेषज्ञ, वैदिक ज्योतिष, टैरो कार्ड, लाल किताब सहित अन्य ज्योतिष विधाओं के विशेषज्ञ मौजूद रहेंगे। खास़तौर पर पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान के पंडित अनीष व्यास लोगों की कुंडलियों का विश्लेषण करेंगे।

सांखला प्रदेश मीडिया प्रभारी नियुक्त

ब्यावर, (निसं)। राजस्थान प्रदेश में माली समाज के युवाओं का लोकप्रिय व अत्यधिक सक्रिय संगठन माली सेना ने अपनी कार्यकारिणी के विस्तार के रूप में संगठन को मजबूती प्रदान की है। प्रदेश अध्यक्ष किशन देवड़ा ने प्रदेश मीडिया प्रभारी पद पर हरीश सांखला (पार्षद)को नियुक्त किया है। माली सेना संस्थापक दिनेश भाटी ने बताया कि हरीश सांखला वर्तमान में पार्षद होने के साथ विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और अपने कार्य व लेखनी के माध्यम से सोशल मीडिया पर अत्यधिक सक्रिय रहते हैं। अपने उत्कृष्ट कार्यों की वजह से हरीश सांखला उपखंड स्तर, जिला स्तर व प्रदेश स्तर पर सम्मानित हो चुके हैं। प्रदेश अध्यक्ष किशन देवड़ा ने बताया कि इनकी नियुक्ति से माली सेना संगठन को मजबूती मिलेगी

तिरंगा रैली निकाली

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला कलक्टर नमित मेहता के निर्देशानुसार शनिवार को जिलेभर में "तिरंगा यात्रा" का आयोजन किया गया। जिला स्तर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन रतन कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद शिवपाल जाट ने तिरंगा यात्रा को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झंडी दिखाई। इस दौरान नगर परिषद आयुक्त हेमाराम चौधरी, शिक्षा अधिकारी योगेश पारीक सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं तथा स्काउट के विद्यार्थी व सिविल डिफेंस की टीम मौजूद रही। जिला स्तर पर तिरंगा यात्रा कलेक्ट्रेट परिसर से शुरू होकर सेशन कोर्ट चौराहा, रेलवे स्टेशन चौराहा, गोल प्याऊ चौराहा होते हुए सूचना केंद्र तक निकाली गई।

अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन ने किया वृक्षारोपण

अजमेर, (कासं)। अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन अजमेर जिला इकाई द्वारा एक पेड़ राष्ट्र के नाम एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया जा रहा है इसी कड़ी में शनिवार को ज्ञान विहार कॉलोनी सहित विभिन्न क्षेत्रों में कॉलोनीवासियों के सहयोग से वृक्षारोपण किया गया।

संस्था के जिला महामन्त्री उमेश गर्ग ने बताया कि मुख्य अतिथि संरक्षक कालीचरण खंडेलवाल थे। इस अवसर पर खंडेलवाल ने कहा कि पेड़ पौधे पर्यावरण का एक अनिवार्य हिस्सा है, वृक्षारोपण से प्रकृति में संतुलन बनाये रखने के लिए तथा अपने आस पास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड लगाना जरूरी है। वृक्षारोपण कार्यक्रम में नीम, पीपल, आम, कदंब, बेलपत्र, जामुन सहित फलदार एवं छायादार 125 पेड़ ट्री गार्ड सहित लगाए गए। संस्था द्वारा 1008 वृक्ष लगाये जाने हैं, उनमें से लगभग 700 वृक्ष लगाए जा चुके हैं। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष रमेशचंद तापडिया व महामन्त्री उमेश गर्ग ने कहा कि प्रकृतिए संस्कार और संस्कृति के विकास एवं उत्थान तथा इनकी रक्षा के लिए वैश्य समाज हमेशा प्रतिबद्ध है।

महिला शाखा अध्यक्ष वर्षा फतहपुरिया ने बताया कि महिला रोजगार एवं उद्योग को प्रोत्साहन देने तथा कामकाजी महिलाओं को अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की महिला इकाई द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर प्रदर्शनी एवं सेल का आयोजन करने जा रही है।

बैठक आयोजित

सरवाड़, (निसं)। भाजपा शहर मण्डल द्वारा बैठक आयोजित हुई इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक शत्रुघ्न गौतम भी बैठक में भाग लिये इस अवसर पर केकडी विधायक शत्रुघ्न गौतम संबोधित करते हुवे कहा कि हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रदेश के प्रत्येक घर में राष्ट्रीय ध्वज फहराना है। अभियान के माध्यम से देश के नागरिकों में देश भक्ति व राष्ट्रीय गौरव की भावनाओं को बढ़ावा देना है। इस मौके पर विधायक गौतम का कार्यकर्ताओं ने माला पहनाकर स्वागत किया वहीं बैठक में मण्डल अध्यक्ष प्यारे लाल खटीक व महामन्त्री कुशल किशोर सोनी एडवोकेट अजय पारीक भाजपा नेता हरि मोहन शर्मा भगवान मुंदड़ा व पूर्व चेयरमैन दुर्गा लाल माली भगवान भट्ट चैन सिंह पगारिया महामन्त्री नंदकिशोर रेगर उपाध्यक्ष कैलाश घारू पार्षद कालू माली सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आजादी का अमृत महोत्सव को लेकर सरवाड़ में निकाली विशाल तिरंगा रैली

सरवाड़, (निसं)। आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान हर घर तिरंगा अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया वहीं विशाल तिरंगा रैली का आयोजन पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर से गांधी चौक तक किया गया इस दौरान तहसीलदार रणछोड लाल व विकास अधिकारी त्रिलोकाराम दया द्वारा रैली को हरि झण्डी दिखाकर रवाना किया इस दौरान विद्यालय के छात्र-छात्राएं तिरंगा रैली को लेकर खुश देखने को मिली।

इस अवसर पर आंगनबाडी कार्यकर्ताएं शहरी नरेगा श्रमिको व कार्मिको द्वारा तिरंगा झण्डा लेकर रैली निकाली गई एवं राजकीय विद्यालय परिसर में हर घर तिरंगा लगाने की शपथ ली गई वहीं इस दौरान तहसीलदार रणछोड लाल विकास अधिकारी त्रिलोकाराम दया मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामेश्वर प्रसाद झारोटिया सरवाड़ थाना अधिकारी सत्यवान मीणा प्रधानाचार्य गोपीलाल कीर कन्या विद्यालय के प्रधानाचार्य परमेश्वर शास्त्री पालिका कार्मिक भागचन्द खटीक अर्जुन सिंह रहीस खान महावीर प्रसाद जेटीए विरेन्द्र योगी सहित समस्त कार्मिक उपस्थित रहें।

विशाल तिरंगा रैली का आयोजन किया।

भजनों पर मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

अजमेर, (निसं)। पुराने रंगजी मंदिर में झूला महोत्सव के अन्तर्गत संस्कार भारती अजयमेरु द्वारा आयोजित दशम रंगम संगीत महोत्सव में गायककारों द्वारा दी गई भजनों की प्रस्तुति पर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गऐ। कार्यक्रम के मुख्य अथिति संगीतकार दिनेश पाराशर थे। संस्था के उपाध्यक्ष व प्रचार प्रभारी महेंद्र जैन मित्तल ने बताया कि इस अवसर किशनगढ़ के गायकारोने सुरीले भजनों की प्रस्तुत देकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। वहीं संगीत कलाकारों का अशोक शर्मा, पूर्णिमा पाठक, सुमन वैष्णव, प्रभा गुप्ता आदि ने दुप्पटा ओढा स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया। इससे पूर्व संस्कार भारती अजयमेरू के अध्यक्ष तिलक राज, महामंत्री कृष्ण गोपाल पाराशर, ने मुख्य अथिति दिनेश पाराशर को संस्कार भारती का दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान किया।अशोक शर्मा संस्कार भारती के पदाधिकारियों ने मंदिर के मुख्य ट्रस्टी अनंत प्रसाद गनेरीवाल सहित अतिथियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन कृष्ण गोपाल पाराशर ने किया।

बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर ली बैठक

■ विकास योजनाओं से आमजन को लाभान्वित करने के अधिकारियो को दिए निर्देश

शाहपुरा, (निसं)। शाहपुरा जिले के प्रभारी सचिव जितेंद्र सोनी की अध्यक्षता में को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में ज़िला स्तरीय अधिकारियो के साथ परिवर्तित बजट 24-25 में की गई घोषणाओं के संबंध में बैठक आयोजित की गई। घोषणाओं को शीघ्र अमली जामा पहनाने के लिए जिला मुख्यालय पर मीटिंग का आयोजन किया गया। प्रभारी सचिव सोनी ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के बजट के तहत की गई समस्त घोषणाओं के क्रियान्वयन के लिए बेहद संवेदनशील हैं तथा शीघ्रातिशीघ्र सभी घोषणाओं को धरातल पर उतारकर आमजन को बजट घोषणाओं से लाभान्वित करवाने का ध्येय हैं, इसी बाबत उन्होंने सभी जिला प्रभारी सचिवों को जिलों में भेज कर बजट घोषणाओं से संबंधित कार्यों जैसे भूमि चिन्हीकरण,भूमि आवंटन जैसे कार्यों में अधिक समय लगता है के कार्यों में शीघ्रता लाने के लिए निरंतर इसकी मॉनिटरिंग करने के उद्देश्य से प्रभारी सचिवों को निर्देशित किया गया है। सोनी ने बजट में की गई समस्त घोषणाओं के कार्यों की प्रगति का आँकलन किया तथा विभागों द्वारा की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी ली उन्होंने जिला प्रशासन तथा विभागों से बजट घोषणाओं में भूमि चिन्हीकरण तथा आवंटन में किए गए कार्यों की समीक्षा की। बैठक के दौरान ज़िले के प्रभारी सचिव सोनी ने जिला प्रशासन से बजट घोषणाओं की क्रियान्वयन को लेकर यदि किसी भी प्रकार की समस्या जो राज्य सरकार के ध्यान में लाने योग्य है को शीघ्र अवगत करवाने के लिए कहा। प्रभारी सचिव सोनी ने वृक्षारोपण अभियान की समीक्षा की।

देशभक्ति कार्यक्रम का आयोजन

भीलवाड़ा, (निसं)। जिला यूनेस्को एसोसिएशन भीलवाड़ा एवं अपना संस्थान द्वारा आजादी के महामहोत्सव स्वतत्रंता दिवस पर "एक शाम देश के नाम" देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम 11 अगस्त, रविवार को सायं 7 बजे नगर परिषद के टाउन हाल में आयोजित किया जायेगा। जिला यूनेस्को एसोसिएशन की प्रवक्ता मधु लोढा ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए स्टेट फेडरेशन ऑफ यूनेस्को एसोसिएशन इन राजस्थान के प्रदेश संयोजक गोपाल लाल माली की अध्यक्षता में एक संचालन कमेटी का गठन किया गया जिसमें अपना संस्थान के प्रदेश सचिव विनोद मेलाना, सचिव साधना मेलाना, जिला यूनेस्को के अध्यक्ष चेतन मानसिंहका, कार्यकारी अध्यक्ष दिनेश जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ललित अग्रवाल, सचिव जगदीश चन्द्र मून्दड़ा को शामिल किया गया। इस समारोह में देशभक्ति, गीत, संगीत व नृत्य स्थानीय प्रतिभावान कलाकारों व स्कूल के छात्र-छात्राओं प्रस्तुतियों से आजादी के उन लम्हों को याद किया जायेगा।

रेडक्रास में अंगदान-देहदान पर कार्यशाला सम्पन्न

अजमेर, (कासं)। राज्य सरकार द्वारा राज्य में अंगदान एवं देहदान,नेत्रदान के प्रति जागरूकता के लिए अभियान चलाया जा रहा है। संगठन सचिव जीवनसिंह चौहान ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इस अभियान में आज 2024 शनिवार को प्रातः 11.00 बजे से अंगदान एवं देहदान, नेत्रदान, रक्तदान के प्रति आमजन में जागरूकता लाने के लिये रेडक्रास की और से हरिनारायण सोमानी, चेयरमैन भारतीय रेडक्रास सोसायटी, अजमेर की अध्यक्षता एवं डा अरविन्द खरे, अधीक्षक जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय के मुख्य आतिथ्य एवं भगवानसिंह सचिव रेडक्रास व डा0 मधुविजया वर्गीय के विशिष्ट आतिथ्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने अपनी वार्ताए दी।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए डा मधु विजयवर्गीय ने कहा कि विश्व अंगदान दिवस हर साल 13 अगस्त को मनाया जाता है। यह समाज में अंगदान की आवश्यकताके बारे में जागरूकता बढाने के लिए दुनिया भर के लोगों द्वारा मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य स्वास्थ्य संगठनर लोगों को शिक्षित करने लिए स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर लाइव कक्षाएं आयोजित करते है,उन्होंने समाज में अंगदान की आवश्यकता,उसकी प्रक्रिया और महत्व के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला।

रेडक्रास के सचिव भगवान सिंह ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज प्रदेशव्यापी अंगदान देहदान महादान कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी उठा के लोग अंगदान कर सकते हैं। अंगदान पूरी तरह से स्वैच्छिक कार्य हैं और लोगो को इन गतिविधियों में शामिल होने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है, उन्होंने कहा कि निरक्षरता, उचित मार्गदर्शन की कमी, जागरूकता की कमी, सर्जरी का डर,आदि कुछ प्रमुख कारण है जो किसी व्यक्ति को इस तरह के दान प्रथाओं में शामिल होने से रोकते है।

स्वतंत्रता दिवस पर हर-घर तिरंगा अभियान

ब्यावर, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी महाराणा प्रताप मंडल अध्यक्ष जितेंद्र कावड़िया के नेतृत्व में भाजपा मंडल कार्यकर्ताओं ने आगामी स्वतंत्रता दिवस पर हर-घर तिरंगा अभियान के तहत महात्मा गांधी सर्किल, चांग गेट पर तिरंगा वितरण का शुभारंभ किया।चांगगेट स्थित मुख्य बाजार में सभी प्रतिष्ठानों, रिक्शा चालकों, महिलाओं एवं आमजन को तिरंगा झंडा का वितरण किया गया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष जितेंद्र कावड़िया ने बताया कि आशापुरा माता मंडल क्षेत्र के हर घर में तिरंगा फहराया जाएगा। यह अभियान स्वतंत्रता दिवस को उत्सव के रूप में मनाने के लिए चलाया जा रहा है। अभियान के तहत तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी और लोगों के घरों में तिरंगा फहराया जाएगा। मंडल में युवा मोर्चा द्वारा 11, 12 और 13 अगस्त को तिरंगा यात्रा निकालेगा। 14 अगस्त को युवाओं व आमजन को विभाजन की विभीषिका याद दिलाई जाएगी और मौन मार्च निकाला जाएगा।

अजमेर देहात जिला मंत्री शिवप्रकाश सामरिया ने कहा कि आजादी का पर्व 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र का बड़ा पर्व है। यह दोनों त्योहार हमारे लिए सर्वाधिक महत्व के हैं। यदि पड़ोसी देशों में देखें तो उन देशों में लोकतंत्र की हालत बहुत ही दयनीय है।

बावरिया हत्याकांड : कैलाश की हत्या के आरोप में उसकी पत्नी, सास व भाई गिरफ्तार

अवेध संबधो की वजह रही हत्या, मोबाइल की काल डिटेल ने खुलवाया राज

पुष्कर, (निसं)। पत्नी सास भाई निकला हत्यारा, पत्नी ने पहले गांव के ही दो युवकों पर लगाया था हत्या का आरोप। अवेध संबधो की वजह रही हत्या, मोबाइल की काल डिटेल ने खुलवाया राज।

मोतीसर स्थित डाबला की ढाणी के कैलाश बावरिया हत्याकांड का खुलासा करते हुए पुलिस ने कैलाश की हत्या के आरोप में उसकी पत्नी, सास व भाई को गिरफ्तार किया है। मामले में खास बात यह सामने आयी कि मृतक के भाई व उसकी पत्नी के बीच अवैध संबंध थे। इसी को लेकर भाई व पत्नी ने कैलाश को मारने की योजना बनाई और आरोपी पत्नी व सास ने रस्से से गला दबा कर कैलाश की बेहरमी से हत्या कर दी।

ग्रामीण दीपक कुमार शर्मा ने बताया कि ग्राम मोतीसर स्थित डाबला की ढाणी निवासी नाथी पत्नी कैलाश बावरिया ने एसपी को परिवाद पेश किया। जिसमें उसने ओम सिंह रावत, सुल्तान सिंह व उसके बहनाई के खिलाफ हत्या का आरोप लगाया। परिवाद के आधार पर पुलिस ने कैलाश की हत्या के आरोप में आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी ने पुलिस उप अधीक्षक ग्रामीण रामचंद्र चौधरी के सुपरवीजन व सीआई राकेश यादव के नेतृत्व में टीम गठित की गई। टीम ने आरोपियों द्वारा दफनाएं शव को निकाल कर मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम कराया।

■ मृतक के भाई व उसकी पत्नी के बीच अवैध संबंध थे। इसी को लेकर भाई व पत्नी ने कैलाश को मारने की योजना बनाई

साथ ही मामले की गहनता से जांच की। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि घटना के दिन 26 जुलाई को मृतक कैलाश व उसकी पत्नी नाथी के बीच झगड़ा हुआ था। इसी दौरान मृतक की उसके भाई राजू से भी मोबाईल पर कई बार बातचीत हुई। एएसपी शर्मा ने बताया कि नाथी व उसके देवर राजू के बीच अवैध संबंध थे। 26 जुलाई को कैलाश, नाथी व उसकी सास ने साथ में बैठ कर शराब पी। इसी दौरान कैलाश के पास राजू का फोन आया और दोनों भाई गाली-गलोच करने लग गए। इसके चलते नाथी व राजू ने फोन पर कैलाश को मारने की योजना बनाई और नाथी व उसकी मां मीरा ने शराब के नशे में लड़ते झगड़ते रस्सी से गला दबा कर कैलाश की हत्या कर दी। पुलिस की पुछताछ में आरोपियों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया।

मनगंढ़त कहानी रच, दर्ज कराई झूठी रिपोर्ट:- मृतक की पत्नि नाथी ने एसपी को पेश किऐ परिवाद में बताया कि गत 26 जुलाई की शाम 7 उसका पति कैलाश, उसकी मां मीरा उसकी झोपडी में बैठे थे। तभी ओम रावत वहां आया और उसके पति के साथ बातचीत कर साथ में शराब पीने लगा। तभी ओम रावत उसके पति के साथ मारपीट करने लगा। तब उसने व उसकी मां ने उसके पति को छुडाना चाहा तो इसने उसके साथ भी मारपीट की तथा उसके पति के गले में रस्सा बांध कर दबाया और उसके पति को अधमरा छोडक़र वहां से भाग गया था। तथा सुबह 8 बजे सुल्तान रावत व उसका बहनोई एक पिकअप लेकर आये तथा आते ही इन्होने उसके पति कैलाश को जबरन पिकअप गाडी में डालने लगे तो उन्हें रोकने की कोशिश की तो भी जबरस्ती गाडी में डाल कर ले गये तथा उसके पति के साथ बुरी तरह से मारपीट की जिसके कारण उसके पति की मृत्यु हो गई और ये लोगों मौका देखकर उसके पति को खेत में पटक कर भाग गये। बताया गया है कि नाथी ने अपना जुर्म छुपाने के लिए ओम सिंह, सुल्तान व घासीराम पर हत्या का झूठा आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज करायी तथा सबूत मिटाने के लिए घटना के दूसरे दिन अस्पताल से बिना पोस्टमार्टम कराए शव प्राप्त कर लिया। यही नहीं कैलाश के परिजनों को यह बताते हुए कि उसे जहरीले जानवर ने काट लिया। इस पर परिजन शव अपने पैतृक गांव ले गए और दफना दिया।

खुलासा करने वाली टीम में यह रहे शामिल:- टीम में सीओं ग्रामीण चौधरी, सीआई यादव, एएसआई गिरधारी लाल, छीतर लाल, रामेश्वर लाल, पुलिसकर्मी मनोहरलाल, सुनील पारीक, हीरालाल, जितेन्द्र विजय, अनिल कुमार, भोमाराम, सुनीता शामिल थे।

परिक्षित मोक्ष का सजीव मंचन

ब्यावर, (निसं)। ब्रह्मलीन स्वामी श्री सुखदेव मुनि जी हरे राम आश्रम कनखल हरिद्वार वालों की 38वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में महामंडलेश्वर स्वामी श्री कपिल मुनि जी हरिद्वार कै सानिध्य में सावन मास के पावन अवसर पर ब्रह्मानंद सत्संग मंडल मैं आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के सातवें दिन कथा मैं अमरकटक वालो के श्री मुख से व्यास पीठ पर परम पूज्य स्वामी ज्योतिर्गयानंद जी महाराज ने सुदामा चरित्र और परीक्षित मोक्ष आदि प्रसंगों का सुंदर वर्णन किया। सुदामा जी जितेंद्रिय एवं भगवान कृष्ण के परम मित्र थे। भिक्षा मांगकर अपने परिवार का पालन पोषण करते। गरीबी के बावजूद भी हमेशा भगवान के ध्यान में मग्न रहते। पत्नी सुशीला सुदामा जी से बार बार आग्रह करती कि आपके मित्र तो द्वारकाधीश हैं उनसे जाकर मिलो शायद वह हमारी मदद कर दें। सुदामा पत्नी के कहने पर द्वारका पहुंचते हैं और जब द्वारपाल भगवान कृष्ण को बताते हैं कि सुदामा नाम का ब्राम्हण आया है। कृष्ण यह सुनकर नंगे पैर दौडकर आते हैं और अपने मित्र को गले से लगा लेते। उनकी दीन दशा देखकर कृष्ण के आंखों से अश्रुओं की धारा प्रवाहित होने लगती है। सिंघासन पर बैठाकर कृष्ण जी सुदामा के चरण धोते हैं। सभी पटरानियां सुदामा जी से आशीर्वाद लेती हैं। सुदामा जी विदा लेकर अपने स्थान लौटते हैं तो भगवान कृष्ण की कृपा से अपने यहां महल बना पाते हैं।

स्वागत किया

भीलवाड़ा, (निसं)। राजस्थान सरकार में सहकारिता एवं नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री गौतम दक का भीलवाड़ा आगमन पर स्थानीय सर्किट हाउस में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा के नेतृत्व व सभापति राकेश पाठक की उपस्थिति में भव्य स्वागत, अभिनंदन किया गया।

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार के पत्र क्रमांक RJ/24/SEAC2/MIN/EC/0099/Cat B1/2023-24 Jaipur Dated 6-6-2024 के द्वारा के द्वारा मै. चारभुजानाथ ग्रेनी स्टोन्स खनन पट्टा सं. 26/2022 क्षेत्रफल 1.3153 हेक्टर वास्ते खनिज ग्रेनाईट निकट ग्राम कांगसो का बाड़िया तहसील करेडा जिला भीलवाड़ा (राज.) Production Capacity Granite 125446 TPA के लिए पर्यावरण स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वीकृति की प्रति SEIAA जयपुर एवं राजस्थान प्रदूषण नियन्त्रण मण्डल कार्यालय में जन साधारण के लिए उपलब्ध है एवं प्रदूषण मण्डल की वेबसाईट पर देखी जा सकती है। मै. चारभुजानाथ ग्रेनी स्टोन्स

प्रदेश के कई जिलों में बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त

हिण्डौन सिटी, करौली, चाकसू, देवली, श्रीमाधोपुर, निवाई, चौमूं, कामां सहित कई शहरों और गांवों में मूसलाधार बरसात हुई

हिण्डौन में चार घंटे में चार इंच बारिश से कॉलोनियां, सड़कें व निचले इलाके जलमग्न

हिण्डौन सिटी शहर सहित आसपास के क्षेत्र में बारिश से कई इलाके जलमग्न हो गए।

- सड़कों पर पानी भरने से स्कूली बच्चों, मरीज, कर्मचारियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा
- डांग क्षेत्र में हुई बारिश से जगर बांध में शनिवार सुबह तक 12 फीट पानी की आवक हुई

हिण्डौन सिटी, (निसं)। शहर सहित आसपास के क्षेत्र में शनिवार सुबह चार घण्टे में चार इंच बारिश दर्ज की गई। शनिवार सुबह छह बजे से लगातार दस बजे तक झमाझम बारिश का दौर चला। बारिश के कारण शहर की कालोनियां, सड़कें एवं निचले इलाके जलमग्न हो गए। गत लगभग एक सप्ताह से चल रहे बारिश के रुक-रुककर चले दौर के बाद दोपहर बाद मौसम बिल्कुल साफ हो गया।

सिंचाई विभाग के कनिष्ठ अभियंता उम्मेद सिंह ने बताया कि शुक्रवार रात से शनिवार सुबह 6 बजे से 10 बजे तक 99 एमएम (चार इंच) बारिश दर्ज हुई। इस दौरान जगर बांध में 20 एमएम बारिश दर्ज हुई। इसके बाद भी घने बादल छाए हुए हैं। इधर भारी बारिश के कारण कई कॉलोनियों, सड़कों पर दो से तीन फीट पानी भर गया। शहर के चौबेपाड़ा, दुब्बेपाड़ा, जाट की सराय, शीतला कॉलोनी आदि क्षेत्र में घरों में पानी घुस गया। जिला अस्पताल, मोहन नगर गर्ल्स स्कूल परिसर पानी से लबालब दिखे। सड़कों पर पानी भरने से स्कूली बच्चों व मरीज, सरकारी कर्मचारियों को आवागमन में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। डेंप रोड व कटरा बाजार में सैकड़ों दुकानों में पानी भर गया। वहीं हिंडौन-बयाना मार्ग पर मनीराम पार्क के पास सड़कें दरिया बन गई। डांग क्षेत्र में हुई जोरदार बारिश के कारण जगर बांध में 12 फीट पानी की सुबह सात बजे तक आवक हो चुकी है। तेज बारिश के कारण दुब्बेपाड़ा में सड़क से पांच फीट व चौबेपाड़ा में भी ऊंचे मकान में भी पानी भर गया। मनीराम पार्क के सामने उमाशंकर सत्संग भवन में शिवालय में शिव परिवार की प्रतिमाएं पानी में पूरी तरह डूब गई। नीम का बाजार स्थित हरदेव जी मंदिर के समीप प्राचीन दहलीज का हिस्सा बारिश के कारण गिर गया। गनीमत रही कि बड़ा हादसा नहीं हुआ।

वहीं दूसरी ओर हिण्डौन शहर के कटरा बाजार, कंबलवाल गली, सराफा बाजार, डेम्प रोड, मोहन नगर, शीतला चौराहा सहित कई इलाकों में पानी भर गया। कटरा बाजार की दर्जनों दुकानों में कई फीट पानी भरने से व्यापारियों का लाखों रुपए का नुकसान हो गया। शनिवार सुबह से चल रहे बारिश के दौर के कारण कई निजी स्कूलों में बच्चों की छुट्टियां भी कर दी गई।

चाकसू में तीन दिन से लगातार बारिश, कई इलाके लबालब

चाकसू कस्बे के बीचों-बीच स्थित मनहोरा तालाब ओवरफ्लो हो गया।

- निचले इलाकों और कच्चे-पक्के रास्तों में पानी भरा

चाकसू, (निसं)। मौसम विभाग की चेतावनी के मुताबिक क्षेत्र में तीन दिनों से लगातार बारिश हो रही है। आसमान से बरस रहे पानी से विधानसभा क्षेत्र के अधिकांशत: तालाब ओवरफ्लो हो गए हैं। बारिश से नगर पालिका क्षेत्र के निचले इलाकों और कच्चे-पक्के रास्तों में पानी भर गया है। बहुत से आम रास्ते तो कीचड़ में पसरे पड़े हैं जिससे लोगों का आवागमन दुश्वार हो गया है।

कस्बे के मध्य में स्थित मनोहरा तालाब ओवरफ्लो हो गया है। मनोहर तालाब के पानी निकासी का प्रशासन द्वारा उचित प्रबंध नहीं होने से कृषि मंडी के इलाके में बसी कच्ची बस्ती पर खतरा मंडराने लगा है। मनोहर तालाब के ओवरफ्लो होने पर आसपास के इलाकों में बने मकानों के बेसमेंट में पानी भरना शुरू हो गया है। वार्ड पार्षद दिनेश शर्मा एवं आसपास के इलाकों के लोगों ने बताया कि मनोहर तालाब के ओवरफ्लो होने के कारण चम्पेश्वर कॉलोनी, आईडीएसएमटी कॉलोनी, चम्पेश्वर मंदिर के स्थित कॉलोनी तालाब की पाल पर स्थित खेतों और पास की सड़कों से लगातार पानी बहकर जा रहा है। आसपास के मकानों में धीरे-धीरे पानी जाने लगा है। पार्षद शर्मा ने नगर पालिका प्रशासन से आग्रह किया है कि अति शीघ्र पानी निकासी को लेकर उचित प्रबंध करें वरना बहुत बड़ी आपदा का सामना करना पड़ सकता है। लोगों ने प्रशासन से समस्या का जल्द हल कराने की मांग की है।

धौलपुर शहर में तीसरे दिन भी बाढ़ जैसे हालात

बाड़ी रोड और सैंपऊ रोड पर पानी की चादर चल रही है, कई कॉलोनियों में जलभराव से हालात खराब

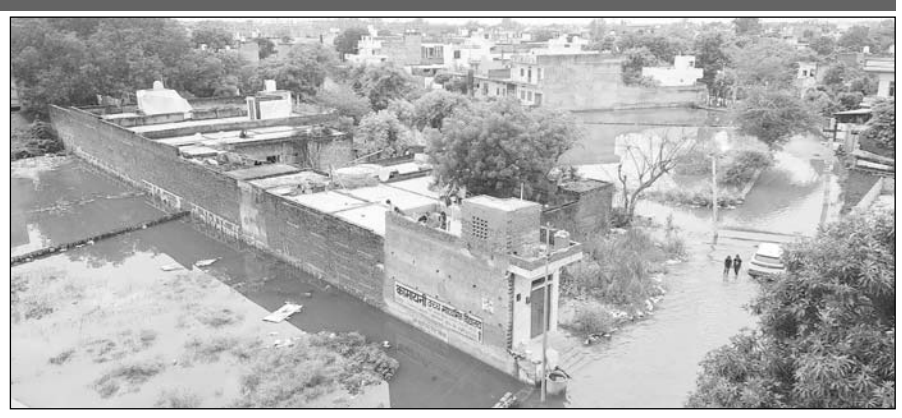

भारी बारिश के कारण धौलपुर शहर में कई कॉलोनियों में पानी भरा हुआ है।

- स्थिति ये है कि लोग पैदल तक नहीं निकल पा रहे हैं, घरों में पानी भरा, लोग घरों में कैद होने को मजबूर है

धौलपुर, (निसं)। बुधवार-गुरुवार की रात को हुई भारी बारिश के कारण धौलपुर शहर में तीसरे दिन शनिवार को भी बाढ़ जैसे हालात रहे। स्थिति ये है कि बाड़ी हाईवे पर 132 केवी के पास सड़क पर पानी की चादर चल रही है, जिससे यहां से गुजरने वाले लोगों और वाहनों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा सैंपऊ रोड और इससे जुड़े कॉलोनियों में भी पानी भरा हुआ है। वहीं पचगांव गांव और पचगांव पुलिस चौकी के बीच में भी रोड़ पर पानी की चादर चल रही है, जिससे लोगों को परेशानियों को सामना करना पड़ रहा है।

अधिक बरसात होने के कारण छीतरिया ताल की भराव क्षमता पूरी हो गई और पानी ऊपर से निकल रहा है। ये पानी धौलपुर शहर में आ गया है। जिसमें बाड़ी रोड और सैंपऊ रोड पर बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। करीब एक दर्जन कॉलोनियों में भारी पानी भरा हुआ है, जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। छीतरिया ताल से आए पानी की वजह से धौलपुर शहर की भोगीराम कॉलोनी, गोकुल, चंदन विहार कॉलोनी, आनंद नगर सहित जगदीश टॉकिज और सैंपऊ रोड पर स्थित करीब एक दर्जन कॉलोनी में जलभराव के हालात हैं। स्थिति ये है कि लोग पैदल तक नहीं निकल पा रहे हैं। लोगों के घरों में पानी भर गया है। लोग घरों में कैद होने को मजबूर हैं। हालात को देखकर लगता है कि लोग जिला मुख्यालय पर नहीं, बल्कि किसी अति पिछड़े गांव देहात में रह रहे हैं।

चौमूं क्षेत्र में मूसलाधार बारिश, मालेश्वर धाम के झरने चले

बरसात से सामोद के पास महार कलां स्थित मालेश्वर धाम की पहाड़ियों से नदी बहती नजर आई।

- सामोद के वीर हनुमान जी मंदिर के पास स्थिति पहाड़ों से नदियों का पानी निकल पड़ा

चौमूं/कालाडेरा/सामोद, (निसं)। चौमूं क्षेत्र में शनिवार सुबह जोरदार बारिश हुई। बारिश होने से कई जगह पर जलभराव हो गया। वहीं लोगों को जलभराव होने से भारी परेशानी हुई।

जानकारी के अनुसार चौमूं के कई गांवों में शनिवार अलसुबह से लेकर 11 बजे तक तेज बारिश हुई। क्षेत्र के गांव कालाडेरा, टांकरड़ा, सामोद, मोरिजा, हाथनोदा, चीथवाड़ी, बासां, महार, कानपुरा सहित आसपास के कई गांवों में तेज बरसात होने के समाचार मिले हैं। बरसात होने से गांवों के खेतों में पानी भर गया। बरसात से सामोद के पास स्थित मालेश्वर धाम पर जोरदार नदी आई और झरने चल गये।

नदी को देखने के लिये आसपास के कई लोग पहुंचे। वहीं मालेश्वर धाम पर भक्तों की भीड़ उमड़ रही है। वहीं सामोद के वीर हनुमान जी मंदिर के पास स्थिति पहाड़ों से नदियों का पानी निकल पड़ा। वहीं शनिवार होने के कारण हनुमानजी मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं वाहन चालकों को भारी परेशानी हुई। दोनों दर्शनीय स्थलों की पहाड़ियों हरियाली की चादर ओढ़े हुए है। और इन पहाडियों के मध्य से बहते बारिश के पानी से झरने बहुत ही मन मोहक लग रहे हैं। श्रद्धालु मालेश्वर धाम में भोले बाबा व सामोद पर्वत पर विराजे वीर हनुमान बालाजी महाराज के दर्शन कर अपने परिवार की खुशहाली की कामना करते है।

तेज बारिश से मकान गिरा, मां-बेटी की दबने से मौत

जुरहरा थाना क्षेत्र के गांव गांवड़ी में तेज बारिश से मकान गिर गया।

कामां, (निसं)। जुरहरा थाना क्षेत्र के गांव गांवड़ी में तेज बारिश होने के कारण भरभराकर मकान गिर गया, जिसमें एक महिला और बच्ची की दबने से मौत हो गई तो वहीं एक व्यक्ति का पैर भी टूट गया और एक बच्ची की गंभीर हालत बताई जा रही है, जिसको अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जुरहरा थाना क्षेत्र के गांव गांवड़ी निवासी साजिद पुत्र फजरू का मकान बारिश होने के कारण भरभराकर गिर गया। मकान के गिरने की आवाज सुनते ही पड़ौस के लोग मौके पर पहुंचे और मलबे में दबे लोगों को बाहर निकाला, जिसमें साजिद की पत्नी जमशीदा और उसकी 8 माह की बच्ची की मलबे में दबने से मौत हो गई तो वहीं साजिद का भी पैर टूट गया एवं उसकी एक बच्ची की हालत गंभीर होने पर साजिद और उसकी बच्ची को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। साजिद के चार बच्चे बताए जा रहे हैं, जिसमें एक बच्ची की हालत गंभीर है और एक बच्चे की मौत हो गई है। घटना की सूचना मिलने पर जुरहरा थाना अधिकारी और कांमा डीएसपी धर्मराज चौधरी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

खेतड़ी में बारिश से आवासीय क्वार्टरों में पानी घुसा

खेतड़ी में मूसलाधार बरसात से सड़कें पानी से लबालब हो गई।

खेतड़ी, (निसं) खेतड़ीनगर में में शनिवार को सुबह हुई डेढ़ घंटे तक बरसात में आवासीय क्वार्टरों में पानी घुस जाने से लोगों का काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। ग्रामीणों ने क्वार्टरों में घुसे पानी को निकालने का काफी प्रयास किया, लेकिन बरसात तेज होने के कारण पानी नहीं निकाला जा सका।

खेतड़ीनगर के आजाद मार्केट निवासी रमेश पांडे ने बताया कि सुबह पांच बजे बरसात का दौर शुरू हो गया था। पहले तो हल्की बरसात चल रही थी, लेकिन छह बजे से बरसात तेज हो गई तथा करीब डेढ़ घंटे तक बरसात होने से चारों ओर पानी जमा होने लग गया। पानी की सही तरीके से निकासी नहीं नहीं के कारण न्यू मार्केट, हाथी पार्क, आजाद मार्केट सहित आसपास के इलाके में आवासीय क्वार्टरो में पानी घुस गया। क्षेत्र में करीब डेढ़ घंटे तक मध्यम बरसात होने से सड़कें दरिया बन गई। बरसात के कारण आसपास के क्षेत्र के निचले इलाकों में पानी घुस गया, जिससे ग्रामीणों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। सिंघाना के ग्रामीणों ने बताया कि इंदिरा कॉलोनी, प्रभात कॉलोनी, मुख्य बाजार स्थित मुस्लिम बस्ती में पानी की सही निकासी नहीं होने के कारण ग्रामीणों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। तहसील रिकॉर्ड के अनुसार 13 एमएम बारिश दर्ज की गई है।

श्रीमाधोपुर सहित आसपास में सात दिन से बारिश जारी

अजीतगढ़ में दो इंच व श्रीमाधोपुर में 16 एमएम बारिश दर्ज

श्रीमाधोपुर में बारिश से गलियां लबालब हो गई।

श्रीमाधोपुर, (निसं)। शहर सहित इलाके में लगातार सात दिन से बारिश का दौर जारी है। बारिश से आमजन की दिनचर्या अस्तव्यस्त हो गई। कई इलाकों में बारिश का पानी भर गया जिससे आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। श्रीमाधोपुर शहर के निचले इलाकों में पंजाबी मंदिर, स्वामियों का मौला, खंडेला बाजार, लोकनाथ का मोहल्ला आदि जगहों पर नदी का रूप लेकर बरसाती पानी बह निकला।

बारिश का पानी भरने के साथ-साथ शहर की गलियां पानी से लबालब हो गई। कई घरों तथा दुकानों में बारिश का पानी घुस गया। वहीं अजीतगढ़ ब्लॉक में भी लगातार अच्छी बारिश हो रही है। अजीतगढ़ के वार्ड 04 ढ़ाणी बागवाली में घरों में बारिश का पानी घुस गया। पानी भरने के साथ ही मकानों में रखा अनाज सहित अन्य सामान खराब हो गया। लोग घरों से बारिश का पानी निकालते हुए नजर आये। वार्ड के बजरंग लाल, सुरेश प्रजापत, सोहनलाल प्रजापत, नरेंद्र प्रजापत के मकानों में काफी पानी घुस गया। तहसीलदार जगदीश प्रसाद बैरवा ने बताया कि श्रीमाधोपुर ब्लॉक में शनिवार को 16 एमएम तथा अजीतगढ़ ब्लॉक में 52 एमएम (दो इंच) बारिश दर्ज की गई।

देवली: कॉलोनियां जलमग्न

देवली, (निसं)। शनिवार को शहर में बारिश का दौर फिर से शुरू हुआ जो चंद घंटे तक चलता रहा यहां रुक रुककर हुई बारिश से शहर के अधिकांश इलाकों के गली-मोहल्लों में पानी भर गया। शनिवार को दोपहर में एक रफ्तार से जमकर बारिश हुई, जो चंद मिनटों बाद धीमी पड़ गई। वहीं इसके बाद हल्की बारिश शुरू हुई जो चंद घंटे तक चलती रही। धीमी और तेज गति से हुई बारिश से सब तरफ पानी भर गया। इस दौरान कई घरों व दुकानों में गंदे नालों का पानी चला गया।

करौली में साढ़े छह इंच बारिश, पांचना बांध के पांच गेट खोले

पांचना बांध के पांच गेट खोलकर पानी की निकासी की जा रही है।

- पांचना बांध के पांच गेट खोलकर 20 हजार क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है
- तेज बारिश के कारण एक पुराना मकान सहित कई जगह पर चार दीवारी भी ढह गई

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय सहित क्षेत्र में शनिवार प्रात: से ही मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हो गया, जिसके चलते करौली शहर को जोड़ने वाले चार प्रमुख मार्गों में से तीन मार्गों में जलभराव हो जाने से लोगों का आवागमन बंद हो गया। वहीं निचली बस्तियों में मकानों एवं दुकानों में पानी भर गया तो वहीं कई सार्वजनिक स्थानों की चार दीवारी ढह गई।

जिला मुख्यालय पर तीन घंटे में साढ़े छह इंच से अधिक बारिश दर्ज की गई है। मूसलाधार बारिश के चलते जिले के सबसे बड़े बांध पांचना में भी पानी की तेजी से आवक हो रही है। बांध में तेजी से जलस्तर बढ़ने के कारण पानी निकासी की मात्रा में वृद्धि की है। बांध के पांच गेट खोलकर 20 हजार क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है। पांचना बांध के गेट नंबर 2, 3, 4, 5 और 6 को खोलकर 20 हजार क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है। जबकि पहले 4000 क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही थी। तेजी से जलस्तर बढ़ने पर करीब 2:30 बजे पानी कि निकासी को बढ़ाकर 8000 क्यूसेक और 3:00 बजे बाद बढ़ाकर पांच गेट खोलकर 16 हजार क्यूसेक कर दिया। बांध के बढ़ते जलस्तर और लगातार तेजी से पानी कि आवक के कारण निकासी की मात्रा में वृद्धि की है। जल संसाधन विभाग के अधिकारी बांध पर नजर बनाए हुए है।

तेज बारिश से कई स्थानों पर जलभराव हो गया। तेज तो कभी धीमी बारिश के चलते प्रात के समय लोगों कि दिनचर्या पूरी तरह प्रभावित हुई। स्कूली बच्चे और अध्यापक बारिश में भीगते और बचाव करते हुए स्कूल पहुंचे। तेज बारिश के कारण सड़कों पर जगह-जगह पानी बहने लगा है। कई कॉलोनी, मोहल्ले के प्रवेश मार्ग पर जलभराव से परेशानी होने लगी। वहीं कई क्षेत्रों में जलभराव होने से मोटरसाइकिल सवारों और टेंपो का आवागमन प्रभावित हो गया। तेज बारिश के कारण वृंदावन मैरिज गार्डन की दीवार गिर गई। मैरिज गार्डन से पास एक पुराना मकान भी ढह गया। इसी प्रकार से सीताबाड़ी में भी एक पाटोर पोश मकान की दीवार गिर गई। हालांकि जान-माल का नुकसान नहीं हुआ।

इसी प्रकार वार्ड नंबर 44 में डांगरिया तालाब के ओवरफ्लो होने के चलते उसकी पाल तोड़कर पानी की निकासी की गई एव माथुर स्टेडियम कि बाउंड्री, पावर हाउस की चारदीवारी ढह गई। करौली-मंडरायल मार्ग स्थित कई कॉलोनी में जलभराव से लोगों में आक्रोश है। आक्रोशित क्षेत्रवासियों ने करौली-मंडरायल मार्ग पर जाम लगाकर प्रदर्शन किया और जल निकासी के मार्ग में हो रहे अतिक्रमणों को हटाने की मांग की। जाम और प्रदर्शन की सूचना पर मंडरायल एसडीएम बृजेश गुप्ता मौके पर पहुंचे और समझाइश कर जाम खुलवाया। साथ ही क्षेत्रवासियों को जल्द समस्या के समाधान का आश्वासन दिया। करौली में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश के दौर के कारण नदी-नाले, बांध-तालाब में बड़ी मात्रा में पानी की आवक हुई है। पानी की आवक के कारण तालाब से लगातार ओवरफ्लो हो रहा है।

आपणां टाबर देश रो भविष्य, इणारो स्वस्थ रेवणो घणो जरूरी : खींवसर

जयपुर/नागौर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने नागौर के खींवसर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में बच्चों को कृमि नाशक दवाई खिलाकर प्रदेशभर में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान की शुरुआत की है।

चिकित्सा मंत्री ने मायड़ भाषा में आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि आपणां टाबर देश रो भविष्य है, भारत ने नवनिर्माण मांय आपणी नुवीं पीढ़ी रो घणो योगदान हुसी, इण वास्ते टाबरां अर किशोर-किशोरयां रे स्वास्थ्य रो ध्यान राखणो घणो जरूरी है। पेट रे मांय कीड़ा सूं मुक्ति भी टाबरां रे स्वास्थ्य वास्ते जरूरी है, इण वास्ते सरकार अगस्त महीनां री 10 तारीख ने गांव-ढाणी तक कृमि मुक्ति दिवस मनावे। कृमि अस्वछता और गदंगी सूं फैले है अर संक्रमित मिट्टी सूं संचारित हुवै और पेट में कीड़ा होवण सूं टाबरां मांय कई तरह की बीमारियां होवण रो डर रैवे। इण वास्ते टाबरां ने साल-छह महीनां सूं एक बार कृमि मुक्ति री दवा जरूर देवणी चाइजै।

स्वास्थ्य मंत्री ने 1 से 19 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों तथा किशोर-किशोरियों को एलबेंडाजॉल खिलाई। उन्होंने कहा कि इस साल कृमि मुक्ति दिवस पर राज्य में 1 वर्ष से 19 वर्ष तक के लगभग 3.33 करोड़ बच्चों व किशोर-किशोरियों को कृमि मुक्ति की दवा खिलाई जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि कृमि संक्रमण बच्चों के शारीरिक विकास, हीमोग्लोबिन स्तर, पोषण और बौद्धिक विकास पर भी हानिकारक प्रभाव डालता है। ऐसे में निश्चित समयांतराल पर कृमि मुक्ति करने से कृमि संक्रमण के फैलाव को रोका जा सकता है।

कार्यक्रम में निदेशक आरसीएच डॉ. सुनीतसिंह राणावत ने बताया कि पेट में कीड़े से निजात दिलाने वाली एल्बेंडाजॉल की दवा प्रदेश के सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों, तकनीकी शिक्षण संस्थानों, मदरसों और आंगनबाड़ी केन्द्रों पर निःशुल्क खिलाई जा रही है। इस अभियान के दौरान छूटे बच्चों को कृमिनाशक दवा खिलाने के लिए 17 अगस्त को मॉपअप दिवस आयोजित किया जाएगा ताकि एक भी बच्चा यह दवा खाने से नहीं छूटे।

कार्यक्रम में खींवसर पंचायत समिति प्रधान सीमा बीड़ियासर, ग्राम पंचायत खींवसर की सरपंच राजू देवी, परियोजना निदेशक, बाल स्वास्थ्य डॉ. प्रदीप चौधरी, संयुक्त निदेशक अजमेर जोन डॉ. सम्पतसिंह जोधा तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राकेश कुमावत सहित अन्य लोगों ने भाग लिया।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने नागौर के खींवसर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में बच्चों को कृमि नाशक दवाई खिलाकर प्रदेशभर में अभियान की शुरुआत की।

- इस साल कृमि मुक्ति दिवस पर राज्य में 1 वर्ष से 19 वर्ष तक के लगभग 3.33 करोड़ बच्चों व किशोर-किशोरियों को कृमि मुक्ति की दवा खिलाई जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है

कांग्रेस निकालेगी तिरंगा यात्रा

जयपुर। जयपुर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष आर आर तिवाडी के नेतृत्व में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 11 अगस्त को शाम 4 बजे सूरजपोल गेट से चांदपोल बाजार तक तिरंगा यात्रा का आयोजन किया जाएगा। तिरंगा यात्रा के लिए सूरजपोल गेट,जयपुर पर सभी कांग्रेस कार्यकर्ता एकत्रित होकर भारत माता की जय के नारे लगाते हुए तिरंगा यात्रा का शुभारंभ करेंगे। यात्रा सूरजपोल गेट से शुरू होकर रामगंज चौपड़, बड़ी चौपड़, छोटी चौपड़ होते हुए चांदपोल गेट के बाहर पहुंचकर सभा में तब्दील होगी। जिसके मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली होंगे। सभा को पूर्व मंत्री बी डी कल्ला सेवादल के प्रदेश अध्यक्ष हेम सिंह शेखावत, ओबीसी विभाग के प्रदेश अध्यक्ष हरसहाय यादव, जयपुर ग्रामीण अध्यक्ष गोपाल मीणा, आमेर विधायक प्रशांत शर्मा संबोधित करेंगे।

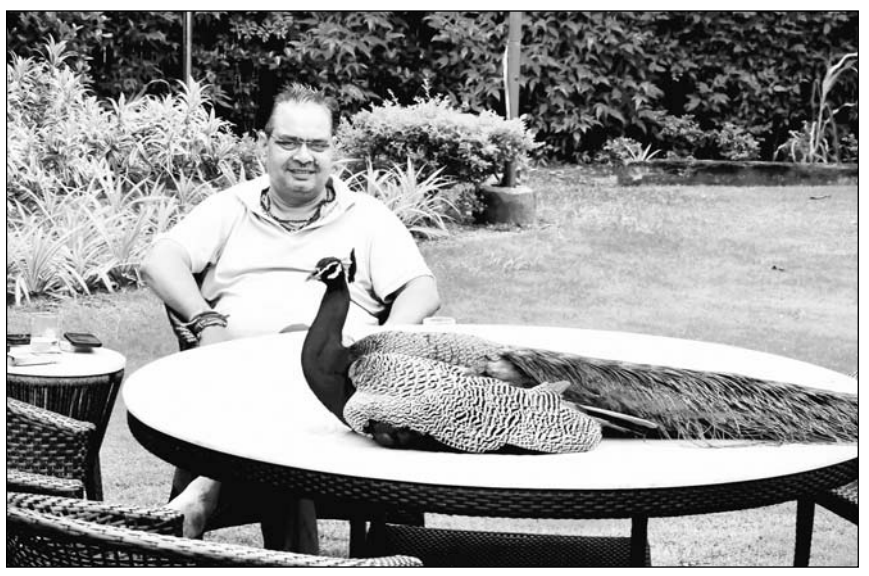

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार सुबह अपने आवास पर भगवान कार्तिकेय के वाहन, पक्षियों के राजा मोर को आहार प्रदान किया। ईश्वर द्वारा सृजित, भगवान श्रीकृष्ण की परछाई के रूप में विख्यात पक्षी मोर सौंदर्य, प्रेम एवं स्नेह का प्रतीक है। इनकी सेवा स्वयं में आराधना है, जो दैवीय कृपा से कम नहीं है।

लाखों रुपए के जेवर व नकदी लेकर नेपाली नौकर दम्पती फरार

जयपुर। वैशाली नगर थाना इलाके में पिता-पुत्र को नशीली कॉफी पिलाकर नेपाली नौकर दम्पती घर से लाखों रुपए के जेवरात व नकदी लेकर फरार हो गए। घटना का पता मंदिर से महिला के घर लौटने पर लगा। इस पर पीड़िता ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पर मौके पर पहुंच कर पुलिस ने साक्ष्य लेकर जांच शुरू कर दी है। पिता-पुत्र का एक प्राइवेट अस्पताल में उपचार जारी है।

पुलिस ने बताया कि गोम डिफेंस कॉलोनी निवासी कृष्ण कुमार और उसके बेटा रोहित को शुक्रवार शाम को नौकर ने पीने को कॉफी दी। कॉफी पीने के बाद दोनों बेहोश हो गए। इसके बाद नेपाली नौकर दम्पती ने बेडरुम में रखी अलमारी का ताला तोड़कर उसमें रखी नकदी व जेवरात निकाल कर ले गए। घटना का पता मंदिर से कृष्ण कुमार की पत्नी के घर लौटने पर लगा। इस पर पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने नौकर दम्पती की तलाश शुरू कर दी है। थानाधिकारी रविंद्र सिंह ने बताया कि कृष्ण कुमार इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से रिटायर है और उसका बेटा प्राइवेट काम करता है। घटना शुक्रवार शाम करीब सात बजे की है। घटना के समय कृष्ण कुमार की पत्नी मंदिर चली गई थी। कृष्ण कुमार ने नौकर दम्पति को कॉफी लाने को बोला। नौकर दम्पती ने कॉफी लाकर दी। कृष्ण कुमार और उसके बेटे ने साथ बैठकर कॉफी पी। कॉफी पीने के बाद दोनों बेहोश हो गए।

- आरोपियों ने पिता-पुत्र को नशीली कॉफी पिलाकर बेहाश किया

इसके बाद नौकर दम्पती ने अच्छे से घर को खंगाला और बेडरूम में रखी अलमारी से लाखों रुपए के जेवरात व नकदी ले गए। फिलहाल घर से गए सामान की पूरी जानकारी नहीं मिल पाई है। कृष्ण कुमार और उसके बेटे का एक निजी अस्पताल में उपचार जारी है। पूछताछ में सामने आया कि नौकर दंपति को 5 से 10 दिन पहले ही काम पर रखा था और उनका वेरिफिकेशन भी नहीं करवाया था। नौकर ने अपना नाम सुभाष और पत्नी का नाम भावना बताया था। पुलिस को घटना की जानकारी करीब साढ़े आठ बजे मिली।

थानाधिकारी ने बताया कि इस पूरे मामले घटना स्थल और उसके आस-पास के इलाकों में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज मिली है। इसमें नौकर दम्पती नजर आ रहे है। उनकी खोजबीन में आधा दर्जन से अधिक टीमों को लगाया गया है। शहर भर में नाकाबंदी भी करवाई गई, लेकिन अभी तक नौकर दम्पती का पता नहीं चल पाया है। उम्मीद है जल्द ही नौकर दम्पती को पकड़ लिया जाएगा।

जयपुर की 50 संस्थायें हर घर तिरंगा अभियान में जुटीं

जयपुर। हर घर तिरंगा अभियान में जयपुर के हर घर में सम्पर्क किया जायेगा। ये निर्णय आज संस्कृति युवा संस्था की और से आयोजित तिरंगा गोष्ठी में हुआ।

इस अवसर पर 50 से अधिक सामाजिक, नागरिक संस्थाओं ने निर्णय लिया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के देशभर में चलाये जा रहे हर घर तिरंगा अभियान में घर घर जाकर आमजन को इस अभियान की जानकारी दी जायेगी तथा 13 अगस्त से 15 अगस्त तक घरों पर दफ्तरों पर तिरंगा फहराने और सोशल मीडिया अकाउंट की डीपी में अपनी फोटो के साथ तिरंगे की फोटो लगाने की अपील की जायेगी।

इस अवसर पर आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुये भाजपा नेता एवं संस्कृति युवा संस्था के अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान पर हम सबको हर घर तिरंगा पहुंचाना है और आमजन से अपील करनी है कि घर-घर तिरंगा लगाया जाये। साथ ही सभी गैर सरकारी कार्यालयों में भी तिरंगा झंडा लगाकर देश के प्रति अपनी भावना प्रदर्शित करने का दिन है। मिश्रा ने इस अवसर पर कहा है कि देश की आजादी के लिये लाखो लोगो ने अपनी कुर्बानी दी, उनको नमन कर हम सबका दायित्व बनता है कि तिरंगे के स्वाभिमान को बढ़ाया जाये।

'युवा मोर्चा सभी विधानसभाओं में निकालेगा तिरंगा यात्रा'

जयपुर। भारतीय जनता युवा मोर्चा राजस्थान के तत्वावधान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी "हर घर तिरंगा अभियान" के तहत प्रदेशभर में तिरंगा यात्रा एवं तिरंगा बाईक रैली का आयोजन करेगा। भाजयुमो प्रदेशाध्यक्ष अंकित गुर्जर चेची ने आज भाजपा प्रदेश कार्यालय में अभियान के तहत तिरंगा वितरण किया। इस दौरान चेची ने कहा कि भाजयुमो प्रत्येक विधानसभा स्तर पर तिरंगा रैलियों का आयोजन करेगा तथा शहीदों के स्मारकों के साथ महापुरूषों की प्रतिमाओं को अभिचान चलाकर स्वच्छ करेगा।

भाजयुमो प्रदेशाध्यक्ष अंकित गुर्जर चेची ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के 112वें संस्करण में 'हर घर तिरंगा अभियान' से जुड़ने का आव्हान किया था।

श्री प्रेमभाया मंदिर में पार्थिव शिवलिंग पूजन आज

जयपुर। श्री प्रेमभाया मंडल समिति की ओर से शिवदासपुरा स्थित मंदिर श्री प्रेमभाया सरकार, हरियुगल विहार में 11 अगस्त को सामूहिक पार्थिव शिवलिंग पूजन किया जाएगा। समिति के अध्यक्ष विजय किशोर शर्मा ने बताया कि सर्व समाज के करीब सवा सौ जोडे पूजन करेंगे। इस अवसर पर श्री प्रेमभाया सरकार के वन विहार की झांकी सजाई जाएगी। श्री युगलेश्वर महादेव का रुद्री पाठ से अभिषेक किया जाएगा। आचार्य पं. अश्विनी चतुर्वेदी ने बताया कि प्रत्येक यजमान जोड़ा रूद्राभिषेक करेगा।

डिग्गी कल्याण जी की 59वीं लक्खी पदयात्रा आज

जयपुर। डिग्गी कल्याण जी की 59वीं लक्खी पदयात्रा रविवार सुबह नौ बजे चौड़ा रास्ता स्थित ताडक्रेश्वर महादेव मंदिर से रवाना होगी। बीती रात से ही जयपुर के आसपास के गांवों से पदयात्री जयपुर के लिए रवाना होना शुरू हो गए। रविवार तड़के गोविंद देवजी के दर्शन कर पदयात्री चौड़ा रास्ता के बरामदों में डेरा डाल देंगे। सुबह हजारों की संख्या में पदयात्री कल्याण धणी के जयकारे लगाते हुए डिग्गी के लिए रवाना होंगे। लक्खी पदयात्रा के संचालक श्रीजी शर्मा ने बताया कि उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा, विधायक बालमुकुंदाचार्य, संत-महंत सहित अनेक विशिष्ट लोग मुख्य ध्वज का पूजन कर पदयात्रा को रवाना करेंगे। ध्वज की छत्रछाया में पदयात्री कनक दंडवत करते हुए मोतीडूंगरी गणेशजी मंदिर के दर्शन कर डिग्गी के लिए प्रस्थान करेंगे। पदयात्रियों के लिए चौड़ा रास्ता से सांगानेर तक सैंकड़ों स्थानों पर भंडारे लगाए जाएंगे। जहां फल, शर्बत, शिकंजी, छाछ, लस्सी, कचोरी, पकौड़ी, मिठाई, सब्जी-पूड़ी सहित खाने-पीने का सभी सामान होगा। विभिन्न संस्थाएं बड़े स्तर पर भंडारे लगाएंगी।

पदयात्री 11 अगस्त को मदरामपुरा, 12 को हरसूलिया, 13 को फागी, 14 को चौसला में रात्रि विश्राम करते हुए स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को डिग्गी मालपुरा के कल्याणजी मंदिर पर पहुंचेंगे। जहां भगवान श्री कल्याण को ध्वज अर्पित करने के बाद गंगाजल से भगवान का अभिषेक किया जाएगा। इस बार पदयात्रा में पांच से छह लाख श्रद्धालुओं के शामिल होने का अनुमान है। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश के श्रद्धालु भी पदयात्रा में शामिल होते हैं।

डबल शंकर महादेव कावड़ यात्रा आज

जयपुर। बाबा हरीशचंद्र मार्ग स्थित डबल शंकर महादेव मंदिर में रविवार को हजारों श्रद्धालु गंगा और गलता तीर्थ से लाये हुए जल से शिवलिंग का अभिषेक और पूजा अर्चना करेंगे। आयोजन समिति के संयोजक शरद खंडेलवाल और पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल ने बताया कि कावड़ यात्रा प्रातः सात बजे गलता कुंड से शुरू होकर गलता गेट, सूरजपोल गेट, रामगंजबाजार बड़ी चौपड़ होते हुए चौड़ा रास्ता स्थित द्वारकाधीश मंदिर पहुंचेगी, जहां से 1100 महिलाएं कलश लेकर बैंड बाजों के साथ डबल शंकर महादेव मंदिर आएंगी। इसके बाद भगवान शिव का अभिषेक किया जायेगा।

दोषमुक्त होने पर कंडक्टर का सेवा समाप्ति आदेश रद्द

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने क्रिमिनल केस में राजीनामे के आधार पर दोषमुक्त होने पर रोडवेज कंडक्टर का सेवा समाप्ति आदेश रद्द कर दिया है। इसके साथ ही मामले के अनुशासनात्मक अधिकारी को निर्देश दिया है कि वह याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका देते हुए उसकी दोषमुक्ति के आदेश को ध्यान में रख पुनः नियुक्ति पर विचार करें। जस्टिस अनूप ढंड ने यह निर्देश ओमप्रकाश यादव की याचिका पर दिया।

मामले से जुड़े अधिवक्ता सुनील कुमार सिंगोदिया ने बताया कि प्रार्थी को एक क्रिमिनल केस में दंडित करने पर उसकी सेवाएं खत्म कर दी थीं। इस आदेश को उसने एडीजे किशनगढ़वास के यहां पर अपील के जरिए चुनौती दी, लेकिन अपीलीय कोर्ट ने भी प्रार्थी को दोषी माना। इसे हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए कहा कि उसके व परिवादी के पक्ष में राजीनामा होने पर उसे 5 मई 2022 के आदेश से दोषमुक्त कर दिया है। उसने दोषमुक्त होने पर निगम के समक्ष सेवा खत्म करने वाले आदेश को रद्द कर उसे सेवा में बहाल करने का आग्रह किया, लेकिन निगम का कहना है कि सेवा खत्म करने वाले आदेश को किसी कोर्ट ने रद्द नहीं किया है, इसलिए उसे बहाल नहीं कर सकते। प्रार्थी ने कहा कि निगम की जांच कार्रवाई के दौरान वह न्यायिक अभिरक्षा में था और इसके चलते उसे अपना पक्ष रखने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला। इसलिए उसका सेवा खत्म करने वाला आदेश रद्द कर उसे बहाल किया जाए।

- अदालत ने अनुशासनात्मक अधिकारी को निर्देश दिये हैं कि याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका देते हुए उसकी पुनः नियुक्ति पर विचार करें

आई.आर.एस. अधिकारी के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का मामला दर्ज

जयपुर। अहमदाबाद के आईआरएस अधिकारी के खिलाफ पत्नी ने शादी के डेढ़ साल बाद जयपुर में दहेज और मारपीट का केस दर्ज करवाया है। 16 जुलाई को पीड़िता पूरवा बागड़ी ने महिला थाना पश्चिम में शिकायत दी थी। मेडिकल जांच करने के बाद पुलिस ने आईआरएस अधिकारी चिराग झग्वाल (असिस्टेंट कमिश्नर आयकर विभाग अहमदाबाद) के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। पीड़िता पूरवा ने बताया कि 13 मई 2022 को उनकी सगाई चिराग के साथ होटल रामबाग पैलेस में हुई थी।

परिवार की स्थित इतनी अच्छी नहीं थी, चिराग के परिवार की इच्छा अनुसार रिश्तेदारों से पैसा लेकर रामबाग पैलेस में सगाई करवाई। इस दौरान 5 लाख नगद, डायमंड की रिंग, चांदी की रिंग, चांदी का नारियल, चांदी का कलश सहित सगाई का कार्यक्रम किया गया। अक्टूबर 2022 के पहले सप्ताह में चिराग के परिवार ने शादी में एक वॉल्वो या फॉरच्यूनर कार, 1 करोड़ रुपए नगद लेने की मांग की। इस पर पीड़िता के माता-पिता ने चिराग के पिता को फोन से सम्पर्क किया। 7 अक्टूबर 2022 को उनके जयपुर के घनश्याम विहार बजरी मंडी स्थित निर्माणाधीन मकान पर मिलने गए। यहां पीड़िता के माता-पिता ने कहा कि आपकी मांग के अनुमार गाड़ी और एक करोड़ रुपए देने की हमारी हैसियत नहीं है। इस पर चिराग के माता-पिता महेश चन्द्र और कविता उर्फ कमला ने नाराज होकर कहा कि हमारा लड़का आईआरएस है। आयकर विभाग में है। इस दौरान कई मांगों पर सहमति बनी। 2 दिसम्बर 2022 को जयपुर के अजमेर रोड स्थित द पैलेस नरसिंहपुरा में शादी का कार्यक्रम आयोजित हुआ। बारात के स्वागत के समय 51 हजार रुपए नगद चिराग को दिए गए। शादी के दौरान डेढ़ लाख रुपए, कन्यादान में 7 लाख से ज्यादा दिए गए। इस दौरान चिराग, उसका भाई मोहित और माता-पिता नाराज हो गए। आपने हमारी समाज में बेइज्जती कर दी। हमारी हैसियत और मांग के अनुसार कैश राशि नहीं दी है। धमकी देने लगे की अब दुल्हन की विदाई नहीं होगी।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि युवती की शिकायत पर एफआईआर दर्ज की गई है। पीड़ित पक्ष के परिवार के सभी सदस्यों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। एफआईआर के हिसाब से आरोपी पक्ष को भी पूछताछ के लिए बुलाया जा रहा है। मामले के हर पहलू पर जांच हो रही है।

विद्यार्थियों ने खेल-खेल में सीखा योगा

जयपुर । आर्ट ऑफ लिविंग जयपुर के स्वयंसेवकों ने केंद्रीय विद्यालय मानसरोवर के विद्यार्थियों के लिए हेल्थ एंड हैप्पीनेस शिविर का अयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान आर्ट ऑफ़ लिविंग की प्रशिक्षक रुचि शर्मा और अन्य स्वयंसेवकों ने विद्यार्थियों को योग, प्रणायाम और मेडिटेशन का महत्व बताया। विद्यार्थियों ने जाना कि कैसे वह योग के द्वारा अपने अंदर निरंतर सहजता और ख़ुशी को महसूस कर सकते हैं।

टूटी सड़कों के कारण सीकर रोड पर भारी ट्रेफिक जाम, आमजन परेशान

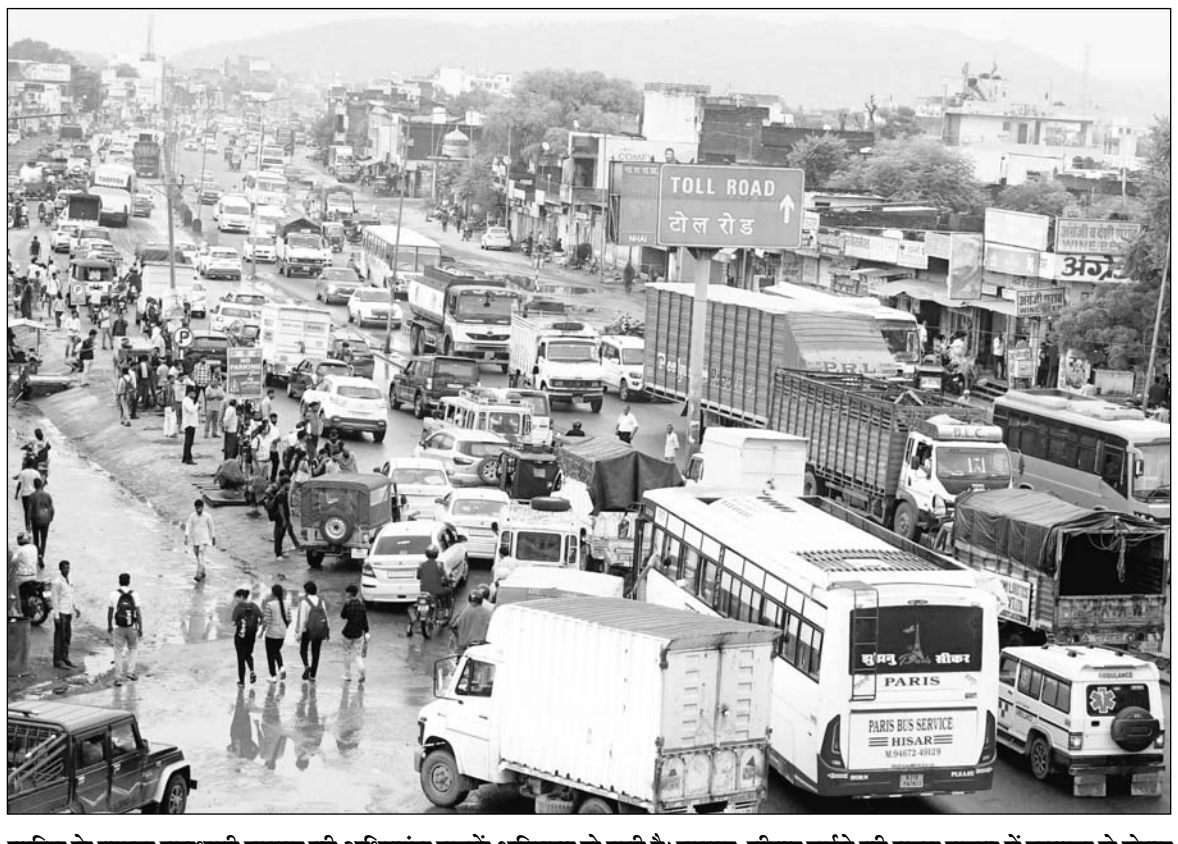

बारिश के कारण राजधानी जयपुर की अधिकांश सड़कें क्षतिग्रस्त हो गयी है। जयपुर-सीकर हाईवे की मुख्य सड़क में हरमाड़ा से लेकर 14 नंबर बाईपास तक जगह-जगह खड्ढे हो गए हैं। इस कारण यहां से गुजरने वाले वाहन दिनभर हिचकोले खाते हुए धीरे-धीरे रेंगते हैं। सड़क इतनी बुरी तरह जर्जर है कि वाहन चालक मजबूरन सिंगल लाइन में गाड़ियां चलाते हैं, ऐसे में यहां दिनभर भारी ट्रेफिक जाम की स्थिति बनी हुई है। हरमाड़ा थाने से लेकर वी.के.आई. चौराहे तक अधिकांश समय यातायात जाम की समस्या रहने से लोगों को परेशानियां झेलनी पड़ रही है। फोटो : राष्ट्रदूत

ग्रेटर निगम ने शुरू किया सामुदायिक कम्पोस्ट पिट

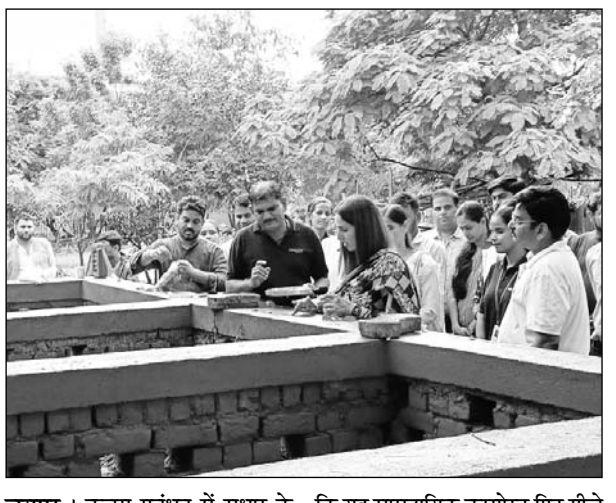

जयपुर । कचरा प्रबंधन में सुधार के उद्देश्य से नगर निगम ग्रेटर जयपुर ने वार्ड134 में एक सामुदायिक कम्पोस्ट पिट का शुभारंभ किया है। यह पहल गीले कचरे के प्रभावी निपटान के लिए की गई है और स्थानीय निवासियों की सक्रिय भागीदारी से इसे अंजाम दिया गया है।

इस आयोजन की अध्यक्षता मालवीय नगर जोन उपायुक्त अर्शदीप बराड़ ने की, जिन्होंने रिबन काटकर पिट का उद्घाटन किया और इसके बाद पिट का पूजन भी किया। यह कदम नगर निगम की कचरा प्रबंधन समस्याओं का समाधान ढूंढने और नवाचारी उपायों को अपनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उपायुक्त अर्शदीप बराड़ ने बताया कि यह सामुदायिक कम्पोस्ट पिट गीले कचरे के निपटान में सहायक होगा और इसे घर पर कम्पोस्टिंग प्रथाओं के साथ मिलाकर उपयोग किया जाएगा। स्थानीय निवासियों ने भी इन प्रथाओं को अपनाया है, जो स्थायी कचरा प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

इस पिट के शुभारंभ से वॉर्ड में कचरा प्रबंधन की प्रक्रिया में सुधार होगा, पर्यावरणीय प्रभाव कम होगा, और एक साफ-सुथरे और हरित वातावरण को बनाए रखने में मदद मिलेगी।

इस अवसर पर निगम टीम, निगम पीआईयू टीम, फिनलूप टीम, वीकेयर टीम और विकास समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

मालपुरा में चार साल बाद परम्परागत मार्ग से निकलेगी शिव कांवड़ यात्रा

परम्परागत मार्ग से कांवड़ यात्रा निकालने की प्रशासन ने अनुमति दी, डीजे बजाने व आपत्तिजनक नारों पर प्रतिबंध रहेगा

मालपुरा, (निसं)। प्रदेश में सरकार बदलने के साथ ही सरकारी आदेश व प्रशासन का रवैया बदल गया, केबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने अपना वादा पूरा किया है। सरकार के समक्ष सनातन धर्म की मजबूती से पैरवी की गई व मालपुरावासियों की जनभावनाओं से अवगत करवाने व सभी पहलुओं पर गहन मंथन के बाद आखिरकार चार साल बाद परम्परागत मार्ग दूदू-छाण स्टेट हाईवे से ही मालपुरा में कांवड़ यात्रा के आयोजन की उपखण्ड मजिस्ट्रेट कपिल शर्मा ने शिव कांवड़ यात्रा आयोजन समिति को शनिवार को सशर्त प्रशासनिक स्वीकृति जारी कर दी।

मालपुरा में कांवड़ यात्रा के आयोजन को लेकर एडीएम सुरेश चौधरी, उपखण्ड मजिस्ट्रेट कपिल शर्मा, एएसपी रामकुमार कस्वा, डीवाईएसपी महेन्द्र मीणा ने प्रेस वार्ता की।

- एक हजार से अधिक जवान व अधिकारी तैनात रहेंगे, एक दर्जन ड्रोन व सीसीटीवी से होगी निगरानी

शनिवार की शाम एसडीएम कार्यालय में उपखण्ड मजिस्ट्रेट कपिल शर्मा द्वारा जारी की गई प्रेस वार्ता में मौजूद एडीएम सुरेश चौधरी ने बताया कि 11 अगस्त को प्रात: 8 बजे केदारनाथ मंदिर से कांवड़ियों का दल बीसलपुर के लिये रवाना होगा। जहां से पवित्र जल की कांवड़ भरकर कांवड़ यात्रा मालपुरा के लिये रवाना होगी। गोकर्णेश्वर महादेव घाट पर तैनात पुलिस के अधिकारी व जाप्ता कांवड़ यात्रा आयोजन समिति की ओर से उपलब्ध करवाई गई कांवड़ियों के रजिस्ट्रेशन सूची के आधार पर सभी कांवड़ियों व उनकी व्यवस्थाओं में लगने वाली टीम को प्रशासन की ओर से अधिकृत आई कार्ड जारी करेंगे। एडीएम सुरेश चौधरी ने बताया कि बिसलपुर से ही कड़ी पुलिस सुरक्षा में टोडा, मोर, टोरडी व अम्बापुरा होते हुये 12 अगस्त की शाम चार बजे मालपुरा पहुंचने वाली कांवड़ यात्रा में शामिल सभी आई कार्डधारियों को आरएएसी लाइन के पास एकत्रित कर कड़े पुलिस सुरक्षा घेरे में दूदू-छाण स्टेट हाईवे के ट्रक स्टेण्ड, डेयरी चौराहा, व्यास सर्किल, नवीन मंडी, सुभाष सर्किल होते हुये केदारनाथ मंदिर पहुंचकर कांवड़ियों द्वारा भगवान शिव का जलाभिषेक किया जायेगा। यात्रा आयोजन समिति की ओर से दिये प्रार्थना पत्र में जिस मार्ग से यात्रा की स्वीकृति मांगी गई थी उसी मार्ग से शांति व कानून व्यवस्था को मध्य नजर रखते हुये सशर्त अनुमति दी गई है। एडीएम सुरेश चौधरी ने बताया कि यात्रा में कांवड़ियों के अतिरिक्त भीड़ के शामिल होने, डीजे बजाने, आपत्तिजनक व भडकाऊ नारे लगाने, निर्धारित मार्ग से अतिरिक्त मार्ग पर जाने, मार्ग में स्वागत पर प्रतिबंध रहेगा। कांवड़ यात्रा मार्ग को कांवड़ कोरीडोर में तब्दील कर वाहनों व आमजन के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा।

एडीएम सुरेश चौधरी ने बताया कि यात्रा मार्ग पर एक दर्जन ड्रोन व पांच दर्जन सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जायेगी। जिनका कन्ट्रोल रूम थानाधिकारी कक्ष में होगा। कांवड़ मार्ग पर चार स्थानों पर बडी स्क्रीन एलईडी लगाई जायेगी जिस पर कांवड़ यात्रा का तथा सुरक्षा व्यवस्था का प्रसारण रहेगा। यात्रा में कांवड़ियों को प्रतिबंधित व धारदार हथियार की अनुमति नहीं होगी। 11 व 12 अगस्त को मालपुरा शहर में आरएसी, एसटीएफ, दंगारोधक, वज्र वाहन सहित पुलिस जवानों की पांच कम्पनियों के साथ एक हजार से अधिक अधिकारी व जवानों का जाप्ता चप्पे-चप्पे पर तैनात रहेगा। एडीएम सुरेश चौधरी ने बताया कि यात्रा मार्ग पर सड़क किनारे मकानों की छतों पर हथियारों से लैश होकर जवान तैनात रहेंगे। कांवड़ मार्ग पर सभी मकानों में पुलिस ने सर्च अभियान चलाकर जांच की गई है। मार्ग से सड़क किनारे पड़े पत्थर, ईंट इत्यादि निर्माण सामग्री को हटा दिया गया है।

शिव कांवड़ यात्रा समिति व आयोजकों ने बताया कि चार साल बाद आयोजित कांवड़ यात्रा में केबिनेट मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, विधायक बाबा बालकनाथ, विधायक बालमुकन्दाचार्य, साध्वी समदर्शी, महंत रामशरण दास सहित अन्य संत शामिल होंगे।

परीक्षा में डमी अभ्यर्थी बैठाने वाला मुख्य आरोपी अभ्यर्थी गिरफ्तार

राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक हिंदी परीक्षा-2022

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक हिंदी परीक्षा-2022 में अभ्यर्थी द्वारा अपने स्थान पर डमी अभ्यर्थी बैठाने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। अजमेर पुलिस गिरफ्तार आरोपी अभ्यर्थी को अदालत में पेश करेगी। पुलिस जांच में सामने आया है कि डमी अभ्यर्थी आरोपी का दोस्त था और दोनों के बीच पांच लाख में परीक्षा देने का सौदा हुआ था। आरोपी ने एडमिट कार्ड में दोस्त की फोटो लगाकर परीक्षा में बैठाया। पूर्व में पुलिस डमी अभ्यर्थी को पकड़कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज चुकी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

पुलिस गिरफ्त में मुख्य आरोपी अभ्यर्थी।

सहायक उप निरीक्षक प्रभु लाल ने बताया कि 10 जनवरी को सिविल लाइन थाने में राजस्थान लोक सेवा आयोग के सहायक सचिव सायरमल कुमार की ओर से परीक्षा में डमी अभ्यर्थी बैठाने का मुकदमा दर्ज कराया गया था। सहायक सचिव द्वारा शिकायत दी गई थी कि जिला सांचौर निवासी अभ्यर्थी ओमप्रकाश पुत्र बाबूराम खिलेरी ने वरिष्ठ अध्यापक हिंदी परीक्षा में प्रवेश पत्र में छेड़छाड़ कर अपने स्थान पर डमी अभ्यर्थी सांचौर निवासी भैराराम बिश्नोई से परीक्षा दिलवाई थी। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज किया था मामले की जांच अभय कमांड एडिशनल एसपी संजय शर्मा को दी गई थी।

डमी अभ्यर्थी आरोपी का दोस्त :-सहायक उप निरीक्षक प्रभुलाल ने बताया कि मामले में मुख्य आरोपी अभ्यर्थी ओमप्रकाश फरार चल रहा था जबकि डमी अभ्यर्थी भैराराम बिश्नोई को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, ओमप्रकाश व भैराराम दोस्त है। पुलिस गिरफ्तार डमी अभ्यर्थी को पूछताछ के बाद अदालत में पेश किया, जहां से अदालत ने न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। साथ ही भेराराम के खिलाफ चालान भी पेश कर दिया गया है।

- डमी अभ्यर्थी आरोपी का दोस्त था और दोनों के बीच पांच लाख में परीक्षा देने का सौदा हुआ था

जांच अधिकारी प्रभुलाल ने बताया कि मामले में फरार चल रहे आरोपी अभ्यर्थी ओमप्रकाश पुत्र बाबूराम को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ओमप्रकाश बार-बार परीक्षा में फेल हो रहा था इसके बाद डमी अभ्यर्थी भेराराम के द्वारा आरोपी से कहा गया कि वह बार-बार फेल हो रहा है इस बार उसकी जगह एग्जाम दे देगा क्या। बाद में दोनों के बीच सौदा होने पर आरोपी अभ्यर्थी ओमप्रकाश ने डमी अभ्यर्थी के रूप में परीक्षा दिलवाई। जांच अधिकारी प्रभु लाल ने बताया कि ओमप्रकाश के द्वारा डमी अभ्यर्थी भैराराम को जोधपुर में 5 लाख रुपए दिए गए थे। पुलिस के द्वारा जहां पैसे दिए गए वहां की मौका तस्दीक भी कर ली गई है। डमी अभ्यर्थी ने मुख्य आरोपी अभ्यर्थी ओमप्रकाश के एडमिट कार्ड में फोटो बदलकर परीक्षा दी थी। पुलिस ने मामले में आरोपी अभ्यर्थी को आज कोर्ट में पेश कर अनुसंधान किया जाएगा। जांच में यह बात सामने आई थी भैराराम 2022 में हिंदी लेक्चरर परीक्षा पास कर चुका है, जिसमें वह राजस्थान में टॉपर रहा था। पैसों के लालच में उसने दोस्त के स्थान पर डमी अभ्यर्थी के रूप में परीक्षा दी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

निवाई में मूसलाधार बारिश से कॉलोनियां जलमग्न

सवा पांच इंच बरसात दर्ज, सरकारी कार्यालय परिसर तालाब बने

रजवास मुख्य सड़क मार्ग में भरे हुए पानी में से गुजरते हुए छात्र-छात्राएं।

निवाई, (निसं)। उपखंड मुख्यालय सहित ग्रामीण क्षेत्र में मूसलाधार बारिश होने से कई कॉलोनियों व सरकारी कार्यालयों सहित जगह-जगह पानी भर गया। शनिवार की सुबह शहर में बूंदाबांदी के साथ बरसात का दौर शुरू हुआ। सुबह करीब 10 बजे मूसलाधार बारिश का दौर शुरू हुआ जो करीब पौने 2 घंटे तक चला। इस दौरान करीब 136 एमएम (सवा पांच इंच) बारिश दर्ज की गई।

मूसलाधार बारिश से शहर के पश्चिम में स्थित रक्तांचल पर्वत के पीछे बोरंगी में एनिकट एवं आसजी का बंधा भरकर ओवरफ्लो हो गया जिससे कोशी गंगा में नदी की तरह पानी बहने लगा। तेज बारिश के चलते पूरे रक्तांचल पर्वत पर तेज गति से झरने बहने लगे। इधर बरसाती पानी से भरकुआ तालाब पूरी तरह लबालब हो गया। मूसलाधार बारिश के चलते एसडीएम कार्यालय, तहसील कार्यालय, विद्युत विभाग के सहायक व अधिशाषी अभियंता कार्यालय, डाक बंगला, दतवास पुलिस थाना परिसर सहित कई सरकारी कार्यालय परिसर में बरसाती पानी भर गया जिससे सभी कार्यालय तालाब नजर आने लगे। बाईपास पर स्थित अण्डर पास में सडक पर भरे हुए बरसाती पानी को जेसीबी से नाली बनाकर निकलवाया गया। इधर रजवास ग्राम पंचायत मुख्यालय पर मुख्य सड़क मार्ग पर घुटनों तक पानी बहता रहा जिसमें से स्कूली छात्र-छात्राओं को पानी में से होकर संभलते हुए निकलना पड़ा। जल संसाधन विभाग के सहायक अभियंता कानाराम गुर्जर ने बताया कि शनिवार की शाम 5 बजे तक 136 एमएम बारिश दर्ज की गई है।

दिव्यांग की तालाब में गिरने से मौत

मसूदा, (निसं)। मसूदा उपखंड के ग्राम किराप में शनिवार को तालाब से पानी भरने गए दिव्यांग युवक के तालाब मे गिर जाने से मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार ग्राम किराप निवासी बबलू उर्फ अमरचंद पुत्र मोतीलाल दमामी (30) वर्ष शनिवार को खेत पर कार्य कर रहा था। जिसके दौरान फसल में दवा का छिड़काव करने के लिए पास ही स्थित मनाघाटी तालाब से पानी लेने के लिए गया था। पानी भरने के दौरान उसका संतुलन बिगड़ जाने से वह तालाब में गिर गया। तैरना नहीं आने के साथ साथ तालाब में लबालब पानी भरा होने से वह उसमें डूब गया। जिसकी जानकारी मिलने पर परिजन एवं ग्रामीण मौके पर पहुंचे एवं घटना की सूचना प्रशासन एवं पुलिस को दी। जिस पर तहसीलदार श्यामलाल आमेटा व पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। मौके पर मानाघाटी के काफी गहरी होने से ब्यावर सिविल डिफेंस की टीम को बुलाया गया।

दो गिरफ्तार

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी मामले में शनिवार को दो आरोपियों को गिरफ्तार कर एक पखवाड़े पूर्व शहर से चोरी हुई मोटरसाइकिल को बरामद किया। थाना अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह झाझड़िया ने बताया कि वार्ड 11 से मोटरसाइकिल चोरी का मामला दर्ज हुआ था। पुलिस को गश्त के दौरान मोटरसाइकिल चोरी मामले में आरोपी बजरंग पुत्र जगदीश रेगर तथा किरसन पुत्र रामदयाल जाट को गिरफ्तार किया है।

फांसी पर लटका मिला बालक

हिण्डौन सिटी, (निसं)। हिण्डौन के बड़कापुरा में स्थित एक घर में 15 वर्षीय किशोर का शव फांसी पर लटका हुए मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची हिण्डौन नई मंडी थाना पुलिस ने मृतक के शव को हिण्डौन के जिला अस्पताल की मोर्चरी पहुंचाया, जहां पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। परिजनों ने किशोर की हत्या का आरोप लगाया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार हिण्डौन के बड़कापुरा निवासी विकास जाटव का शव उसी के घर में फांसी के फंदे से लटका हुआ मिला। सूचना पर पहुंचे परिजनों ने हिण्डौन नई मंडी थाना पुलिस को जानकारी दी, जिसके बाद नई मंडी थाना अधिकारी रामकिशन यादव मौके पर पहुंचे तथा शव को नीचे उतार कर हिण्डौन के जिला अस्पताल की मोर्चरी पहुंचाया। चिकित्सकों की टीम ने पोस्टमार्टम का शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। परिजनों ने किशोर की हत्या का आरोप लगाते हुए नामजद मुकदमा दर्ज कराया है।

दीया कुमारी, प्रेमचंद व देवनानी ने अमृतलाल मीणा को श्रद्धांजलि दी

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने दिवंगत विधायक सलूंबर अमृत लाल मीणा के निजी आवास सलूंबर में लालपुरिया सेमारी गांव जाकर उनके चित्र पर पुष्प चढ़ाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। विधानसभा अध्यक्ष ने स्वर्गीय मीणा के राजनीतिक और सामाजिक योगदान और क्षेत्र में उनके प्रेरणादायक नेतृत्व की सराहना की। देवनानी ने कहा कि स्वर्गीय मीणा जमीन से जुड़े नेता थे। स्थानीय लोगों में उनकी अच्छी छवि थी। उनके निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है। उन्होंने अमृत लाल मीणा के पुत्र अविनाश कपिल उनकी पत्नी शांता देवी और पुत्री प्रियंका तथा उनके परिवारजन के प्रति अपनी संवेदनाएँ व्यक्त की और उन्हें सांत्वना दी। इस दौरान ग्रामवासियों और परिजनों ने देवनानी को स्थानीय महाविद्यालय का नाम दिवंगत विधायक मीणा के नाम से करने का अनुरोध किया। इस संबंध में स्थानीय नागरिकों ने देवनानी को अनुरोध पत्र भी सौंपा। देवनानी की लालपुरिया यात्रा दौरान उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा व क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने अमृतलाल मीणा को पुष्पाजंलि अर्पित की।

वहीं उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी और प्रेमचंद बैरवा शनिवार को सलूंबर क्षेत्र की यात्रा पर रहे। इस दौरान वे सलूंबर के दिवंगत विधायक अमृतलाल मीणा के पैतृक गांव लालपुरिया स्थित निवास पहुंचे और यहां पर मीणा की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान उन्होंने मीणा के परिजनों से भी मिलकर ढांढस बंधाया। इस अवसर पर, उपमुख्यमंत्री ने मीणा के योगदान और उनकी इस जनजाति अंचल के विकास में दिए गए योगदान व प्रेरक नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएँ व्यक्त की। राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया भी शनिवार को सलूंबर क्षेत्र के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने दिवंगत विधायक अमृतलाल मीणा के निवास पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। गरासिया ने कहा कि मीणा इस जनजाति अंचल के विकास के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहे और उन्होंने इस क्षेत्र को तीन बार नेतृत्व देकर जनजाति क्षेत्रवासियों के कल्याण के लिए विकास कार्यों को अंजाम दिया। उन्होंने मीणा के निधन को इस जनजाति अंचल के लिए अपूरणीय क्षति भी बताया।

मानसरोवर झील में कूदकर युवक ने आत्महत्या की, नहीं हुई शिनाख्त

एसडीआरएफ की टीम ने पुलिस के सहयोग से शव को झील से बाहर निकाला

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र की पटेल नगर कॉलोनी में स्थित मानसरोवर झील में अज्ञात कारणों के चलते एक युवक ने कूदकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची एसडीआरएफ की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस के सहयोग से मृतक के शव को झील से बाहर निकाला और एमजी हॉस्पिटल पहुंचाया।

प्रताप नगर थाना प्रभारी गजेंद्र सिंह नरूका ने बताया कि थाना क्षेत्र में स्थित मानसरोवर झील में एक युवक ने अज्ञात कारणों के चलते कूदकर आत्महत्या कर ली। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि झील की पाल के निकट तीन युवक बैठकर पार्टी कर रहे थे। इस दौरान किसी बात को लेकर इनमें शर्त लगी, जिसके बाद एक युवक झील में कूद गया। हालांकि अभी कूदने के कारण स्पष्ट नहीं हो पाए हैं, ना ही पुलिस को मृतक के बारे में उसकी पहचान से संबंधित कोई जानकारी मिली है।

- पुलिस को मृतक के बारे में उसकी पहचान से संबंधित कोई जानकारी नहीं मिली है

पुलिस ने एसडीआरएफ की टीम की मदद से मृतक के शव को ढूंढने के अथक प्रयास किए, जिसके बाद करीब दो घंटे की जद्दोजहद करके शव को झील से बाहर निकल लिया गया। वहीं बड़ी संख्या में मौके पर तमाशबीनों की भीड़ जमा होने की वजह से सर्च ऑपरेशन में भी पुलिस को दिक्कतों का सामना करना पड़ा। शव को एमजी हॉस्पिटल की मोर्चरी में सुरक्षित रखवाया गया है। सोशल मीडिया के जरिए पुलिस मृतक की शिनाख्त के प्रयास कर रही है।

मानसरोवर झील से शव को एसडीआरएफ की टीम ने बाहर निकाला।

रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी के घर लाखों की चोरी

अजमेर, (कासं)। शहर में सक्रिय चोर गिरोह ने एक बार फिर सूने मकान को निशाना बनाया। अलवरगेट थाना क्षेत्र के मेयो कॉलेज के पीछे बीती रात अज्ञात चोरों ने सूने मकान पर धावा बोलते हुए ताले तोड़कर घर में प्रवेश किया और नगदी सहित सोने व चांदी के जेवरात चोरी कर फरार हो गए। मकान मालिक बुजुर्ग दम्पति अपनी बेटी से मिलने गए हुए थे, पीछे से मकान सूना था। पीड़ित ने अज्ञात चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अलवरगेट थाना क्षेत्र के मेयो कॉलेज के पीछे सूर्य नगर राजू पट्टी वाले के पास रहने वाले मकान मालिक सुभाषचंद शर्मा ने थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में पीड़ित मकान मालिक सुभाषचंद शर्मा ने बताया कि शुक्रवार को वह अपनी पत्नी के साथ चन्दरबरदाई नगर स्थित अपनी बेटी से मिलने गए हुए थे, पीछे से मकान सूना था, जब वह वापस लौटे तो घर के ताले टूटे हुए थे, कमरों में सामान बिखरा पड़ा था। अज्ञात चोरी नगदी सहित सोने चांदी के जेवरात चुरा ले गए। चोरी गए माल की कीमत करीब डेढ़ लाख रुपए बताई है।

ऑनलाइन करोड़ों की राशि ठगने वाला गिरोह पकड़ा

अजमेर, (कासं)। फर्जी कॉल सेंटर के जरिए देश व विदेशी लोगों से ऑनलाइन करोड़ों रुपए की ठगी की वारदात अंजाम देने वाले साइबर क्राइम गैंग शनिवार को अजमेर पुलिस ने पर्दाफाश किया है। अजमेर साइबर सेल टीम ने फॉयसागर रोड स्थित संजय पैलेस व वैशाली नगर स्थित डी लाइट होम स्टे कॉल सेंटर पर दबिश की बड़ी कार्रवाई अंजाम देते हुए 14 युवक और चार लड़कियों को हिरासत में लिया है। पुलिस ने कॉल सेंटर से वारदात में इस्तेमाल लेपटॉप, मोबाइल सहित अन्य सामान बरामद कर जब्त किया है।

- दो फर्जी कॉल सेंटर पर कार्रवाई, 14 युवक व चार लड़कियां गिरफ्तार

एसपी देवेंद्र विश्नोई के दिशा निर्देशों पर ऑनलाइन ठगी की वारदात अंजाम देने वालों के खिलाफ अजमेर जिला पुलिस व साइबर सेल की टीम द्वारा शनिवार को कार्रवाई करते हुए फर्जी कॉल सेंटर पर दबिश देकर साइबर क्राइम गिरोह भंडाफोड़ किया। एसपी विश्नोई ने कहा कि फर्जी कॉल सेंटर के जरिए साइबर गिरोह में शामिल युवक-युवतियां भोले-भाले लोगों को लालच का झांसा देकर ऑनलाइन ठगी की वारदातों को अंजाम दे रहे थे।

साबइर थाना प्रभारी मनीष चारण ने बताया कि साइबर सेल टीम व पुलिस की संयुक्त टीम ने कॉलसेंटर पर दबिश देकर 29 लेपटॉप व 40 मोबाइल फोन बरामद किए हैं। वैशाली नगर स्थित डी लाइट होम स्टे पर पंजाब निवासी शिवम नामक युवक सहित चार युवतियां और 14 युवकों को हिरासत में लिया है। पुलिस सभी युवक-युवतियों से पुलिस पूछताछ कर रही है। साबइर थाना प्रभारी मनीष चारण ने बताया कि एसपी देवेंद्र विश्नोई के दिशा निर्देशों पर कार्यवाही अंजाम दी गई है।

पुलिस पूछताछ में जानकारी सामने आई है कि अजमेर से सबसे अधिक फेक कॉल हो रही थी, इसके आधार पर साइबर सेल टीम ने करीब एक सप्ताह से गतिविधियों पर निगरानी रखी जा रही थी। टीम को मुखबिर से सूचना मिली थी कि कुछ युवक-युवतियां बाहर से आए हुए हैं। पुलिस को फिलहाल जानकारी मिली कि यह सभी आरोपित नेशनल ऑनलाइन ठगी जैसी वारदातों को अंजाम देने का काम कर रहे थे। पुलिस गैंग के मास्टरमाइंड की सरगर्मी से तलाश में जुटी है।

मैं विनेश का दर्द अच्छी तरह समझता हूं। दूसरों की बातों की चिंता मत करो। जिंदगी चलती रहती है। असफलताओं से उबरना सबसे खूबसूरत चीज है। अच्छी तरह आराम करो। - रेई हिगुची

जापानी ओलंपिक चैंपियन, विनेश फोगाट का समर्थन किया।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

अमन सहरावत

भारतीय पहलवान अमन सहरावत पेरिस ओलंपिक 2024 खेलों के कुश्ती स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर देश के सबसे युवा पदक विजेता बन गए है। अमन सहरावत ने शुक्रवार को पेरिस 2024 कुश्ती स्पर्धा में पुरुषों के 57 किग्रा फ्रीस्टाइल में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक जीता। अमन ने 21 साल 24 दिन की उम्र में कांस्य पदक जीतकर यह रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने हमवतन बैंडमिंटन स्टार खिलाड़ी पीवी सिंधु के रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया। सिंधु ने रियो ओलंपिक 2016 में 21 साल, एक महीना और 14 दिन की उम्र में रजत पदक जीता था।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिकेट के इतिहास में केवल चार टैस्ट सीरीज बिना हार-जीत के समाप्त हुई जिनका प्रत्येक मैच ड्रॉ रहा, इनमें से दो सीरीज लगातार भारत और पाकिस्तान के बीच हुई।

पर्यावरण संरक्षण के पथ पर दौड़ रही वेनलल्ला की साईकिल

शिमला, 10 अगस्त। 'राइड टू क्लीन एयर' का लक्ष्य लेकर पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण कम करने का संदेश देने वाले मशहूर साइकिलिस्ट वेनलल्ला अवमजुआला की साइकिल देश की सड़कों पर खूब दौड़ रही है। मिजोरम राज्य के इस शख्स ने अपने विवाह के मात्र दो माह बाद देश के भ्रमण पर निकलने का निर्णय लिया और गत 25 जनवरी 2024 को मिजोरम से पैडल चलाना शुरू किया। साइकिलिस्ट वेनलल्ला कन्याकुमारी से जम्मू-कश्मीर होकर हिमाचल की सड़कों पर पहुंचे। वह बीते छह महीने की यात्रा कर गुरुवार को हिमाचल की राजधानी शिमला पहुंचे। जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय शिमला पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नंद शर्मा और परियोजना के समस्त कर्मचारियों के समक्ष वेनलल्ला ने अपने अनुभव सांझा किए। अब तक 12 हजार 829 किलोमीटर का भ्रमण कर देश के कोने-कोने में पर्यावरण बचाने और प्रदूषण पर नियंत्रण करने का संदेश देते आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह पूरे देश में 22 हजार 800 किलोमीटर की यात्रा करेंगे जो उनका मुख्य लक्ष्य है। गौरतलब है कि वेनलल्ला मिजोरम सरकार के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अंतर्गत देश के सभी राज्यों को राइड टू क्लीन एयर का संदेश दे रहे हैं। वेनलल्ला ने कहा कि 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' में नाम दर्ज कर दूरे देश को स्वच्छ वायु बनाए रखने के लिए साइक्लिंग कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश वन विभाग में अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल आर ललनन संगा भी जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय पहुंचे। उन्होंने मशहूर साइकिलिस्ट वेनलल्ला के स्वागत करने के लिए परियोजना के सभी स्टाफ का आभार व्यक्त किया।

चेन्नईयिन एफसी का लक्ष्य असम राइफल्स के खिलाफ अभियान को सकारात्मक रूप से समाप्त करना

जमशेदपुर, 10 अगस्त। चेन्नईयिन एफसी रविवार को यहां जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में असम राइफल्स एफटी के खिलाफ अपने डूरंड कप 2024 अभियान को सकारात्मक रूप से समाप्त करने का लक्ष्य रखेगा। नए चेहरे वाली मरीना माचांस ने ज्यादातर युवा भारतीय खिलाड़ियों की टीम को मैदान में उतारा था। माचांस पहले दो ग्रुप मैचों में भारतीय सेना एफटी और जमशेदपुर एफसी से हार गई हालांकि उन्होंने कड़ी टक्कर दी। असम राइफल्स ने भी अपने पिछले दो मैच गंवाए। चेन्नई एफसी के सहायक कोच नोएल विल्सन ने कहा असम राइफल्स एक अच्छी टीम है, रक्षात्मक रूप से मजबूत है। उन्होंने अपने पिछले दो मैच हारने के बावजूद काम करना जारी रखा है। उन्होंने कहा वे एक कठिन टीम हैं, लेकिन उनके प्रति पूरे सम्मान के साथ हम चेन्नईयिन एफसी के रूप में मैदान पर जाकर अपना खेल खेलना चाहते हैं और मैच जीतने के लिए जो करना है, वह करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि विंसी बैरेटो ने जमशेदपुर एफसी के खिलाफ़ प्रतियोगिता में टीम का पहला गोल किया। युवा भारतीय सोलामलाई आर और विशाल आर जैसे खिलाड़ियों के साथ डूरंड कप में चेन्नईयिन के उज्ज्वल खिलाड़ियों में से एक रहे हैं, ने बहुत सारे सकारात्मक परिणाम दिए हैं। उन्होंने टिप्पणी की कि एक सकारात्मक बात यह रही कि रिजर्व टीम के खिलाड़ी वरिष्ठ खिलाड़ियों से मुकाबला करने की कोशिश कर रहे हैं। आप युवाओं को पहली टीम के खिलाड़ियों के साथ प्रदर्शन करते हुए देखते हैं और आपको अच्छा महसूस होता है। खासकर जमशेदपुर के खिलाफ़ पिछले मैच में मुझे लगा कि हर खिलाड़ी ने मैदान पर कड़ी मेहनत की। हर खिलाड़ी ने संघर्ष किया। उन्होंने कहा इसलिए मैं हमेशा रिजर्व खिलाड़ियों से कहता हूँ कि उन्हें कड़ी मेहनत करते रहना है और उन्हें प्रशिक्षण और मैच के दौरान यह साबित करते रहना है कि उनमें सीनियर टीम में फिट होने की योग्यता है। अगर दो या तीन खिलाड़ी भी ऐसा कर पाते हैं, तो यह एक बड़ी सफलता है। डूरंड कप अब अपने 133वें संस्करण में है और यह एशिया की सबसे पुरानी क्लब फुटबॉल प्रतियोगिता है और भारतीय घरेलू सत्र के लिए पारंपरिक शुरुआत है।

राजनीतिक अशांति के बाद पाकिस्तान जल्दी पहुंचेगी बांग्लादेश क्रिकेट टीम

कराची, 10 अगस्त। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने शनिवार को घोषणा की कि बांग्लादेश की सीनियर क्रिकेट टीम 13 अगस्त को पाकिस्तान पहुंचेगी क्योंकि घरेलू राजनीतिक अशांति के कारण उनकी दो मैच की टेस्ट श्रृंखला की ट्रेनिंग बाधित हुई है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने इस संबंध में पीसीबी का निमंत्रण स्वीकार लिया है। बांग्लादेश आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अंतर्गत पाकिस्तान से दो टेस्ट मैच की श्रृंखला खेलेगा। पहला टेस्ट 21 से 25 अगस्त को रावलपिंडी में जबकि दूसरा टेस्ट 30 अगस्त से तीन सितंबर तक कराची में होगा। पीसीबी के मुख्य परिचालन अधिकारी सलमान नसीर ने कहा कि उन्हें खुशी है कि बीसीबी ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। नसीर ने कहा, "खेल महज जीत और हार नहीं है। यह भाईचारे के बारे में भी है। मुझे पूरा भरोसा है कि लाहौर में अतिरिक्त ट्रेनिंग सत्र से बांग्लादेश के खिलाड़ियों को वैश्विक मंच पर अपना कौशल और प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। बीसीबी के मुख्य कार्यकारी निजाम उद्दीन चौधरी ने बांग्लादेश क्रिकेट टीम को पाकिस्तान में अतिरिक्त ट्रेनिंग का मौका देने के लिए पीसीबी को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, "इससे खिलाड़ियों को निश्चित रूप से परिस्थितियों के अनुकूल होने और आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप श्रृंखला के लिए बेहतर तैयारी करने में मदद मिलेगी। " बांग्लादेश के खिलाड़ी 16 अगस्त तक गद्दाफी स्टेडियम में ट्रेनिंग के बाद रावलपिंडी जायेंगे और 18 अगस्त से अभ्यास सत्र में हिस्सा लेंगे।

अमन ने 10 घंटे में 4.6 किलो वजन कम करके देश को दिलाया मेडल

विनेश फोगाट के साथ जो हुआ उससे अमन सहरावत ने ली सीख

पेरिस, 10 अगस्त। अमन सेहरावत ने शुक्रवार को 2024 पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीत लिया है। अमन का ये पदक भारत के लिए छठा पदक है और इस सीजन का पांचवा कांस्य पदक है। इस वर्ष कुश्ती में भारत को पहला पदक अमन की बदौलत ही मिला है। भारतीय पहलवान ने कांस्य पदक के लिए पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किलोग्राम भार वर्ग में प्यूर्टो रिको के डेरियन क्रूज़ को 13-5 के स्कोर से हराया। इस जीत से ओलंपिक में भारत का 2008 से कुश्ती में कम से कम एक पदक जीतने का सिलसिला भी कायम रहा।

हालांकि, ओलंपिक पदक जीतने से लगभग 24 घंटे पहले, भारतीय खेमे में घबराहट की भावना थी, जैसा कि इस सप्ताह की शुरुआत में देखा गया था, जिसके परिणामस्वरूप विनेश फोगट को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा।

शुक्रवार को, सेहरावत का वजन 61.5 किलोग्राम था, जो गुरुवार को शाम 6:30 बजे जापान के री हिगुची के खिलाफ सेमीफाइनल में हार के बाद था - पुरुषों के 57 किलोग्राम में स्वीकार्य सीमा से ठीक 4.5 किलोग्राम अधिक। भारतीय खेमा एक और झटका बर्दाश्त नहीं कर सकता था और इसलिए छह सदस्यीय कुश्ती दल में शामिल दो वरिष्ठ भारतीय कोच जगमंदर सिंह और वीरेंद्र दहिया ने अगली सुबह वजन मापने के लिए घड़ी में 10 घंटे शेष रहते हुए एक मिशन हाथ में लिया।

प्रक्रिया की शुरुआत डेढ़ घंटे के मैट सेशन से हुई, जिसके दौरान दो वरिष्ठ कोचों ने उन्हें खड़े होकर कुश्ती करने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद एक घंटे का हॉट-बाथ सेशन हुआ। आधी रात के 30 मिनट बाद, वह ट्रेडमिल पर एक घंटे तक बिना रुके दौड़ने के लिए जिम गए। फिर उन्हें 30 मिनट का ब्रेक दिया गया, जिसके बाद 5 मिनट के सौना बाथ के पांच सेशन हुए। अंतिम सत्र के अंत में, सहरावत ने 3.6 किलो वजन कम किया। फिर उन्हें मालिश दी गई, उसके बाद हल्की जॉगिंग और 15 मिनट की दौड़ का सत्र कराया गया। सुबह 4:30 बजे तक, उनका वजन 56.9 किलो रह गया, जो स्वीकार्य सीमा से 100 ग्राम कम था, जिससे कोच ने राहत की सांस ली।

वजन घटाने के इस सत्र के बीच में, सहरावत को, जो इसके बाद सोये नहीं, नींबू और शहद के साथ गुनगुना पानी और थोड़ी कॉफी पीने को दी गई। कोच दहिया ने कहा, "मैंने पूरी रात कुश्ती मुकाबलों के वीडियो देखे। हम हर घंटे उसका वजन जांचते रहे। हम पूरी रात नहीं सोए, दिन में भी नहीं।" वजन कम करना हमारे लिए सामान्य बात है, लेकिन पिछले दिन (विनेश के साथ) जो हुआ, उसके कारण तनाव था, बहुत तनाव था। हम एक और पदक हाथ से जाने नहीं दे सकते थे।"

पीएम मोदी ने अमन को पदक जीतने पर बधाई दी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को पहलवान अमन सहरावत को कांस्य पदक जीतने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मोदी ने आज टेलीफोन पर अमन से बात की और पेरिस ओलंपिक खेलों में पदक जीतने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि आपको पदक जीतने पर बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। आपने अपने नाम के अनुरुप देशवासियों का मनभर दिया है। आपका जीवन देशवासियों के लिए प्रेरक है जिन्होंने कई कठिनाईयों के बाद संघर्ष करते हुए यह पदक जीता और अपने देश का नाम रोशन किया। उन्होंने कहा कि आपने छोटी उम्र में पदक जीतकर देशवासियों को खुशियों से भर दिया है। मोदी ने कहा कि आप जैसे बहुत कम खिलाड़ी होते है जो अखाड़े को ही अपना घर बना लेते है एवं कड़ी मेहनत कर देशवासियों को खुशी देते है। अमन ने मोदी को सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि वह 2028 ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने का पूरा प्रयास करेंगे।

भारतीय हॉकी टीम का दिल्ली हवाई अड्डे पर किया भव्य स्वागत

भारत जिंदाबाद के नारे लगे, ढोल-नगाड़ों के साथ नाचे खिलाड़ी

नयी दिल्ली, 10 अगस्त। भारतीय हॉकी टीम का पेरिस ओलंपिक 2024 में कांस्य पदक जीतकर शनिवार को स्वदेश लौटने पर दिल्ली हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत किया गया। हवाई अड्डे पर भारतीय खिलाड़ियों का ढोल-नगाड़ों के साथ उनके प्रशंसकों ने जोरदार स्वागत किया, खिलाड़ियों के इंतजार में हॉकी प्रशंसक सुबह से ही हवाई अड्डे के बाहर जमा हो गए थे। हॉकी खिलाड़ी हवाई अड्डे से जैसे ही बाहर निकले तो हजारों हॉकी प्रशंसक उनकी झलक पाने के लिए पलकें बिछाए उनके इंतजार में खड़े थे।

हॉकी टीम के बाहर आते ही भारत जिंदाबाद और सरपंच साहब (कप्तान हरमनप्रीत सिंह) के नारे लगा रहे थे। इसे देखकर कप्तान और टीम के सभी साथी भी काफी खुश नजर आ रहे थे। खेल मंत्री डॉ मनसुख मांडविया ने पेरिस ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक जीतकर स्वदेश लौटी हॉकी टीम के खिलाड़ियों से भेंट की और उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी। डॉ. मांडविया ने सभी खिलाड़ियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

डॉ मांडविया ने खिलाड़ियों से कहा कि ओलंपिक खेलों में 52 साल बाद लगातार दूसरी बार पदक जीत कर आपने देश का नाम रोशन किया है, पूरे देश को आप सभी पर गर्व है। टीम के सदस्य हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि देने के लिए अपने कांस्य पदकों के साथ नेशनल स्टेडियम पहुंचे और हॉकी के जादूगर ध्यानचंद को श्रद्धांजलि अर्पित की। हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने भारतीय गोलकीपर पीआर श्रीजेश के समापन समारोह में ध्वजवाहक चुने जाने पर बात की।

उन्होंने कहा, पीआर श्रीजेश इसके हकदार है (ओलंपिक के समापन समारोह में ध्वजवाहक बनने के लिए)। अगर भारत सरकार और भारतीय ओलंपिक समिति ने उन्हें यह अवसर दिया है तो हॉकी इंडिया उनका शुक्रिया अदा करता है... यह एक शानदार जीत थी, लगातार दो पदक जीतना एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन, हमारा लक्ष्य फाइनल खेलना था लेकिन रेफरी की गलती से डिफेंडर अमित रोहिदास को बाहर बैठाने की वजह से हमें हार का सामना करना पड़ा।

एशिया में ही होगा महिला विश्वकप, बीसीबी करेगा बांग्लादेश की अंतरिम सरकार से बात

दुबई, 10 अगस्त। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने शनिवार को कहा है कि एशिया में ही महिला टी-20 विश्वकप खेला जायेगा और टूर्नामेंट की तिथि समान रहेगी। इसको लेकर बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड बंगलादेश की अंतरिम सरकार से बात करेगा। आईसीसी ने आज टी-20 महिला विश्वकप में भाग लेने वाले सभी देशों के बोर्ड को प्रेषित किये गये मेल में कहा, आईसीसी बंगलादेश की स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं और बीसीबी के साथ मिलकर काम कर रहा है। अगर उस समय तक बंगलादेश में टूर्नामेंट कराना संभव नहीं हुआ तो आईसीसी बोर्ड के संपर्क में आकर पूछेगा कि इसको कहां कराया जा सकता है। आईसीसी ने साथ ही कहा कि टूर्नामेंट की तिथि समान रहेंगी। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) रविवार को आगामी महिला टी-20 विश्वकप को लेकर बंगलादेश की अंतरिम सरकार में युवा और खेल सलाहकार आसफि महमूद से मिलेगा। अक्तूबर में महिला टी-20 विश्वकप में होना है।

भारत एडिलेड टेस्ट से पहले डे-नाइट अभ्यास मैच खेलेगा

नयी दिल्ली, 10 अगस्त।भारत एडिलेड में होने वाले दिन-रात्रि टेस्ट मैच से पहले ऑस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री एकादश टीम के साथ कैनबरा में दो दिवसीय पिंक बॉल अभ्यास मैच खेलेगा। यह मैच का आयोजन 30 नवंबर से एक दिसंबर तक होगा। पहले और दूसरे टेस्ट मैच के बीच में अंतराल के दौरान यह मैच कराये जाने की योजना है। इससे पहले के दो सत्र में भी दो बार प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ अभ्यान मैचों का आयोजन हुआ था।

वेस्टइंडीज ने वर्ष 2022 में प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ एक दिन-रात्रि अभ्यास मैच खेला था और इसके बाद पाकिस्तान ने भी वर्ष 2023 में अभ्यास मैच खेला था। भारत ने कुल मिलाकर केवल चार दिन-रात्रि टेस्ट खेले हैं, जिनमें सबसे हालिया 2022 में बेंगलुरु में श्रीलंका के खिलाफ था। वहीं ऑस्ट्रेलिया ने 12 (सभी घरेलू मैदान पर) पिंक बॉल टेस्ट खेले हैं। पिछले सत्र में ब्रिस्बेन में वेस्टइंडीज के खिलाफ उन्हें पिंक बॉल टेस्ट में आठ रनों से हार का सामना करना पड़ा था। यह उनकी पहली हार थी। भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की घरेलू टेस्ट श्रृंखला के बाद ऑस्ट्रेलिया पहुंचेगी।

सरपंच ने सबसे ज्यादा 8 मैचों में 10 गोल किये

पेरिस, 10 अगस्त। भारतीय पुरुष हॉकी टीम को पेरिस ओलंपिक 2024 खेलों की हॉकी प्रतियोगिता में कांस्य पदक जिताने में अहम भूमिका निभाने वाले कप्तान हरमनप्रीत सिंह गोल स्कोरिंग सूची में शीर्ष स्थान पर रहे। हरमनप्रीत सिंह ने पेरिस 2024 पुरुष हॉकी प्रतियोगिता में आठ मैचों में सबसे ज्यादा 10 गोल किए। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया के ब्लेक गोवर्स ने सात गोल किए।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने कोलंबस के यवेस-डू-मानोइर स्टेडियम में स्पेन को 2-1 से हराकर ओलंपिक में लगातार दूसरी बार कांस्य पदक जीता। इस मुकाबले में भी हरमनप्रीत ने दो गोल किए और भारत की जीत सुनिश्चित की। मैच जीतने के बाद भारतीय हॉकी टीम के कप्तान ने कहा, मेरे लिए कड़ी मेहनत करने, पेनल्टी कॉर्नर बनाने और सभी फॉरवर्ड लाइन के लिए सारा श्रेय मेरी टीम को जाता है। मुझे इस पर बहुत गर्व है। बेशक, मुझे कप्तान के रूप में खुद पर भी गर्व है, लेकिन टीम हमेशा पहले आती है।

हरमनप्रीत सिंह ने स्पेन के खिलाफ पेनल्टी कॉर्नर के जरिए दो गोल किए और टूर्नामेंट में अपने पेनल्टी कॉर्नर के स्कोर को सात तक पहुंचाया। जबकि तीन गोल पेनल्टी स्ट्रोक से आए। विश्व की चौथे नंबर की टीम बेल्जियम के साथ ग्रुप-चरण के मुकाबले के अलावा हरमनप्रीत ने पेरिस 2024 में आठ बार के ओलंपिक चैंपियन के लिए हर मैच में गोल किया। 28 वर्षीय खिलाड़ी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने अभियान के पहले मैच में भारत के लिए अंतिम मिनट से ठीक पहले एक गोल करके अपना खाता खोला।उन्होंने आयरलैंड पर 2-0 की जीत में दो गोल किए लेकिन टोक्यो ओलंपिक 2020 की स्वर्ण पदक विजेता बेल्जियम टीम के खिलाफ भारत की 1-2 की हार में गोल नहीं कर सके।

हॉकी इंडिया कांस्य पदक जीतने वाली टीम के प्रत्येक खिलाड़ी को देगी 15 लाख

नयी दिल्ली, 10 अगस्त। हॉकी इंडिया ने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के प्रत्येक खिलाड़ी को 15-15 लाख रुपये और सहयोगी स्टाफ के हर सदस्य को 7.5 लाख रुपये के पुरस्कार देने की घोषणा की है। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप टिर्की ने टीम के ऐतिहासिक प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा, यह जीत हमारे खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ की कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और लचीलेपन का प्रमाण है। लगातार दो ओलंपिक पदक जीतना एक असाधारण उपलब्धि है जो विश्व मंच पर भारतीय हॉकी के पुनरुत्थान को दर्शाता है। हॉकी इंडिया की ओर से मैं पूरी टीम और सहयोगी स्टाफ को उनके असाधारण प्रदर्शन और समर्पण के लिए बधाई देता हूं। यह पुरस्कार राशि उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सराहना के तौर पर है। मैं पीआर श्रीजेश को उनके शानदार करियर और भारतीय हॉकी में उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक बधाई देना चाहता हूं। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा, भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पेरिस में अपनी उल्लेखनीय उपलब्धि से एक बार फिर देश को गौरवान्वित किया है। टीम की एकता, कौशल और दृढ़ता ने देश भर के लाखों हॉकी प्रशंसकों को खुशी दी है।

लोगों को यह भूलना नहीं चाहिये कि विनेश ने देश के लिए क्या किया है : नीरज चोपड़ा

नीरज चोपड़ा ने किया विनेश फोगाट का समर्थन

पेरिस, 10 अगस्त। स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने पहलवान विनेश फोगाट की खेल पंचाट (सीएएस) की गयी अपील को सफल रहने की उम्मीद जताते हुए कहा कि अगर यह फैसला उनके पक्ष में नहीं रहा तो भी लोगों यह भूलना नहीं चाहिये कि उन्होंने देश के लिए क्या किया है। विनेश को बुधवार को निर्धारित सीमा से 100 ग्राम अधिक होने के कारण पेरिस ओलंपिक के फाइनल के लिए अयोग्य ठहराकर बाहर दिया गया था। खेल पंचाट के तदर्थ प्रभाग में उनकी अपील की सुनवाई शुक्रवार रात को पूरी हो गयी है इस मामले में फैसला भारतीय समयानुसार आज रात 9.30 बजे तक आने की उम्मीद है। तोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले नीरज पेरिस में रजत पदक जीतकर लगातार दो ओलंपिक में पदक जीतने वाले पहले ट्रैक एवं

फील्ड के पहले भारतीय खिलाड़ी बन गये। उन्होंने कहा कि वह विनेश के गले में पदक सिर्फ एक कारण से देखना चाहते है क्योंकि इससे 'लोग उनकी उपलब्धि को भूलेंगे नहीं'। आईओसी सदस्य और रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन नीता अंबानी द्वारा अभिनंदन के बाद 26 वर्षीय नीरज ने 'इंडिया हाउस' में संवाददाताओं से कहा, "अगर उसे पदक मिलता है, तो यह बहुत अच्छा होगा। अगर चीजें उस तरह से नहीं हुई होती, तो उसके पास पदक होता। मुझे उम्मीद है कि उसे यह मिलेगा क्योंकि अगर यह आपके गले में नहीं है, तो आपको हमेशा इसकी निराशा रहती है।" उन्होंने कहा, "आज लोग कह सकते हैं कि वह हमारी चैंपियन है, लेकिन कुछ दिनों बाद वे भूल जाएंगे। अगर ऐसा न होता तो पदक कौन सा है यह ज्यादा मायने नहीं रखता है। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि उन्हें पदक मिलेगा। उन्हें पदक मिले या नहीं, मैं चाहूंगा कि लोग यह नहीं भूले कि उन्होंने देश के लिए क्या किया है।

किलिमंजारो पर्वत पर भारतीय पर्वतारोहियों ने फहराया तिरंगा

दार्जिलिंग, 10 अगस्त। हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (दार्जिलिंग) के बैनर तले भारतीय पर्वतारोहियों ने स्वतंत्रता के 78 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अफ्रीकी महाद्वीप के किलिमंजारो पर्वत पर में 7,800 वर्ग फुट भारतीय तिरंगा फहराकर एक नई उपलब्धि हासिल की।

माउंट किलिमंजारो पूर्वी अफ्रीका में तंजानिया के उत्तर-पूर्व में भूमध्य रेखा पर केन्याई सीमा के दक्षिण में किलिमंजारो राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है। इसे अफ्रीका की छत के नाम से भी जाना जाता है। रक्षा मंत्रालय सूत्रों ने शनिवार को यह जानकारी दी। रक्षा मंत्रालय के 'दिव्यांगजन अभियान' दल ने दिव्यांग उदय कुमार के साथ 19,341 फुट ऊंचे माउंट किलिमंजारो शिखर पर पहुंचकर 7800 वर्ग फुट का तिरंगा फहराने के बाद चोटी से संदेश भेजा -जयहिंद। दिव्यांगजन अभियान में ग्रुप कैप्टन जय किशन के नेतृत्व में कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान से अफ्रीकी महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी किलिमंजारो तक के अभियानकर्ताओं ने चार अगस्त को दिव्यांग उदय कुमार सहित कैप्टन श्रुति, महेंद्र कुमार यादव, पावेल शर्मा, और मिस सुलक्षणा तमांग के साथ बेस कैंप के लिए चढ़ाई शुरू की थी। अभियान दल ने सात अगस्त को 15,500 फुट की ऊंचाई पर स्थित किबो हट पहुंचने पर 7,800 वर्ग फुट का विशाल भारतीय राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित किया।

आखिरी अंक गंवाने के कारण रीतिका को क्वार्टरफाइनल में मिली हार

रीतिका के पास रेपेचेज से कांस्य पदक हासिल करने का अभी भी मौका है

पेरिस, 10 अगस्त। भारतीय पहलवान रीतिका हुड्डा को पेरिस ओलंपिक महिला कुश्ती के 76 किग्रा वर्ग के क्वार्टर फाइनल में किर्गिस्तान की एइपेरी मेतेट के खिलाफ बराबरी के बाद आखिरी अंक गंवाने के कारण हार का सामना करना पड़ा। अपना पहला ओलंपिक खेल रही 21 साल की रीतिका ने शीर्ष वरीयता प्राप्त पहलवान को कड़ी टक्कर दी और शुरुआती पीरियड में एक अंक की बढ़त बनाने में सफल रही।

दूसरे पीरियड में रीतिका ने कड़ी टक्कर देने के बावजूद 'पैसिविटी (अति रक्षात्मक रवैया) ' के कारण एक अंक गंवाया जो इस मैच का आखिरी अंक साबित हुआ। नियमों के अनुसार मुकाबला बराबर रहने पर आखिरी अंक बनाने वाले खिलाड़ी को विजेता घोषित

किया जाता है। किर्गिस्तान की पहलवान अगर फाइनल में पहुंचती है तो रीतिका के पास रेपेचेज से कांस्य पदक हासिल करने का मौका होगा। इस भारवर्ग में ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली देश की पहली पहलवान रीतिका ने इससे पहले तकनीकी श्रेष्ठता से जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई थी।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने देश को किया गौरवान्वित : मांडविया

नयी दिल्ली, 10 अगस्त। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने शनिवार को भारतीय पुरुष हॉकी टीम के समर्पण और कड़ी मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि वैश्विक मंच पर उनके असाधारण प्रदर्शन ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। डॉ. मांडविया ने आज पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर लौटी भारतीय पुरुष हॉकी टीम को सम्मानित करते हुए कहा, पूरे देश को आपकी उपलब्धि पर गर्व है। टीम वर्क और अदम्य भावना का प्रमाण है। आपने भारत को अपार गौरव दिलाया है और लाखों युवा एथलीटों को अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने टीम की सफलता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए कोचिंग स्टाफ और सपोर्ट टीम के अनथक प्रयासों की भी सराहना की।

विनेश फोगाट के रजत पदक पर फैसला टला, सीएएस कोर्ट आज फैसला सुनाएगा

100 ग्राम ओवरवेट की वजह से अयोग्य घोषित हुई थी

पेरिस, 10 अगस्त। भारतीय रेसलर विनेश फोगाट के सिल्वर मेडल पर फैसला अब 11 अगस्त को आएगा। यह जानकारी कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट्स (सीएएस) ने दी है। पहले कहा जा रहा था कि भारतीय समयानुसार 9:30 बजे अपना फैसला सुनाएगा, लेकिन कोर्ट ने इसकी समय सीमा बढ़ा दी है। शुरुआती जानकारी में 13 अगस्त को फैसला सुनाने की बात सामने आई थी।

9 अगस्त को ने 3 घंटे तक इस मामले की सुनवाई की थी। इस दौरान विनेश भी वर्चुअली मौजूद रहीं। भारतीय ओलिंपिक संघ (आईओए) की ओर से सीनियर वकील हरीश साल्वे ने विनेश का पक्ष रखा।

फाइनल मैच से पहले विनेश को 100 ग्राम ज्यादा वजन होने के चलते अयोग्य घोषित कर दिया गया था, जबकि शुरुआती दौर से पहले किए गए वजन में विनेश

50 वेट कैटेगरी की तय सीमा से कम थीं। ऐसे में विनेश ने जॉइंट सिल्वर मेडल की मांग की है।

इस मामले पर कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट्स (सीएएस) ने कहा, हम विनेश के केस में प्रक्रियाएं तेजी से कर रहे हैं, लेकिन उनकी अपील पर एक घंटे में फैसला देना संभव नहीं है। इस मामले में पहले यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग का पक्ष सुना जाना जरूरी है। फैसला डॉक्टर एनाबेल बेनेट को करना है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से शनिवार को सिकराय विधानसभा क्षेत्र की मेधावी छात्राओं से मुलाकात की। इस मीटिंग में सिकराय विधायक विक्रम बंशीवाल भी मौजूद थे। विधायक बंशीवाल इन मेधावी छात्राओं को अपने साथ अयोध्या दर्शन के लिए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने छात्राओं को आशीर्वाद दिया।

मुख्यमंत्री ने सिकराय की छात्राओं से मुलाकात की

- **भजनलाल ने छात्राओं के अनुरोध पर तिरंगे के साथ सैल्फी ली।**
- **सिकराय के भाजपा विधायक विक्रम बंशीवाल इन छात्राओं को हवाई जहाज से अयोध्या ले जा रहे हैं, मुख्यमंत्री ने सभी छात्राओं को शुभकामनाएं दीं।**

जयपुर, 10 अगस्त (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से शनिवार को मुख्यमंत्री निवास पर सिकराय विधानसभा क्षेत्र के विधायक विक्रम बंशीवाल एवं मेधावी छात्राओं ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने विधायक बंशीवाल की पहल पर हवाई मार्ग से अयोध्या दर्शन के लिए जा रही मेधावी छात्राओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि अयोध्या दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक केन्द्र बन चुका है, जो कि हमारे देश के गौरव का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि रोम-रोम में बसने वाले प्रभु श्रीराम हम सभी की जीवन पद्धित के आदर्श हैं। शर्मा ने कहा कि बच्चों में सांस्कृतिक केन्द्रों को लेकर अभिलाषा बनी रहती है। इस यात्रा से धार्मिक दर्शन के साथ ही भारत की समृद्ध संस्कृति एवं विरासत के साक्षी बनने का अनुभव प्राप्त होगा और जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत होगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस दौरान छात्राओं को यात्रा के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने छात्राओं के अनुरोध पर तिरंगे के साथ सेल्फी भी खिंचवाई।

मुख्यमंत्री ने विधायक विक्रम बंशीवाल की बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में की गई पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह पहल भावी छात्र-छात्राओं की हौंसला अफजाई का काम करेगी। उल्लेखनीय है कि विधायक बंशीवाल की अनूठी पहल पर बोर्ड परीक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली सिकराय विधानसभा क्षेत्र की मेधावी छात्राओं को हवाई यात्रा के माध्यम से अयोध्या दर्शन करवाए जाएंगे। इस अवसर पर विधायक विक्रम बंशीवाल के परिजन, स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

'एक स्वतंत्र मजबूत न्याय प्रणाली शासन के लिए आवश्यक है यह जीवन की जीवन रेखा है'

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने बार काउन्सिल ऑफ राजस्थारन के प्लैटिनम जुबली कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए न्याय प्रणाली को देश का मजबूत स्तम्भ बताया

- **जोधपुर में आयोजित प्लैटिनम जुबली कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश ए.जी. मसीह, न्यायाधीश संदीप मेहता, राजस्थान हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एम.एम. श्रीवास्तव, विधि मंत्री और बार काउन्सिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष भी मौजूद थे।**

जोधपुर, 10 अगस्त (कासं)। बार काउन्सिल ऑफ राजस्थान का प्लैटिनम जुबली कार्यक्रम शनिवार को जोधपुर में मनाया गया। इस कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शिकरत की। धनखड़ के साथ ही सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीश ए.जी. मसीह, न्यायाधीश संदीप मेहता, राजस्थान हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मनिन्द्र मोहन श्रीवास्तव, विधि मंत्री जोगाराम पटेल, बार काउन्सिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा व बार काउन्सिल ऑफ राजस्थान के चेयरमैन भुवनेश शर्मा सहित कई पूर्व न्यायाधीश व अधिवक्ता शामिल हुए। सबसे पहले अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सभी को प्लैटिनम जुबली की बधाई दी। उन्होंने न्याय प्रणाली को देश का मजबूत स्तम्भ बताया। उन्होंने कहा कि न्याय व्यवस्था ने ही भारत के नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को बरकरार रखा हुआ है।

उपराष्ट्रपति ने आगाह किया कि कुछ राष्ट्रिवरोधी लोग साजिशन नैरेटिव चला रहे हैं कि भारत में भी पड़ोसी देश जैसा घटनाक्रम दोहराया जायेगा। ये लोग जिम्मेदारी वाले पदों पर रहे हैं, फिर भी ऐसा गैर जिम्मेदाराना बयान कैसे दे सकते हैं। ऐसी राष्ट्र विरोधी ताकतें देश तोड़ने को तत्पर हैं, राष्ट्र के विकास को पटरी से उतारना चाहती हैं। हमें इनसे सावधान रहने की जरूरत है।

आपातकाल की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब आपातकाल लगाया था, तो सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि जब तक आपातकाल जारी रहेगा, तब तक कोई भी व्यक्ति अपने अधिकारों के लिए किसी भी न्यायालय में नहीं जा सकता और आपातकाल तब तक जारी रह सकता है, जब तक सरकार चाहे। उन्होंने कहा कि यदि उच्चतम स्तर पर न्यायपालिका ने झुककर किसी व्यक्ति की तानाशाही के आगे घुटने नहीं टेके होते, तो आपातकाल नहीं लगता।

उपराष्ट्रपति ने कहा किसी राष्ट्र की न्यायिक प्रणाली और उसकी कार्यक्षमता उसकी लोकतांत्रिक जीवंतता को परिभाषित करती है। एक स्वतंत्र मजबूत न्याय प्रणाली किसी भी शासन के लिए आवश्यक है क्योंकि यह जीवन की भी जीवन रेखा है।

उपराष्ट्रपति ने कहा मैं इन संस्थाओं का उल्लेख हमारे लोकतंत्र के तीन स्तंभों के रूप में कर रहा हूँ। यदि इन संस्थाओं को निर्बल किया गया, तो ये हमारी लोकतंत्र को खतरे में डाल देंगी और हमारे विकास के मार्ग को पटरी से उतार देंगी।

उन्होंने कहा ये राष्ट्र विरोधी ताकतें हमारे संस्थानों का शोषण करके ऐसी कथाएं फैलाती हैं जो न केवल राष्ट्रिवरोधी हैं, बल्कि राष्ट्र के लोकतंत्र को पटरी से उतारने का लक्ष्य रखती हैं।

उपराष्ट्रपति ने कहा, हमारे संविधान में सभी संस्थाओं की भूमिका को अच्छी तरह से वर्णित किया गया है। विधायिका की भूमिका क्या है, यह सभी जानते हैं। न्यायपालिका की भूमिका क्या है? कार्यपालिका की भूमिका क्या है, यह हम सभी जानते हैं?

टी.वी. सोमनाथन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संभालेंगे। सोमनाथन झारखंड कैडर के 1982 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी और मौजूदा कैबिनेट सचिव राजीव गौबा की जगह लेंगे।

सर्कुलर के अनुसार, कैबिनेट सचिव का पद ग्रहण करने से पहले सोमनाथन कैबिनेट सचिवालय में विशेष कार्य अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। उनका कार्यकाल 30 अगस्त से शुरू होगा और वह अगले दो सालों तक इस पद पर बने रहेंगे।

कैबिनेट सचिव भारत सरकार की कार्यपालिका में सबसे उच्च पद होता है। कैबिनेट सचिव के रूप में नियुक्त अधिकारी, भारत सरकार के सचिवों की समिति का प्रमुख होता है। यह पद भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के वरिष्ठतम अधिकारियों में से एक को दिया जाता है, जो सीधे प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल को प्रशासनिक सलाह देने के लिए जिम्मेदार होता है।

कैबिनेट सचिव का कार्यकाल आमतौर पर दो साल का होता है लेकिन इसे सरकार के विवेकानुसार बढ़ाया भी जा सकता है।

इस पद पर बैठे व्यक्ति को प्रशासनिक कार्यों में व्यापक अनुभव और नेतृत्व क्षमता की आवश्यकता होती है, क्योंकि यह भूमिका सरकार की नीतियों के कार्यान्वयन, विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वय, और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे मुद्दों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने मेड़ता सिटी को दी बड़ी सौगात

पादू कला व जसनगर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बनाने की घोषणा

- **मेड़ता के विधायक लक्ष्मण कलरु ने मेड़ता की जनता की तरफ से मुख्यमंत्री का जताया आभार।**
- **मुख्यमंत्री खुद मेड़ता सिटी जाने वाले थे पर खराब मौसम के कारण नहीं जा पाए, इसलिए वर्चुअली आमसभा को संबोधित किया।**

मेड़ता सिटी, 10 अगस्त (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का मेड़ता सिटी दौरा आज बारिश के कारण रद्द हो गया। इसके बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वर्चुअल माध्यम से आम सभा को संबोधित किया।

सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने उपस्थित जनों को मीरा जयंती महोत्सव की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मेड़ता की धरती शक्ति की धरती है। उन्होंने कहा, भक्त शिरोमणि मीराबाई के मंदिर में दर्शन की उनकी परम इच्छा थी लेकिन मौसम की खराबी के कारण उनका कार्यक्रम रद्द हो गया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मेड़ता की जनता को दो बड़ी सौगातें दीं। उन्होंने पादू कला व जसनगर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनाने की घोषणा की। साथ ही, मेड़ता विधायक लक्ष्मण कलरू ने मेड़ता को मिली दो बड़ी सौगातों को लेकर खास बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि लंबे समय से पादू कला व जसनगर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को क्रमोन्नत करने की मांग की जा रही थी, जिसे आज मुख्यमंत्री ने पूरा कर मेड़ता की जनता का दिल जीत लिया है।

सभा में किसान आयोग अध्यक्ष सी.आर. चौधरी, विधायक लक्ष्मण राम कलरू, नागौर के प्रभारी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, रिछपाल मिर्धा, मंत्री विजेन्द्र सिंह, मंत्री मंजू बागमार, अजय सिंह किलक, ज्योति मिर्धा, जनता प्रधान संदीप चौधरी, वीरम देव जैसास, जिला प्रमुख शोभाराम जयपाल, राम अवतार चितलांगिया, जितेन्द्र गहलोत मौजूद थे।

मेड़ता मीरा जयंती महोत्सव का झण्ड़ारोहण के साथ शुभारंभ किया गया। पारम्परिक रूप से राजपूत समाज ने विशाल रैली के रूप में जुलूस निकाला, जो चारभुजा मंदिर पहुंचा, वहाँ पूजा अर्चना कर झण्डारोहण के साथ 520 वें मीरा जयंती महोत्सव का शुभारम्भ हुआ।

मेड़ता तहसीलदार रामसुख गुर्जर, मुख्य यजमान लक्षण राम घांची द्वारा ठाकुर जी की विशेष पूजा अर्चना की गई। महोत्सव में मीरा जयंती समिति के पदाधिकारी नरेन्द्र लाहोटी, पुखराज कमेडिया, रामेश्वर थिरोदा, रामेश्वर घांची, सी पी पुजारी सहित कई कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री सहित, कई नेताओं का आभार जताया।

'शेख हसीना ने अभी तक प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया है'

वॉशिंगटन, 10 अगस्त। शेख हसीना के बेटे सजीब वाजेद ने दावा किया है कि बांग्लादेश छोड़ने से पहले उन्होंने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया था। इस लिहाज से आधिकारिक रूप से वह अब भी प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने कहा कि हालात इतने खराब हो गए थे कि उन्हें इस्तीफा देने का वक्त ही नहीं मिला और भारत आना पड़ गया। एएफपी ने 5 अगस्त को रिपोर्ट किया था कि शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है और वहां से भाग निकली हैं।

वाजेद ने कहा कि संविधान के मुताबिक सेख हसीना अब भी प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने कहा, मां ने सार्वजनिक बयान जारी करने और फिर इस्तीफा देने का प्लान बनाया था।

अनंतनाग में सुरक्षाबलों की आतंकियों के साथ मुठभेड़, 2 जवान शहीद व तीन घायल

- **सुरक्षाबलों ने आतंकियों के छुपे होने की सूचना मिलने पर सर्च ऑपरेशन चलाया तभी आतंकियों की तरफ से गोलीबारी शुरु हो गई।**

श्रीनगर, 10 अगस्त। जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले में शनिवार को आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई। इस मुठभेड़ में दो जवान शहीद हो गए हैं जबकि तीन अन्य घायल हो गए हैं। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद दक्षिण कश्मीर जिले के कोकेरनाग इलाके के अहलान गडोले में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों द्वारा तलाशी दल पर गोलीबारी करने पर सुरक्षा बलों ने जवाब में गोलीबारी की, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई।

शनिवार दोपहर को मिली जानकारी के अनुसार, कोकरनाग इलाके के अहलान गडोले क्षेत्र में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना के आधार पर सुरक्षा बलों ने घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। जैसे ही सुरक्षा बलों ने इलाके की घेराबंदी की वहां छिपे हुए आतंकियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। जिससे दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ छिड़ गई। शुरुआती गोलीबारी में एक जवान घायल हो गया, जिसे तुरंत 92 बेस सेना अस्पताल ले जाया गया। इसके कुछ समय बाद एक और जवान के घायल होने की खबर आई और फिर दुखद रूप से दो जवान शहीद हो गए।

माना जा रहा है कि आतंकियों का यह समूह भारी हथियारों से लैस है और जैश-ए-मोहम्मद से जुड़ा हुआ है। रिपोर्ट्स के अनुसार, ये आतंकी डोडा से दक्षिण कश्मीर के वन क्षेत्रों में घुसपैठ करने में सफल हुए थे। घना जंगल और ऊबड़-खाबड़ इलाका होने के कारण आतंकियों के भागने की संभावना बढ़ गई है।

गत वर्ष जारी हिंडनबर्ग...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **हिंडनबर्ग के धमाकों के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अडानी ग्रुप के शेयर घोटाले की जांच करवाने से इन्कार कर दिया था, यह कह कर कि सेबी इस मामले की जांच पहले ही कर रही है।**
- **सेबी व अडानी ग्रुप के वकील महेश जेठमलानी ने हिंडनबर्ग पर मानहानि का मुकदमा ठोका था।**
- **अतः क्या नवीन हिंडनबर्ग रिपोर्ट, पुनः अडानी ग्रुप को टारगैट बनायेगी, पुराने वैमनस्य के कारण।**

(सिक्युरिटीज़ एण्ड एक्सचैंज बोर्ड ऑफ इंडिया) से सांठ-गांठ है। रिपोर्ट में आरोप था कि यह समूह टैक्स हैवन्स का अवैध इस्तेमाल करता है और शेयरों की कीमतों में जोड़-तोड़ करता है। इस वर्ष जनवरी में सुप्रीम कोर्ट ने हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में अडानी के खिलाफ लगाए गए आरोपों की जांच करने से मना कर दिया और कहा कि मार्केट रैगुलेटर सेबी इस मामले में जांच कर रही है।

अडानी समूह ने तब आरोपों से इन्कार कर दिया था और ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने कहा कि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट ग्रुप को बदनाम करने, कंपनी को नष्ट करने और कड़ी मेहनत से कमाई गई मार्केट वैल्यु को गिराने की सोची समझी साजिश है। भाजपा नेता और एडवोकेट महेश जेठमलानी ने कहा, बाद में दावा किया कि हिंडनबर्ग की अडानी संबंधी रिपोर्ट अमेरिकन बिजनैसमैन, जिसका चीन से कनैक्शन है, द्वारा गढ़ी गई थी जेठमलानी ने इसके लिए किंगडन कैपिटल मैनेजमैंट एल.एल.सी. के मार्क किंगडन का नाम लिया था।

जून में हिंडनबर्ग रिसर्च को सेबी द्वारा शो कॉज नोटिस भी भेजा गया था। जिसमें भारतीय विनियमों के संदिग्ध उल्लंघन का आरोप था। शॉर्ट सैलर ने नोटिस को बकवास करार दिया और कहा कि इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज़ उठाने वालों को डराना, धमकाना व चुप कराना है। पर, इससे भारत के सबसे पावरपुल व्यक्ति द्वारा की गई धोखाधड़ी छुप नहीं सकती है। यू.एस. एजेन्सी ने आरोप लगाया कि भारत में कॉर्पोरेट गवर्नेंस एक बिजनैसमैन के लिए झूठ है। वो सब खरीद सकता है। हिंडनबर्ग ने नई रिपोर्ट लाने का इरादा जताया। ऐसा लगता है कि अडानी-हिंडनबर्ग की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है।

गडकरी ने पंजाब को 8 हाइवे प्रोजैक्ट बंद करने की चेतावनी दी

नई दिल्ली, 10 अगस्त। केंद्रीय राजमार्ग एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पत्र लिखकर पंजाब के मुख्यमंत्री को चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि राज्य में कानून व्यवस्था ठीक नहीं है। अगर इसे सुधारा नहीं जाता है तो एन.एच.ए.आई. आठ हाइवे प्रोजेक्ट रद्द कर देगा। दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे पर हो रहीं हिंसक घटनाओं को देखते हुए केंद्रीय मंत्री ने यह चेतावनी भरा पत्र लिखा है। बता दें कि इन आठ प्रोजेक्ट की कुल लागत 14288 करोड़ है।

बता दें कि दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे के निर्माण के दौरान कई जगहों पर काम रोकने के लिए हिंसक घटनाएं देखने को मिलीं। यह एक्सप्रेसवे राजधानी दिल्ली से माता वैष्णोदेवी कटरा तक बनाया जा रहा है। वहीं इसका एक हिस्सा अमृतसर तक भी जोड़ा जाना है।

1940 के दशक से 1960 तक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उदार नीति अपनाई गई। महत्वपूर्ण यह था कि टेलीकम्युनिकेशन्स इण्डस्ट्री सहित प्राइवेट सैक्टर के कुछ महत्वपूर्ण अवयवों को ओपन कर दिया गया। टेलीकॉम इण्डस्ट्री के उदारीकरण और कीमत कुशलता के कारण इस सैक्टर में नए उद्यमियों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा हुई जिससे इन्फॉर्मेशन टैक्नोलॉजी इण्डस्ट्री के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। वर्ष 1991-92 के आर्थिक संकट के बाद अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया गया, जिससे नियामक संरचना में व्यापक बदलाव आए। इससे भारतीय उद्योग जगत में भारतीय एवं विदेशी, दोनों ही नए उद्यमियों को लाने में मदद मिली।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नए नियम ऑटोमोबाइल सैक्टर में भारी बदलाव लेकर आए। देश में दो पुराने प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों के स्वामित्व वाली पुरानी ऑटोमोबाइल कम्पनियां नवीन तकनीकी और नए खिलाड़ियों के प्रवाह में गायब हो गईं।

दूसरा, डिपार्टमैन्ट ऑफ टेलीकम्युनिकेशन्स जो देश में अब तक दूरभाष एवं संचार इन्फ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध करवा रहा था, गुमनामी के अंधेरे में खो गया। उसका स्थान प्राइवेट सैक्टर के नए सर्विस प्रोवाइडर्स ने ले लिया। कीमतें गिर गईं, जिससे आई.टी. इण्डस्ट्री परवान चढ़ सकी।

आज, यदि हम अग्रणी औद्योगिक घरानों की तुलना 1950 के दशक के औद्योगिक घरानों से करें तो हम उनमें थोड़ी समानता पाएंगे। पचास के दशक के अधिकांश औद्योगिक घराने अब गायब हो चुके हैं और उनका स्थान टैक्नो उद्यमियों की नई फसल ने ले लिया है, यद्यपि "टाटा" जैसे कुछ अपवाद भी हैं। मध्यम आय वर्ग के देशों के समक्ष आर्थिक वृद्धि, डिकार्बोनाइजेशन और ऊर्जा सुरक्षा जैसी महत्वपूर्ण जरूरतें हैं। इसके समाधान में सभी फर्म्स को वहन योग्य एवं सुरक्षित ऊर्जा उपलब्ध करवाने के साथ ही आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था में से खराबियों को अलग करना होगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य पुनर्निर्माण की प्रक्रिया तथा अकुशल चीज़ों को अलग करने पर निर्भर होगा। हम इसे अबाधित तरीके से कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? इसका उत्तर सरकार की इस नीति पर निर्भर होगा कि वह वर्तमान आर्थिक संरचना को बनाए रखने को लेकर अधिक हस्तक्षेप ना करें और रोजगार संरक्षण के नाम पर अकुशल खिलाड़ियों का पक्ष ना ले। क्यों नहीं नए उद्यमियों के माध्यम से रोजगार सृजन किया जाए।

पूर्व विदेश मंत्री नटवर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लंबे समय से बीमार चल रहे थे। नटवर सिंह का गुरूग्राम के मेदांता अस्पताल में इलाज चल रहा था। उन्हें गत 31 जुलाई को मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर नटवर सिंह के निधन की पुष्टी की। उन्होंने लिखा कि पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह के निधन का समाचार दुखद है। ईश्वर उनके परिजनों को यह क्षति सहने की शक्ति दे और दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करें।

गौरतलब है कि कुंवर नटवर सिंह का जन्म 16 मई 1929 को राजस्थान के भरतपुर जिले में हुआ था। वो 2004 से लेकर 2005 के बीच यू.पी.ए. सरकार मे विदेश मंत्री भी रहे। नटवर सिंह एक भारतीय राजनायिक और राजनीतिज्ञ थे।

आर्थिक संकट में घिरे तेलंगाना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यात्रा पर अपने साथ ले जाना उचित समझा, की आत्महत्या की खबर उसी दिन आई, जिस दिन अखबारों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि देश के सबसे बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान ने अपने 42,000 कर्मचारियों की छँटनी कर दी है। बिज़नेस मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार, भारत की बहुत-सी बड़ी एवं प्रतिष्ठित कम्पनियों ने चुपचाप छँटनी कर दी है। उन्होंने या तो कर्मचारियों को निकाल दिया है या नई भर्तियों की संख्या बहुत ज्यादा कम कर दी है। बताया जा रहा है कि कई प्रतिष्ठित आई.टी. कम्पनियाँ तथा आई.टी.ई.एस. फर्में भी स्टाफ की छँटनी कर रही हैं तथा इस स्थिति के पीछे दो कारण माने जा रहे हैं।

लेबर एक्सपर्ट्स इसका एक कारण तो यह बता रहे हैं कि आर्टीफिशियल इन्टैलिजैन्स (ए.आई.), ज्यादा क्षमता वाली मशीनों तथा स्वचालित मशीनों के आ जाने के फलस्वरूप स्टाफ की आवश्यकता में कटौती हो रही है। वे यह जानना चाहते हैं कि क्या पूरे देश में फैली हुई बेरोजगारी या रोजगारों की कमी, देश को पीड़ित कर रही बड़ी आर्थिक दुर्भावना का संकेत है। स्टॉक मार्केट जिसके सूचकांक (इन्डेक्स) को सरकार तथा कॉर्पोरेट अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य का संकेत मानते हैं, में उछाल के बावजूद भारी बेरोजगारी आना इस बात का संकेत है कि बड़ी अर्थव्यवस्था की कमियां देश की जनता को प्रभावित कर रही हैं। ऐसा लगता है कि नौकरियों की कमी सभी सेक्टरों में हो रही है।

हैदराबाद के लेबर एक्सपर्ट भारत भूषण ने दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि योगी जैसे युवा एवं मध्यम आयु-वर्ग के लोग "इस समय इससे पहली पीढ़ी की तुलना में, ज्यादा मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। पहले आम तौर से नौकरी, चाहे वह निजी क्षेत्र में थी, अर्धसरकारी क्षेत्र में थी, या सरकारी क्षेत्र में थी, ज्यादा सुरक्षित थी। उन्होंने कहा कि आज सरकारी क्षेत्र भी अपना काम बाहर से करा रहे हैं तथा कर्मचारियों की संख्या कम कर रहे हैं। यह भी रोजगार के मोर्चे पर दबाव बढ़ने का एक कारण है तथा रोजगार की स्थिति एक ऐसी दिशा की ओर जा रही है, जिसे कोई नहीं चाहता।

वारंगल के इस पत्रकार का मामला बहुत हृदय-विदारक है क्योंकि उसके परिवार-उसकी पत्नी तथा बहिन तथा मीडिया के साथियों को उसका अंतिम संस्कार करने में बहुत मुश्किल आई क्योंकि किराये के आवास के मालिक ने शव को घर पर नहीं लाने दिया। बाद में, पिता और पुत्री के शव उनके पैतृक गाँव ले जाये गये, जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ। ज्ञातव्य है कि गाँव में भी योगी के पास कोई सम्पत्ति नहीं है। योगी द्वारा इतना विकराल कदम उठाये जाने का कारण आर्थिक संकट ही बताया जा रहा है। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है तथा जाँच-पड़ताल की जा रही है।

योगी रेड्डी के प्रोफेशनल साथी उसे एक ऐसे पूर्ण प्रोफेशनल के रूप में याद कर रहे हैं, जिसकी साँस-साँस तथा रग-रग में पत्रकारिता बसती थी। उनके अनुसार, वह बड़े पदों पर आसीन लोगों से सवाल पूछने तथा कमजोर व शोषितों का समर्थन करने का अपना परम कर्तव्य मानने में विश्वास करता था। उसे एक ऐसा ईमानदार पत्रकार बताया जा रहा है, जो अपनी गृहस्थी चलाने के आर्थिक दबाव से संघर्ष कर रहा था।

1389 अग्निवीर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दी और उनसे कर्तव्य , सम्मान और साहस के मूल्यों पर चलते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान का आव्हान किया। उन्होंने उनसे प्रशिक्षण के अगले चरणों पर ध्यान केंद्रित करने और तकनीकी रूप से कुशल समुद्री योद्धा बनने का आग्रह किया। मुख्य अतिथि ने मेधावी अग्निवीरों को पदक और ट्रॉफी से सम्मानित किया।

शान निराली आके देखो कितना ये ज़ीशान है, بسم الله الرحمن الرحيم चाँदी की जाली में सोया मेवाड़ी सुल्तान है।

कुतबे ज़माना हज़रत विलायत अली शाह साहब उर्फ

दीवाना शाह साहब र. अ.

का 83वां उर्स शरीफ

तारीखें उर्स -: 6 सफर 1446 हिजरी, मुताबिक 12 अगस्त 2024 बरोज सोमवार से शुरू होकर 8 सफर 1446 हिजरी, मुताबिक 14 अगस्त 2024 बरोज बुधवार सुबह कुल की फातेहा होगी। लिहाज़ा शिरकते उर्स फरमाकर फैज़याब हों और अपना दामने उम्मीद भरें।

Soni-9829707145

मिनजानिब :- वक्फ कमेटी, दरगाह शरीफ, दीवाना नगर

कपासन, जिला- चित्तौड़गढ़ (राज.) Phone No. : 01476-294212, 230212

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908